एक नशा
हज़ार मुसीबतें
विराज

एक नशा हज़ार मुसीबतें

[म द्यपान तथा अन्य बुराइयों पर रोचक प्रेरणात्मक पुस्तक]

विराज

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

भूमिका

मद्यपान ऐसा व्यसन है, जो सब देशों में विद्यमान है और लगभग सभी समयों में विद्यमान रहा है। इसमें रत्ती-भर भी सन्देह नहीं है कि मदिरा भयानक विष है, जिसका शरीर और मन पर बहुत विनाशकारी प्रभाव होता है। इस सत्य को भी हज़ारों साल पहले जान लिया गया था। मनु जैसे शास्त्रकारों ने मद्यपान को महापातक कहा और मद्यपान का निषेध किया। इसके बाद भी मदिरा पी जाती रही।

मदिरा में कुछ ऐसा आकर्षण है, जिसके भुलावे में आकर आदमी अपना धन, स्वास्थ्य, चरित्र, सम्मान सब कुछ नष्ट कर बैठता है। एक बार लत पड़ जाने पर यह आसानी से छूटती नहीं। मदिरा से व्यक्ति नष्ट हो जाता है, परिवार उजड़ जाते हैं और समाज तथा देश को कष्ट भुगतना पड़ता है। इसलिए जैसे भी हो, इस विनाशकारी व्यसन को जड़मूल से समाप्त किए बिना देश का वास्तविक उद्धार नहीं हो सकता।

शराब के सम्बन्ध में हुई नई वैज्ञानिक खोजों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शराब में कोई अच्छाई नहीं है और बुराइयां अनगिनत हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य यह है कि शराब के सच्चे रूप को पाठक के सामने रख दिया जाए। जो लोग शराब पीने के आदी हो चुके हैं, उनके लिए शराब का त्याग करना भले ही कठिन हो, किन्तु जिन युवकों ने अभी शराब को हाथ नहीं लगाया है, उन्हें इस व्यसन के चंगुल में फंसने से अवश्य रोका जा सकता है। मेरा विश्वास है कि कोई भी समझदार युवक मदिरा के दोषों को ठीक-ठीक जान लेने के बाद किसी भी प्रलोभन में पड़कर मदिरा पीने को तैयार नहीं होगा।

इस पुस्तक को लिखने में धार्मिक उत्साह कारण नहीं, बल्कि वैज्ञानिक अनुसन्धान कारण रहा है। वैज्ञानिकों ने सौ बरस से भी अधिक के अनुभव के बाद जिन सचाइयों को सर्वसम्मति से स्वीकार किया है, केवल उन्हीं को

इस पुस्तक में संकलित किया गया है। केवल किसी इक्के-दुक्के विद्वान या डाक्टर के मत के आधार पर मदिरा को बुरा नहीं ठहराया गया। 'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका', 'प्रिन्सिपल्स आफ इन्टर्नल मेडिसन', 'प्राइ-सिज़ टेक्सबुक आफ इन्टर्नल मेडिसन' जैसी प्रामाणिक पुस्तकों में जो बातें सर्वमान्य सत्य के रूप में लिखी गई हैं, उन्हींको हमने संकलित किया है। यह मानने के लिए कोई कारण नहीं कि इन ग्रन्थों में मदिरा के विरुद्ध कोई भी बात झूठ लिख दी गई होगी, क्योंकि ये ग्रन्थ किसी भी पक्ष का प्रचार करने वाले नहीं हैं।

इस पुस्तक में कोई बात बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कही गई। जो भी घटनाएं दी गई हैं, वे सब अक्षरश: सच्ची हैं; केवल व्यक्तियों के नाम बदल दिए गए हैं। अत: इस पुस्तक में दी गई जानकारी को पूरी तरह प्रामाणिक माना जा सकता है।

संविधान में राज्य को आदेश दिया गया है कि वह मादक द्रव्यों के प्रयोग को बन्द करने के लिए भरसक प्रयत्न करे। हमें लगता है कि पिछले कुछ वर्षों में राज्य का रुख बदल गया है। मादक द्रव्यों के प्रयोग को रोकने के लिए यथेष्ट कार्रवाई नहीं की जा रही, उल्टे मद्य-निषेध को समाप्त किया जा रहा है। ऐसी दशा में जनमत को जाग्रत करना हर नाग-रिक का कर्तव्य हो जाता है।

आशा है कि यह पुस्तक मदिरा के भयंकर दुष्परिणामों को पाठक के सम्मुख रखकर उसे विनाश की खाई में गिरने से रोकेगी और साथ ही मद्य-निषेध के पक्ष में प्रबल जनमत तैयार करने में सहायक होगी।

दिल्ली

७ नवम्बर, १९७४ —विराज

क्रम

१

कुछ सच्ची घटनाएं

चौधरी हरिसिंह अच्छे खाते-पीते किसान थे। दिल्ली के आसपास उनकी कई सौ बीघे ज़मीन थी। ज़मीन से उपज अच्छी नहीं होती थी, परन्तु उनका निर्वाह आराम से हो जाता था। सन् १९६० में सरकार ने उन ज़मीनों को ले लिया। ज़मीन की कीमत के रूप में चौधरी हरिसिंह को १५ लाख रुपये मिले। इतनी बड़ी धनराशि चौधरी ने या उनके पूर्वजों ने कभी देखी तो थी ही नहीं, कभी सोची भी नहीं थी। इस रुपये का क्या किया जाए, यह उन्हें समझ न पड़ा। उनके दो जवान बेटे थे। रुपये का उचित बंटवारा करके उनके नाम से बैंक में जमा कर दिया। बेटों की शादी कर दी।

जवान बेटे उस रुपये का उपभोग करने को बेचैन थे। एक मोटरकार खरीदी गई। कुछ दोस्त आ जुटे। उनके सुझाव पर शराब शुरू हुई। पैसा तेज़ी से उड़ने लगा। चौधरी हरिसिंह ने रोकथाम करनी चाही। कुटुम्ब का धन नष्ट होते देखकर उन्हें दुःख होता था। इससे भी अधिक दुःख उन्हें यह देखकर होता था कि उनके इज़्ज़तदार लड़के शराब के नशे में घर की औरतों से मारपीट करते हैं; गली में खड़े होकर गन्दी गालियां बकते हैं और कभी बेहोश होकर नालियों में गिर पड़ते हैं। उनके खानदान की बड़ी प्रतिष्ठा थी। हरिसिंह के पिता ने अपने पैसे से आर्य-समाज का भवन बनवाया था। पुत्रों के इस आचरण से वह प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गई।

चौधरी हरिसिंह ने लड़कों को समझाया कि वे शराब पीना बन्द करें। एक-दो बार तो लड़कों ने सुनी-अनसुनी कर दी, पर तीसरी बार उन्होंने उलटकर जवाब दिया और मां-बहिन की गालियां देते हुए कहा : "तू कौन होता है हमें उपदेश देने वाला !

सत्तर चूहे खाकर बिल्ली हज करने चली है। हम बालिग आदमी हैं। अपना भला-बुरा खुद समझते हैं। हमारा पैसा है। हम खर्च करते हैं। तुम्हारा जी क्यों जलता है ?"

गाली-गलौज हुई; हाथापाई और मार-पिटाई भी हुई। परिणाम यह हुआ कि चौधरी हरिसिंह को घर छोड़कर कहीं दूसरी जगह रहने का प्रबन्ध करना पड़ा। दोनों भाई उसी घर में रहते रहे। रोज़ शराब, रोज़ लड़ाई-झगड़ा, रोज़ मारपीट। धन की कोई कमी नहीं, किन्तु घर नरक बन गया। पूरे मुहल्ले में वह 'शराबी चौधरियों का घर' मशहूर हो गया।

अब उन लड़कों के लड़के बड़े हो गए हैं। अपने पिताओं से उन्होंने मद्यपान भली भांति सीख लिया है। पिता चाहते हैं कि उनके लड़के शराब न पिएं। पर लड़के नहीं मानते। वे कहते हैं कि यह कैसे हो सकता है कि आप तो आनन्द से नाली में लोटें और हम घर के भीतर पलंग पर पड़े रहें। उनकी भी अपने पिताओं से गाली-गलौज और हाथापाई होती रहती है। रुपया तेज़ी से उड़ा जा रहा है। चौधरी हरिसिंह कभी-कदास जाकर देखते और सुनते हैं। बड़े-बड़े साधु-सन्तों को लाते हैं कि शायद उनके उपदेश से उनके शराबी पुत्र-पौत्र सुधर जाएं। पर कोई लाभ नहीं हुआ। लगता ऐसा है कि कंगाली ही आकर घर को सुधार सकेगी। उसके आने में भी देर नहीं है।

\+ \+ \+

सत्यपाल शर्मा और राधेलाल भार्गव ने उस दिन काफी शराब पी। शर्माजी ने दो-एक प्याले कम पिये थे, इसलिए वह कुछ अच्छी हालत में थे। भार्गव महोदय धरती से दो हाथ ऊपर थे। घर लौटते समय गाड़ी भार्गव चला रहा था। हाल यह कि उसकी गाड़ी सामने से आने वाली हर मोटर को टक्कर मारने के लिए बेचैन जान पड़ती थी। दूसरा आदमी ही किसी तरह गाड़ी बचाकर निकल सके, तो निकल जाए। सामने से एक बस आ रही थी। उसके चालक सरदारजी जिस ओर भी गाड़ी को बचाना चाहें,

भार्गव की गाड़ी उसी ओर बढ़कर टक्कर मारने को उतारू। हताश होकर सरदारजी ने बस रोक दी और भार्गव से कहा: "लो बाबू जी, तुम इसमें टक्कर मार ही लो।"

भार्गव गाड़ी से उतर आया, बोला: "इस गाड़ी हरामजादी को न जाने क्या हो गया है! मोड़ता इधर हूं, तो मुड़ती है उधर! लानत है इसपर।" यह कहकर उसने उस भरी सड़क पर गाड़ी के ऊपर पेशाब करना शुरू कर दिया। उसके बाद उसने शर्माजी को उतारा; कहा: "तुम भी इसपर पेशाब करो।" शर्मा जी ने भी पेशाब किया। सरदार जी सब कुछ समझ गए। बड़ी मुश्किल से शर्मा और भार्गव जैसे-तैसे घर पहुंचे। भार्गव बहुत बढ़िया गाड़ी चलाने वाला था, इसलिए उससे यह कहा भी नहीं जा सकता था कि वह किसी और को गाड़ी चलाने दे।

\+ \+ \+

रात का एक बजे का समय। किसीने बाहर से घंटी बजाई। एक बार, दो बार, तीन बार। नींद से उठकर शर्मा जी सीढ़ियां उतरकर नीचे आए। दरवाज़ा खोला। बाहर गफूर खड़ा था; बोला: "शर्मा जी, यह एक आदमी सड़क पर पड़ा है। मुझे लगता है कि यह आपका कोई मित्र है। देख लीजिए।"

सड़क के खम्भे की रोशनी में शर्मा जी ने देखा, तो वह सचमुच ही उनका मित्र निकला वीरेन्द्र। शराब के नशे में ऐसा बेहोश पड़ा था, जैसे मर ही गया हो। पतलून में ही उसने पेशाब और टट्टी की हुई थी। न जाने कब से वह वहां पड़ा था। जब तक पता नहीं था, तब तक तो कुछ नहीं, पर अब पता चल जाने के बाद यह आवश्यक हो गया कि उसे उठाकर घर में ले जाया जाए और उसका इलाज किया जाए। पर बेहोश पड़े आदमी को उठाकर ऊपरली मंज़िल पर ले जाना अकेले आदमी के बस का नहीं था। शर्मा जी ने गफूर से सहायता मांगी। वीरेन्द्र के शरीर की गन्दगी को देखकर पहले तो गफूर कुछ हिचकिचाया, पर शर्मा जी की बेबसी को देखकर उसने सहायता की। पर दोनों मिलकर

भी उसे सात-आठ सीढ़ी से ऊपर न ले जा सके। तब गफूर जाकर दो और आदमियों को बुलाकर लाया। जैसे-तैसे वीरेन्द्र को ऊपर मकान के अन्दर पहुंचा दिया गया।

मित्रता के नाते शर्मा जी ने उसके गन्दे कपड़े उतारे और शरीर को गीले कपड़े से पोंछ दिया। अब उन्हें डर लगा कि कहीं यह मर गया तो···। उसमें चेतना का कोई लक्षण ही दिखाई नहीं पड़ता था। उन्होंने उसकी पलकें खोलकर पुतली को उंगली से छुआ, पर पुतली ज़रा भी तो नहीं हिली। उन्होंने अपने एक डाक्टर मित्र को फोन किया। इतनी रात में फोन पाकर डाक्टर ने पहला सवाल यह पूछा कि कुशल तो है। शर्मा जी ने सारी स्थिति बताई। डाक्टर उसी समय गाड़ी में आया। उसने वीरेन्द्र की परीक्षा की। सांस चल रही थी। नाड़ी इतनी मन्द थी कि कठिनाई से ही पता चलती थी। डाक्टर ने कहा : "जब तक इसकी नींद नहीं टूटती, तब तक कुछ करने की ज़रूरत नहीं। नींद से उठते ही इसे प्यास लगेगी। इसके सिरहाने पानी की दो बोतलें रख दीजिए। एक प्याली में थोड़ा-सा आम का अचार भी रखिए। उठने पर इसे मितली अनुभव होगी। अचार से मुंह का स्वाद सुधर जाएगा।"

रोशनी और आवाज़ से शर्मा जी की पत्नी की भी नींद टूट गई। उसने आकर वीरेन्द्र की हालत देखी, तो तुरन्त समझ गई। उसने शर्मा जी से पूछा : "आपने फिर पी है?" शर्मा जी ने कहा : "नहीं। विश्वास न हो तो मुंह सूंघकर देख लो।" पत्नी ने विश्वास नहीं किया; मुंह सूंघकर भी नहीं देखा और कहा : "पी भी हो तो मुझे क्या!" अप्रसन्न होकर वह अपने बिस्तर पर जाकर सो गई।

अगले दिन वीरेन्द्र की नींद काफी देर में टूटी। वह समझ न सका कि वह कहां है और कैसे वहां पहुंचा। सारा हाल सुनने पर उसने कष्ट और असुविधा के लिए शर्मा जी की पत्नी से क्षमा मांगी। परन्तु अब क्षमा मांगने का क्या लाभ था?

\+ \+ \+

फिर उठा ही नहीं।

हरिद्वार में हर साल हम जिस धर्मशाला में जाकर ठहरते हैं, वहां एक जमादारनी सफाई करने आती थी—बड़ी ही चतुर और बातून। पिछले साल वहां गए, तो वह बड़ी उदास दिखाई पड़ी। पूछने पर उसने बताया कि दो महीने हुए, उसका पति मर गया।

"क्यों ? क्या हुआ था ?" मैंने पूछा।

"शराब पीता था, बाबूजी। शराब मिलती नहीं थी, महंगी थी, इसलिए स्पिरिट (मैंथीलेटिड स्पिरिट) पीने लगा था। बहुत रोका, डाक्टर ने भी मना किया। पर नहीं माना। एक दिन पीकर जो बेहोश हुआ, तो उठा ही नहीं। अब मैं क्या करूं ? चार छोटे-छोटे बच्चे हैं।"

\+ + +

दिल्ली शहर में शराब कुछ महंगी है, किन्तु दस-बारह मील दूर हरियाणा राज्य के सीमान्त पर वह कुछ सस्ती मिल जाती है। पिछली सर्दियों को बात है। छः-सात लड़कों को उमंग चढ़ी कि सीमान्त पर जाकर शराब पी जाए। सभी बीस-पच्चीस बरस की आयु के हेकड़ीबाज़ छोकरे थे। एक ने अपने मित्र से कार मांगी और सब उसमें भरकर सीमान्त चौकी पर पहुंचे। वहां सबने छककर पी, सस्ती और बढ़िया। जब लौटने लगे, तब सभी बहक रहे थे। गाड़ी चलाने वाले लड़के का हाथ भी काबू में नहीं था। सामने से आते मोटर-ठेले से टक्कर लगी तो कार का भुर्ता बन गया। तीन तो घटनास्थल पर ही मर गए। एक ने अस्पताल पहुंचकर दम तोड़ दिया। बाकी तीन कई सप्ताह तक पलस्तर और पट्टी बांधे पड़े रहे।

\+ + +

दो पियक्कड़ों में शर्त लग गई। एक ने कहा कि वह ह्विस्की की पूरी बोतल एक बार में खड़े-खड़े पी सकता है। दूसरे ने इस पर सन्देह प्रकट किया और कहा : "ह्विस्की की पूरी बोतल पीना कोई हंसी-खेल नहीं है।" पहले पियक्कड़ ने ज़िद में आकर ह्विस्की की बोतल मंगाकर पीनी शुरू कर दी। जैसे-तैसे वह

पूरी बोतल पी तो गया; पर उसके बाद वहीं अचेत होकर गिर पड़ा और कुछ ही देर में मर गया।

+ + +

सन् १९३७ और १९३८ में बम्बई राज्य में आंशिक मद्य-निषेध लागू किया गया। सन् १८७८ के आबकारी अधिनियम में संशोधन करके शराब बेचने और पीने पर कुछ रोक लगाई गई थी। जेनुभाई लालभाई ने उच्च न्यायालय में दावा कर दिया कि अधिनियम का यह संशोधन संविधान के विरुद्ध है। इसलिए गैर-कानूनी है। तीन साल तक यह मुकदमा उच्च न्यायालय में चलता रहा। अन्त में फैसले की तारीख आई। लोगों को निश्चय था कि उच्च न्यायालय मद्य-निषेध को रद कर देगा। शराब के शौकीन पहले से शराब की बोतलें अपनी जेबों में रखे फ्लोरा फाउंटेन के आसपास जमा हो गए। फैसला दोपहर को साढ़े ग्यारह बजे सुनाया गया। लोगों ने तुरन्त बोतलें निकालीं और सड़क पर ही पीनी शुरू कर दीं। अंग्रेज़ राज्यपाल भी पहले से तैयार था। उच्च न्यायालय का फैसला होते ही उसने तुरन्त एक नया अध्यादेश जारी करके फिर मद्य-निषेध लागू कर दिया। सड़कों पर शराब पीने वाले हाथों-हाथ गिरफ्तार कर लिए गए।

२

सुरा का आकर्षण

मदिरा या शराब का संस्कृत में सबसे प्राचीन नाम सुरा है। ऋग्वेद में सुरा का उल्लेख है। अथर्ववेद में तो सुरा का इस रूप में उल्लेख है कि सुरा का आकर्षण बहुत प्रबल होता है।

> यथा मांसं, यथा सुरा, यथाक्षा अधिदेवने
> यथा पुंसो वृषण्यतः स्त्रियां निहन्यते मनः
> एवा ते अघ्न्ये मनोऽधिवत्से निहन्यताम्।
>
> (अथर्ववेद ६-७०-१)

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य का मन मांस में, मदिरा में, जुए में और कामी पुरुष का मन स्त्री में आसक्त रहता है, उसी प्रकार तेरा मन इस अच्छे वत्स में आसक्त रहे।

मांस, मदिरा, जुआ और स्त्री को प्रबल आकर्षण वाला कहा गया है। ये सब चीज़ें अच्छी हैं या बुरी, यह अलग प्रश्न है, किन्तु इनका आकर्षण बहुत ज़ोरदार होता है, इसमें सन्देह नहीं।

मदिरा का आकर्षण किस बात में है? मदिरा का अपना रंग कोई बढ़िया नहीं होता। आकर्षक बनाने के लिए प्रायः उसमें कोई रंग मिलाना पड़ता है। मदिरा की गन्ध अप्रिय होती है। जो व्यक्ति मदिरा पीने का आदी नहीं, वह इस गन्ध से दूरही रहना चाहता है। इस दुर्गन्धको दबाने के लिए तरह-तरह की सुगन्धें उसमें मिलानी पड़ती हैं, फिर भी उसकी दुर्गन्ध जाती नहीं। मदिरा का स्वाद और भी बुरा होता है। उसे पीकर मुंह का ज़ायका ऐसा बिगड़ जाता है कि पकौड़े, चटनी आदि खाकर उसे ठीक करना पड़ता है। यदि किसी पात्र में यों ही मदिरा रखी हुई हो, तो कोई साधारण व्यक्ति उसे कभी पीना न चाहेगा। उसके रंग, गन्ध और स्वाद के कारण वह

उसे फेंक देने लायक चीज़ समझेगा। परन्तु जो लोग मदिरा के व्यसनी हैं, वे उसी बदबूदार और बुरे स्वाद वाली मदिरा को बड़ी ललक के साथ पी जाते हैं। "मदिरा पीकर बड़ा मज़ा आता है।" यह बात उन्हें मालूम है। जब तक किसी व्यक्ति को यह बता न दिया जाए कि "शराब पीने से बड़ा मज़ा आता है" तब तक वह मुफ्त मिलने वाली शराब को भी पीने को तैयार न होगा।

जिस व्यक्ति ने पहले कभी शराब नहीं पी, उसे शराब आकर्षक नहीं लगती। उसकी आंख शराब को देखकर खुश नहीं होती; उसकी नाक कहती है कि यह बदबूदार चीज़ पीने लायक नहीं है; और उसकी जीभ तो किसी तरह उसे पीना ही नहीं चाहती; उगल देना चाहती है। परन्तु 'अनुभवी साथी' समझाते हैं: "अरे यार, पी भी जा।" इन अनुभवी साथियों की प्रेरणा के बिना कोई नया आदमी मदिरा पीना शुरू नहीं करता। पर कुछ दिन का अभ्यास हो जाने के बाद शराब का रंग प्यारा लगने लगता है। अल्कोहल की बदबू बदबू ही मालूम नहीं होती। मदिरा का बुरा स्वाद भी सहन होने लगता है। वह 'बड़ा मज़ा' पीने वाले को जकड़ लेता है।

संगति—मदिरा का सारा मज़ा तो संगति में है। ऐसे लोग कम हैं, जो एकान्त में बैठकर मदिरा का आनन्द लेते हों। अधिक लोग साथियों के साथ बैठकर मदिरापान करते हैं। कुसंगति के बिना मदिरा का आकर्षण पूरा नहीं बनता।

मद्यपान का कारण—शराब कौन लोग पीते हैं? जो लोग किसी भी कारण अपनी परिस्थितियों और चिन्ताओं को कुछ देर के लिए भूलना चाहते हैं, वे शराब पीते हैं। आर्थिक चिन्ता से परेशान, घर के कलह से दुःखी, एकाएक भारी घाटा उठाने वाले लोग प्रायः मदिरा पीने लगते हैं। जो लोग भारी थकाने वाला काम करते हैं, वे अपनी थकान भुलाने के लिए मदिरा पीते हैं। कोई बड़ा अपराध करने के लिए उद्यत अपराधी लोग

अपनी घबराहट को भुलाने के लिए शराब पीते हैं। कामुक लोग अपनी कामवासना को उद्दीप्त करने के लिए शराब पीते हैं। महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य 'कुमारसंभव' में शिव और पार्वती के सम्भोग-वर्णन में पार्वती के मद्यपान का उल्लेख किया है।

परन्तु यह विचित्र विडम्बना है कि इनमें से जिस-जिस भी परेशानी के कारण मदिरा पी जाती है, वह परेशानी मदिरा पीने से घटती नहीं, उल्टी बढ़ ही जाती है। मदिरा पैसे की तंगी को कम नहीं करती, कुछ बढ़ा ही देती है। पारिवारिक झगड़ों को भी मदिरा घटा नहीं सकती। थकान को भी मदिरा दूर नहीं करती। मदिरा का नशा उतरने के बाद आदमी स्वयं को पहले से भी अधिक थका और टूटा अनुभव करता है। अपराध के लिए उद्यत गुण्डों का हित इसीमें है कि वे शराब न पिएं और घोर अपराध से बचे रहें। शराब उनकी घबराहट को कम करके उन्हें अपराध के रास्ते पर चला देती है, जो जेल और फांसी तक पहुंचता है। कामुकों की दशा और भी दयनीय होती है; क्योंकि शराब पीने से कामवासना तो जाग जाती है, किन्तु कामशक्ति क्षीण हो जाती है। इस प्रकार शराब उसी समस्या को बढ़ा देती है, जिसे हल करने के लिए वह पी जाती है। इतना अवश्य है कि वह कुछ समय के लिए—जब तक आदमी नशे में धुत रहे—उस समस्या को भुला देती है। यही शराब का 'बड़ा मज़ा' है।

पुराने समय में समाज के बुद्धिमान नेता जिस कार्य को व्यक्ति और समाज के लिए हितकारी समझते थे, उसे 'धर्म' बना देते थे और जिस कार्य को हानिकारक समझते थे, उसे 'पाप' कहते थे। मनु आदि शास्त्रकारों ने मद्यपान को 'महापाप' कहा और इसका प्रायश्चित्त मृत्यु बतलाया। परन्तु बाद में धूर्त लोगों ने मद्यपान के लिए भी धर्म की ही आड़ ली। वाममार्गियों ने एक नया धर्म चलाया।

मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च।
एते पञ्चमकारा स्युः मोक्षदाः हि युगे युगे ॥

अर्थात् मद्य, मांस, मछली, धन और मैथुन, ये पांच वस्तुएं मोक्षदायक हैं। स्पष्ट है कि यह धर्म कैसा था! वाममार्गी शीघ्र ही बदनाम हो गए। उनके गढ़ अनाचार के केन्द्र बन गए। मद्य ने ही उन्हें नष्ट कर दिया।

बुद्धिमानों द्वारा मद्य का निषेध

जिस प्रकार सुरा का आकर्षण मनुष्य को सदा से रहा है, उसी प्रकार विवेकशील लोग सुरा और मद्यपान की निन्दा भी सदा से करते आ रहे हैं। समय-समय पर ऋषि-मुनियों, धर्म-सुधारकों और सामाजिक नेताओं ने मद्यपान न करने का आदेश दिया है।

रामायण और महाभारत—रामायण और महाभारत में सुरापान को राक्षसों का आचरण कहा गया है। कौरवों और पांडवों ने जूआ तो खेला था, किन्तु मद्यपान कभी नहीं किया। कीचक ने मद्यपान करके राजा विराट के महल में दासी के वेश में रह रही द्रौपदी से प्रेम करना चाहा था, जिसपर भीम ने उसे मार डाला।

गीता—गीता में सुरा का नाम लेकर मदिरा की निन्दा नहीं की गई, परन्तु वहां जो कुछ कहा गया है, उसका अर्थ यही है कि सभी मादक पदार्थों का सेवन त्याग देना चाहिए। गीता में कहा गया है कि मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं: सात्त्विक, राजस और तामस। इन्हींको सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी कह सकते हैं। तमोगुणी मनुष्य के बारे में कहा गया है :

> अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धो शठो नैष्कृतिकोऽलसः।
> विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते॥

(गीता अध्याय १८, श्लोक २८)

अर्थात् जो आदमी किसी काम को ठीक ढंग से न करे, गंवार हो, नासमझ हो, दुष्ट हो, निकम्मा और आलसी हो, दुःखी रहता हो और कार्य को टालता रहता हो, वह तमोगुणी होता है।

सत्त्व, रज और तम के विषय में गीता में विस्तार से विचार किया गया है। सत्त्व गुण निर्मल होने के कारण प्रकाश करने

वाला और दोषरहित होता है। रजोगुण प्रेम और अनुराग से भरा होता है; यह तृष्णा और आसक्ति से पैदा होता है। तमोगुण अज्ञान से पैदा होता है। यह सब प्राणियों को मूढ़ बना देता है। प्रमाद (लापरवाही), आलस्य और नींद के द्वारा यह मनुष्यों को जकड़ लेता है। (गीता १४/६-८)

इसी प्रकार तीन प्रकार के सुख बताए गए हैं। सात्त्विक सुख वह है जो शुरू में भले ही विष जैसा जान पड़े, किन्तु उसका परिणाम अमृत के समान हो। राजसिक सुख वह है जो शुरू में अमृत-सा प्रिय जान पड़े, किन्तु जिसका परिणाम विष के समान कष्टदायक हो। तामसिक सुख वह है जिससे मनुष्य के मन का प्रकाश बुझ जाये; किसी काम को करने की प्रवृत्ति न हो; वह प्रमादी बन जाए और उसमें सोचने-समझने की बुद्धि ही न रहे। (गीता १८/३७.३९)

इस हिसाब से मद्यपान करने वाले व्यक्ति तमोगुणी और मद्यपान का सुख तामसिक सुख माना जाएगा।

इसी प्रकार तामसिक भोजन के विषय में कहा गया है कि बासी, बेस्वाद, सड़ा हुआ, जूठा और बुद्धि को बिगाड़ने वाला भोजन तामसिक होता है। मदिरा को इसी श्रेणी में गिनना पड़ेगा।

आगे लिखा है: सात्त्विक लोग ऊपर की ओर जाते हैं (उन्नति करते हैं); राजसिक लोग बीच में (जहां के तहां) रहते हैं; और नीच गुणों और कार्यों में फंसे हुए तामसिक लोग नीचे गिरते जाते हैं। (गीता १४/१८)

आचारशास्त्र के प्रधान ग्रन्थ मनुस्मृति में ब्रह्मचारी के लिए मद्य और मांस का सेवन मना किया गया है। 'वर्जयेन्मधु मांसं च गन्धं माल्यं रसान् स्त्रियः।' अर्थात् ब्रह्मचारी को चाहिए कि मदिरा, मांस, इत्र-फुलेल, माला आदि स्वादु चटपटे भोजन और स्त्री का सेवन न करे। (मनुस्मृति २/१७७)

परन्तु सातवें अध्याय में राजधर्म के प्रकरण में और भी

महत्त्वपूर्ण बात कही गई है। राजा को आदेश दिया गया है कि वह दस कामज और आठ क्रोधज व्यसनों से बचे। कामज व्यसन हैं: शिकार, जूआ, दिन में सोना, दूसरों की निन्दा करना या सुनना, स्त्रियों का अतिसंग, मदिरा या अन्य मादक पदार्थों का सेवन, गाना, बजाना, नाचना और बेकार इधर-उधर फिरना। क्रोध से उत्पन्न होने वाले व्यसन हैं: चुगलखोरी, डकैती, द्रोह अर्थात् विश्वासघात, ईर्ष्या, दूसरे के गुणों को भी दोष मानना, धन की बरबादी, आवश्यकता से अधिक डांट-फटकार और अति कठोर दंड देना।

कहा गया है कि ये अठारह व्यसन बड़े भयानक हैं। इनका परिणाम बुरा होता है। राजा को भरसक यत्न करके इनसे बचना चाहिए।

इसके बाद कहा गया है कि इनमें भी (१) सुरापान (२) जूआ (३) स्त्रियां और (४) शिकार, इसी क्रम से सबसे कष्टदायक हैं (सुरापान सबसे अधिक, उससे कम जूआ, उससे कम स्त्रियां और उससे कम शिकार)। (५) अति कठोर दंड (६) अत्यधिक डांट-फटकार और (७) धन की बरबादी, ये भी बहुत कष्टदायक व्यसन हैं।

इन सातों में हर पहला व्यसन अपने से बाद वाले व्यसन से अधिक कष्टदायक है। अर्थात् इन सातों प्रधान कष्टदायक व्यसनों में भी सुरापान सबसे अधिक कष्टदायक है।

व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते।
व्यसन्यधोऽधो याति स्वर्यात्यव्यसनी मृतः॥

इन व्यसनों में से और मृत्यु में से किसी एक को चुनना हो, तो मृत्यु कहीं भली है; क्योंकि व्यसनी मनुष्य तो नीचे और नीचे ही गिरता जाता है, जबकि व्यसनों से दूर रहने वाला व्यक्ति मरकर स्वर्ग जाता है। (मनुस्मृति ७/४३-५३)

इसके अलावा, मनु ने ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्णों के लिए शराब पीना मना किया है।

सुरा वै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते।
तस्माद् ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यश्च न सुरांपिबेत्।
(मनुस्मृति ११/९३)

अर्थात् सुरा अन्न का मैल है और मैल बुरी चीज़ है। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सुरापान न करें।

मद्यपान की बुराई को मनु ने अच्छी तरह पहचाना था। उन्होंने लिखा है कि यदि कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य शराब पी ले, तो उसे गरमागरम खौलती हुई शराब पिलानी चाहिए, जिससे उसकी तुरन्त मृत्यु हो जाए। यही उसका प्रायश्चित्त है। या फिर वह गरमागरम गोमूत्र, पानी, दूध या घी पीकर प्राण दे दे। या फिर मद्यपान का प्रायश्चित्त करने के लिए आदमी को चावल की कुट्टी खाकर और रात में एक बार खल खाकर, कम्बल का मोटा वस्त्र पहनकर, बाल बढ़ाकर रहना चाहिए और ऐसा चिह्न अपने ऊपर लगाए रखना चाहिए, जिससे अन्य लोगों को पता चले कि वह मद्यपान का प्रायश्चित्त कर रहा है। (मनु० ११/९०-९२)

अन्य स्मृतिग्रन्थों में भी लगभग ऐसे ही प्रायश्चित्त सुरापान के लिए बताए गए हैं। पंचतंत्र के लेखक नीतिकार विष्णुशर्मा ने यह बताते हुए कि राजा का प्रिय व्यक्ति कौन होता है, लिखा है:

द्यूतं यो यमदूताभं, हालां हालाहलोपमाम्।
पश्येद्दारान् वृथाकारान्, स भवेद्राजवल्लभः॥
(पंचतंत्र, मित्रभेद ५७)

अर्थात् जो व्यक्ति जूए को यमदूत मानता हो; शराब को हालाहल ज़हर मानता हो, और सब स्त्रियों को बदसूरत मानता हो, अर्थात् जो जूए, शराब और स्त्रियों से दूर रहता हो, वह राजा को प्रिय होता है। और,

काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं,
सर्पे क्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः।

क्लीबे धैर्यं, मद्यपे तत्त्वचिन्ता,
राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा।
(पंचतंत्र, मित्रभेद १५८)

अर्थात् कौआ स्वच्छ पवित्र रहता हो; जुआरी सत्य बोलता हो; सांप किसीको क्षमा कर दे; स्त्रियों की कामवासना तृप्त हो जाए; किसी नपुंसक में धैर्य हो; कोई शराबी तत्त्व का चिन्तन कर सके; राजा किसी का मित्र हो, ऐसा क्या कभी किसीने देखा या सुना है? अर्थात् ये चीज़ें कभी होती ही नहीं। और,

ब्रह्मघ्ने च सुरापे च, चौरे भग्नव्रते शठे।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः॥
(पंत्रतंत्र, लब्धप्रणाश ११)

अर्थात् ब्राह्मण की हत्या करने वाले का, सुरापान करने वाले का, चोर का, अपने व्रत को भंग करने वाले का और ठग का प्रायश्चित्त हो सकता है, किन्तु कृतघ्न का प्रायश्चित्त नहीं है। यहां पर सुरापान को ब्राह्मण की हत्या के समान महापाप बताया गया है। और,

करस्पन्दोऽम्बरत्यागः तेजोहानिः सरागता।
वारुणी संगजावस्था भानुनाप्यनुभूयते॥
(पंचतंत्र, मित्रभेद १८६)

अर्थात् हाथों का कांपना, कपड़े उतार फेंककर नंगे हो जाना, तेज का नाश और चेहरे की लाली, ये शराब पीने के परिणाम हैं। जब सूर्य वारुणी (पश्चिम दिशा; शराब) का सेवन करता है, तब उसकी भी यही दशा होती है। उसकी किरणें क्षीण हो जाती हैं; वह अम्बर (आकाश; कपड़ा) का त्याग कर देता है; उसका तेज समाप्त हो जाता है और उसका रंग लाल हो जाता है।

एक अन्य नीतिकार का कथन है :

एकतश्चतुरो वेदाः ब्रह्मचर्यं तथैकतः ।
एकतः सर्वपापानि, मद्यपानं तथैकतः ।।

चारों वेदों का अध्ययन एक ओर और ब्रह्मचर्य एक ओर। सारे पाप एक ओर और मद्यपान एक ओर। अर्थात् ब्रह्मचर्य से बढ़कर पुण्य कोई नहीं और मद्यपान से बढ़कर पाप कोई नहीं। कारण यह है कि शराब पीने के बाद मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है। उसके बाद वह बेधड़क होकर बड़े से बड़ा पाप कर डालता है। ईसाइयों के धर्मग्रन्थ बाइबिल में एक घटना का उल्लेख है, जिसमें शराब के नशे में चूर होकर एक पुरुष ने अपनी दो पुत्रियों से ही सम्भोग कर लिया था। महात्मा गांधी ने भी लिखा है कि "शराबी पत्नी, माता और बहन का भेद भूल जाता है और ऐसे गुनाह कर डालता है, जिन पर वह अपनी शांत अवस्था में लज्जा का अनुभव करता है।"

चित्ते भ्रान्तिर्जायते मद्यपानात्, भ्रान्ते चित्ते पापचर्यामुपैति ।
पापं कृत्वा दुर्गतिं यान्ति मूढ़ाः तस्मान्मद्यं नैव पेयं न पेयम् ।

अर्थात् मद्यपान करने से चित्त भ्रमित हो जाता है। चित्त भ्रमित हो जाने से आदमी पाप करने लगता है। पाप करने पर उसकी बड़ी दुर्गति होती है, इसलिए शराब कभी न पीये, हरगिज़ न पीये। फिर,

मद्यपस्य कुतः सत्यं, दया मांसाशिनः कुतः ।
कामिनश्च कुतः विद्या, निर्धनस्य कुतः सुखम् ।।

अर्थात् शराबी सच्चा कहां हो सकता है? मांसाहारी को दया कहां आ सकती है? कामी पुरुष विद्या कहां सीख सकता है? और निर्धन व्यक्ति को सुख कहां मिल सकता है? नहीं मिल सकता।

सिखों के 'गुरु ग्रन्थ साहब' में कबीर जी का यह श्लोक है :

कबीर भांग मछली सुरापान जो प्राणी खाहिं ।
तीरथ वरत नेम किये ते सभै रसातल जाहिं ।
(२३२ श्लोक, कबीर जी)

अर्थात् भांग पीने, मछली खाने और सुरापान करने वाले लोग चाहे कितना ही तीर्थ, व्रत और नियम का पालन क्यों न करें, वे सब नरक में जायेंगे।

एक अन्य सन्त गरीबदास जी का कथन है :

मदिरा पीवैं कड़वा पानी, सत्तर जनम स्वान के जानी।

(आदि पुराण १४/२२०)

अर्थात् जो लोग मदिरा पीते हैं, उन्हें सत्तर बार कुत्ते के रूप में जन्म लेना होगा।

आधुनिक युग के महान सुधारक ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में जगह-जगह मद्यपान की बहुत निन्दा की है और इसका सेवन मना किया है। मनुस्मृति का हवाला देकर उन्होंने मद्य और मांस के सेवन का तो निषेध किया ही है, साथ ही यह भी कह दिया है कि आर्य पुरुष को मद्य और मांस का सेवन करने वाले म्लेच्छों के हाथ का बनाया हुआ भोजन भी न करना चाहिए, क्योंकि उनके शरीर ही मद्य-मांस के परमाणुओं से भरे होते हैं।

ऋषि दयानन्द के बाद भारत में महान सुधारक और राजनीतिक नेता महात्मा गांधी हुए। उन्होंने भी मद्यपान के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ उठाई। उन्होंने लिखा है कि "मैं मदिरापान को चोरी और वेश्यागमन से भी बुरा समझता हूं। क्या मदिरा इन दोनों की जननी नहीं है ?"

और "जो राष्ट्र शराब के व्यसन का शिकार है, कहना चाहिए कि विनाश उसके सामने मुंह बाए खड़ा है।"

और, "शराब से बढ़कर कोई ऐसी नशीली वस्तु नहीं है, जो मनुष्य के नाश में लगी हो।"

और, "शराब जहर से भी बुरी है। जहर से तो शरीर ही मरता है, शराब से आत्मा सो जाती है। (गांधीजी कहना चाहते थे कि आत्मा ही मर जाती है; किन्तु सिद्धान्ततः आत्मा अमर है; इसलिए उन्होंने 'सो जाती है' कहा।) स्वयं अपने ऊपर

काबू पाने का गुण नष्ट हो जाता है।"

और, "मैं भारत का कंगाल हो जाना पसन्द करूंगा, परन्तु मैं यह सहन नहीं कर सकता कि हमारे हज़ारों लोग शराबी हों।"

और, "यदि मुझे एक घंटे के लिए भारत का डिक्टेटर बना दिया जाए, तो मेरा पहला काम यह होगा कि शराब की दूकानों को बिना मुआवज़ा दिए बन्द करवा दिया जाए।"

मद्यपान का विरोध केवल भारत के ही नहीं, सारी दुनिया के विचारक करते रहे हैं। उदाहरण के लिए ईसा से १८०० वर्ष पहले राजा हम्मुरावी ने कानून बनाया था कि यदि किसी भठियारिन (शराब बेचने वाली) के घर में गुंडे और डकैत जमा होते हों और वह उन्हें न पकड़वाए, तो भठियारिन को प्राणदण्ड दिया जाए।"

ईसा से ५०० बरस पहले अफलातून (प्लेटो) ने कहा था : "मैं चाहता हूं कि यह कानून बनाया जाए कि सेना में रहते हुए कोई भी आदमी शराब न पिए। वह पानी ही पिए।...शहर में कोई भी दास किसी भी समय शराब न पिए। राष्ट्रपति अपने राष्ट्रपतित्व के काल में शराब न पिए और न्यायाधीश अपने कार्य के समय शराब न पिएं।"

प्रसिद्ध विचारक सैनेका ने कहा था कि "शराबीपन जान-बूझकर अपनाया गया पागलपन है।"

दुनियादार लोगों में कहावत है कि किसी रईस से आपकी दुश्मनी हो, तो अपना पैसा खर्च करके उसके लडके को शराब की लत लगा दीजिए। बदला लेने का इससे बढ़िया तरीका और कोई नहीं है।

विख्यात डाक्टर औस्लर ने लिखा है : "यह नहीं कि लोग शराब पीकर अधिक अच्छे ढंग से काम करने लगते हों, बल्कि वे इस बात पर लज्जित होना बन्द कर देते हैं कि वे काम को बेहूदे ढंग से कर रहे हैं।"

४

एक आंखें खोलने वाला पोस्टर

सन् १९०४ में पेरिस को नगरपालिका ने निम्नलिखित पोस्टर बड़े-बड़े अक्षरों में छपवाकर शहर में जगह-जगह टंगवाया था :

फ्रांसीसी गणराज्य

स्वतन्त्रता—समानता—बन्धुता

पेरिस का गरीब-सहायता प्रशासन

मद्यपान : इसके खतरे

लेखक : प्रोफेसर देबोव, चिकित्सा संकाय के अध्यक्ष

डाक्टर फेसान, पेरिस के बड़े अस्पताल के चिकित्सक

पियक्कड़पन एक धीरे-धीरे बढ़ने वाला विष रोग है। यह शराब पीने की आदत से उत्पन्न होता है, भले ही पी जाने वाली शराब की मात्रा इतनी थोड़ी हो कि उससे पीने वाला नशे में धुत न होता हो।

यह कहना गलत है कि जो कामगार कड़ी मेहनत करते हैं, उनके लिए शराब पीना ज़रूरी है; कि यह काम करने के लिए शक्ति देता है; या यह कि यह शक्ति को ताज़ा कर देता है। शराब से जो नकली उत्तेजना पैदा होती है, वह जल्दी ही समाप्त हो जाती है और उसका स्थान सुस्ती और कमज़ोरी ले लेती है। सचाई यह है कि शराब किसीके लिए भी लाभदायक नहीं है। यह सबके लिए हानिकारक है।

शराब पीने की आदत पड़ जाने पर आदमी जल्दी ही पियक्कड़ बन जाता है। बढ़िया कही जाने वाली शराबों में भी अल्कोहल होता है। अन्तर केवल इतना है कि उनमें अल्कोहल की मात्रा कुछ कम होती है। जो आदमी अंगूरी शराब, बीयर या शेम्पेन जैसी मदिरा काफी मात्रा में रोज पीता है, वह भी उतने

ही पक्के तौर पर पियक्कड़ बन जाएगा, जितने पक्के तौर पर ब्रांडी या ह्विस्की पीने वाला बन जाता है।

तेज़ शराबें (ऐबसिन्थी, वर्माउथ, आमेर), और सुगन्धित शराबें (वर्लनेयर, ओ द मैलिस, द मैंथी) सबसे अधिक हानिकारक हैं, क्योंकि उनमें अल्कोहल के अलावा कुछ इत्र भी होते हैं, जो अपने-आपमें भयंकर विष होते हैं।

शराब पीने की आदत पड़ जाने पर आदमी अपने परिवार की उपेक्षा करने लगता है; सामाजिक कर्तव्यों को भूल जाता है; काम से जी चुराने लगता है; उसे पैसे की तंगी रहने लगती है; वह चोरी और अन्य अपराध करने लगता है। और कुछ न भी हो तो उसे अस्पताल तो जाना ही पड़ता है, क्योंकि पियक्कड़पन से कई तरह के रोग हो जाते हैं, जिनमें कई बहुत ही भयंकर होते हैं—जैसे पक्षाघात (लकवा), पागलपन, पेट और जिगर के रोग, जलशोथ (शरीर में पानी भर जाना)। पियक्कड़पन राजयक्ष्मा का प्रमुख कारण है। मद्यपान किसी भी नये रोग को—टाइफाइड, निमोनिया या विसर्परोग (Erysipelas) को भड़काकर पेचीदा और गंभीर बना देता है। ये रोग यदि किसी शराब न पीने वाले को हों, तो बहुत उग्र नहीं होते, किन्तु शराबी को तो ये मार ही डालते हैं।

शराबी मां-बाप की गलतियों का फल उनके बच्चों को भुगतना पड़ता है। ये बच्चे यदि अपने जीवन के पहले कुछ महीनों के बाद भी जीते बच जाएं, तो यह खतरा रहता है कि वे मूढ़ रहेंगे, या उन्हें मिरगी के दौरे पड़ा करेंगे या इससे भी बुरा यह होगा कि क्षय रोग या गर्दनतोड़ बुखार से उनकी मृत्यु हो जाए।

मद्यपान सबसे भीषण अभिशापों में से एक है—व्यक्ति के स्वास्थ्य की दृष्टि से भी; परिवार के भले की दृष्टि से भी और देश के भविष्य की दृष्टि से भी।

सीन ज़िले के जिलाधीश जे० द सैल्वे द्वारा देखा गया और स्वीकृत किया गया। गरीबों की सहायता के सामान्य प्रशासन के

महासचिव थिलौय द्वारा प्रमाणित और गरीब सहायता के सामान्य प्रशासन के प्रबन्धक जे० मेसूरिय द्वारा प्रचारित।

स्पष्ट है कि यह पोस्टर फ्रांस की सरकार के प्रजा-हितैषी अफसरों द्वारा बनाया और जगह-जगह टांगा गया था। अस्पतालों में, डाकघरों में, प्रमुख सड़कों पर और स्वयं नगरपालिका के भवन की दीवार पर इसे लगाया गया था।

फ्रांस यूरोप में सबसे अधिक शराब बनाने वाला देश है। शराब से राज्य को बड़ी आय होती है। फिर भी वहां के ईमानदार शासक फ्रांस के सपूतों को स्वस्थ, बलिष्ठ और तेजस्वी देखना चाहते थे। इसी इच्छा से यह पोस्टर प्रचारित किया गया था।

परन्तु इस पोस्टर को देखते ही शराब के बनाने और बेचने वालों को आग लग गई। उन्होंने अपने आदमी लगाकर शहर की सड़कों पर से उन पोस्टरों को उतरवा लिया। शराब बनाने वाले उन करोड़पतियों के सामने उन ईमानदार सरकारी अफसरों की एक न चली। वे पोस्टर फिर नहीं लगाए गए।

सबसे बड़ा विष—मदिरा

पोटाशियम साइनाइड तेज़ विष है। उसके खाने के कुछ मिनट के अन्दर ही आदमी मर जाता है।

संखिया, कुचला आदि भी प्रसिद्ध विष हैं, जिनके खाने से कुछ ही समय में मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। इन विषों से होने वाली मृत्यु में मनुष्य को कुछ घंटे कष्ट सहना पड़ता है। हत्या या आत्महत्या के लिए इन विषों का प्रयोग बहुत समय से होता रहा है। ये विष बहुत महंगे भी नहीं हैं।

सुलभ विष—परन्तु ये विष आसानी से मिल नहीं सकते। इनकी खरीद और बिक्री पर बड़ी रोक है। खरीदने वाले को बताना पड़ेगा कि उसे वह विष क्यों चाहिए। बेचने वाले को अपने रजिस्टर में लिखना पड़ेगा कि उसने विष की कितनी मात्रा किस आदमी को किस दिन बेची।

फिर यदि कोई आदमी विष खाना चाहे, और दूसरे लोगों को पता चल जाए, तो वे अवश्य ही उसे विष खाने से रोकेंगे। कानून के अनुसार उसे आत्महत्या का प्रयत्न करने के लिए दंड भी दिया जा सकता है। किसी दूसरे व्यक्ति को विष खिलाना तो भयंकर अपराध है, जिसके लिए कई बरस की जेल हो सकती है।

महंगा और कष्टदायक विष—शराब इनसब विषों से महंगा और अधिक कष्ट देने वाला विष है। अन्य विषों से तो मृत्यु कुछ घंटों में या दो-चार दिन में ही हो जाती है, परन्तु शराब के कारण मनुष्य को बहुत समय तक कष्ट भुगतना पड़ता है। अन्य विष केवल प्राण लेते हैं, परन्तु शराब प्राण और धन दोनों को ही समाप्त कर देती है। अन्य विष केवल खाने वाले को ही कष्ट देते हैं किन्तु शराब तो पीने वाले के समूचे परिवार को कष्ट देती है।

फिर भी शराब पीने पर या शराब की बिक्री पर कोई रोक नहीं है। आप चाहे जितनी शराब खरीदकर पी सकते हैं; नशे में धुत्त हो सकते हैं; और मर भी सकते हैं। कोई आपको रोकेगा नहीं। आप इसे अपने मित्रों को भी पिला सकते हैं।

यदि मैं सड़क पर खड़ा होकर अपने कपड़ों पर तेल छिड़ककर आग लगाने की कोशिश करूं, तो जो भी देखेगा, वही मुझे आत्महत्या के इस प्रयत्न से रोकेगा। परन्तु यदि मैं सड़क पर खड़ा होकर शराब पीऊं, तो कोई आदमी मुझे नहीं रोकेगा। सचाई यह है कि आग से जल मरना शराब से मरने की अपेक्षा कम विनाशकारी है।

आप किन्हीं मित्रों को यह कहते नही सुनेंगे : "आओ यार, आज तो संखिया खाया जाए।" परन्तु शराब पीने का प्रस्ताव करने वाले अनगिनत मित्र मिलेंगे। इसीलिए शराब अन्य किसी भी विष से अधिक भयंकर और खतरनाक है क्योंकि इससे बचाने की कोशिश कोई नहीं करता।

डा० ऑब्रे लेविस का मत—ऐलोपैथिक चिकित्सा की एक प्रसिद्ध पुस्तक है—प्राइस की "टेक्स्ट बुक ऑफ दि प्रेक्टिस ऑफ मेडिसिन।" इस पुस्तक को अनेक प्रामाणिक डाक्टरों ने मिलकर लिखा है और इसका सम्पादन डोनाल्ड हंटर ने किया है। इस पुस्तक के अन्तिम अध्याय में डाक्टर औब्रे लेविस ने लिखा है : "शराब एक ऐसा विष है, जिसे समाज बुरा नहीं मानता; जिसे लोग हानिरहित समझ बैठते हैं; जो बहुत आसानी से प्राप्त हो जाता है। इसलिए ऐसे लोग, जो जीवन में किसी भी कारण असन्तुष्ट या हताश होते हैं, वे इसका अत्यधिक मात्रा में सेवन करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि जिन कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए वे शराब पीते हैं, वे शराब पीने से घटती नहीं, उल्टा और बढ़ जाती हैं।"

शराब विष है, भयंकर विष है, इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं। फिर भी लोगों को सहसा इस बात पर विश्वास

नहीं होता, क्योंकि यह खुले तौर पर बाज़ार में बिकती है और इतने सारे लोग इसे पीते हैं। एक कारण यह भी है कि शराब के बनाने और बेचने वालों की ओर से यह झूठा प्रचार किया जाता है कि शराब दवाई है; ताज़गी और शक्ति देने वाला पेय है।

क्लोरोफ़ार्म और ईथर जैसा विष—औषध निर्माण की पुस्तकों में अल्कोहल को विषों की श्रेणी में रखा जाता है। यह क्लोरोफ़ार्म और ईथर के समान माना जाता है। क्लोरोफ़ार्म और ईथर का प्रयोग अस्पतालों में आपरेशन के लिए रोगी को बेहोश करने के लिए किया जाता है। अल्कोहल की शरीर पर क्रिया लगभग वैसी ही है, जैसी कि ईथर और क्लोरोफ़ार्म की। अन्तर केवल इतना है कि ईथर और क्लोरोफ़ार्म पहले ऊपरले मस्तिष्क पर असर करके उसे अचेत कर देते हैं और निचले मस्तिष्क पर उनका असर काफी अधिक मात्रा देने पर होता हैं। इसलिए डाक्टरों ने उनकी ऐसी मात्रा निश्चित कर ली है, जिससे ऊपरला मस्तिष्क तो प्रभावित हो जाए, परन्तु निचला मस्तिष्क प्रभावित न हो। ऊपरले मस्तिष्क में उन तंत्रिकाओं के नियंत्रण के केन्द्र हैं, जिनके द्वारा मनुष्य स्वेच्छा से कोई कार्य कर सकता है—जैसे आंखें खोलना-बन्द करना, देखना, सुनना, हाथ-पांव हिलाना। अनुभव करने वाली तंत्रिकाओं के केन्द्र भी ऊपरले मस्तिष्क में ही हैं। जब ऊपरला मस्तिष्क क्लोरो-फार्म, ईथर या अल्कोहल से प्रभावित हो जाता है, तब आदमी अचेत हो जाता है। उसकी इन्द्रियां काम करना बन्द कर देती हैं। उसे सुख-दुख का अनुभव नहीं होता। उसकी चीर-फाड़ करने पर भी उसे दर्द नहीं होता। जिस प्रकार क्लोरोफ़ार्म या ईथर से बेहोश किए गए आदमी का आपरेशन किया जा सकता है, उसी तरह अल्कोहल (शराब) से गहरे नशे में बेहोश पड़े शराबी का भी आपरेशन मज़े से किया जा सकता है। उसे कोई दर्द न होगा।

निचले मस्तिष्क पर घातक प्रभाव—परन्तु निचले मस्तिष्क में जीवन की महत्त्वपूर्ण क्रियाओं का नियंत्रण करने वाले केन्द्र हैं। इनमें से कुछ क्रियाएं ऐसी हैं, जो मनुष्य के चाहते न चाहते अपने आप होती रहती हैं, जैसे सांस लेना और छोड़ना; हृदय का धड़कते रहना; शरीर के तापमान को एक-सा बनाए रखना; रक्त-चाप (ब्लड प्रेशर) को ठीक बनाए रखना इत्यादि। इन क्रियाओं पर मनुष्य का अपना बस बहुत कम होता है। निचला मस्तिष्क अपने आप ही इन क्रियाओं को ठीक ढंग से करता रहता है।

जब अल्कोहल, क्लोरोफार्म या ईथर का प्रभाव निचले मस्तिष्क पर हो जाता है, तब ये क्रियाएं, जो जीवन के लिए आवश्यक हैं, बन्द हो जाती हैं और आदमी मर जाता है। क्लोरोफार्म और ईथर की यह विशेषता है कि ऊपरले मस्तिष्क को तो उनकी थोड़ी-सी मात्रा ही अचेत कर देती है, परन्तु निचले मस्तिष्क को अचेत करने के लिए उनकी काफी अधिक मात्रा देनी पड़ती है। अल्कोहल में यह विशेषता नहीं है। अल्कोहल की जो मात्रा ऊपरले मस्तिष्क को अचेत करती है, उससे ज़रा-सी अधिक ही निचले मस्तिष्क को भी अचेत कर देती है। इसलिए अस्पताल के रोगियों को बेहोश करने के लिए अल्कोहल का प्रयोग नहीं किया जा सकता। जिस मात्रा से वे पूरी तरह बेहोश होंगे, उससे ही उनके मर जाने का भारी खतरा है।

इस दृष्टि से देखा जाए, तो अल्कोहल क्लोरोफार्म और ईथर से अधिक खतरनाक विष है। प्रोफेसर फिक ने लिखा है :

रक्त-संचार में गड़बड़ी—जो आदमी शराब पीने का आदी नहीं है, उसे यदि शराब का छोटा-सा गिलास (तीन औंस) पिला दिया जाए, तो उसको सिर चकराने आदि की शिकायत हो जाती है। इसका मतलब है कि उसका रक्तसंचार गड़बड़ा गया है। तीन औंस शराब में डेढ़ चम्मच से अधिक अल्कोहल नहीं होगा। इतनी थोड़ी देर में उसका एक-तिहाई भाग भी

रक्त में मुश्किल से पहुंचा होगा। इस प्रकार उस व्यक्ति के रक्त में अल्कोहल की मात्रा एक हज़ार में आधे के लगभग होगी। इतनी थोड़ी-सी मात्रा भी मनुष्य की तंत्रिका प्रणाली पर स्पष्ट दीखने वाला प्रभाव डाल रही होती है। इसलिए इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि अल्कोहल एक प्रबल विष है।

अल्कोहल दवाई के रूप में—अब से साठ साल पहले अल्कोहल का प्रयोग दवाई के रूप में भी किया जाता था। घावों को सड़ने से बचाने के लिए अल्कोहल को ही प्रधान साधन माना जाता था। समझा जाता था कि घाव पर अल्कोहल लगा देने से वह सड़ेगा नहीं। इसके अलावा अस्पतालों में पोषक पेय के रूप में दूध के बजाय शराब दी जाती थी। परन्तु ज्यों-ज्यों वैज्ञानिक खोज होती गई, त्यों-त्यों अस्पतालों में अल्कोहल का प्रयोग तेज़ी से घटता गया। लंदन के सात बड़े अस्पतालों में शराब और दूध के खर्च के आंकड़े इस प्रकार हैं :

वर्ष	शराब पर व्यय	दूध पर व्यय
१८६२	७७१२ पौंड	३०२६ पौंड
१८७२	७९१४ ,,	४२३७ ,,
१८८२	५०९० ,,	७७९५ ,,
१८९२	३७४० ,,	७३६२ ,,
१९०२	२९२५ ,,	९०३५ ,,
१९१२	१२३८ ,,	११,८७४ ,,

इससे स्पष्ट है कि शराब का स्थान अधिक और अधिक दूध लेता गया।

अस्पतालों में प्रयोग बन्द—डा० लिस्टर ने जब से पूयरोधक (एंटिसेप्टिक) आपरेशन करने का तरीका खोज निकला, तब से घावों पर अल्कोहल का प्रयोग भी नहीं के बराबर रह गया है। डा० लिस्टर की खोज यह थी कि आपरेशन के बाद घाव इसलिए सड़ते हैं कि आपरेशन के औज़ारों, डाक्टरों के हाथों और कपड़ों, घाव पर बांधी जाने वाली पट्टियों को कीटाणु-

शराब के स्थान पर दूध

रहित नहीं किया जाता। यदि पानी में उबालकर तथा अन्य तरीकों से इन सबको कीटाणुओं से रहित कर दिया जाए और आपरेशन के कमरे में पूरी स्वच्छता रखी जाए, तो घाव में कीटाणु पहुंच ही नहीं सकेंगे और घाव सड़ेगा ही नहीं। उसका कहना बिल्कुल सही निकला।

पहले, आपरेशन के बाद रोगियों को इस भ्रम में शराब पीने को दी जाती थी कि इससे वे जल्दी ही चंगे हो जाएंगे। परन्तु अब सभी जगह न केवल आपरेशन के बाद रोगियों को शराब देनी बन्द कर दी गई है, बल्कि डाक्टर लोग रोगी से कह देते हैं कि वह आपरेशन से पहले भी कई दिन तक शराब न पिये। कारण यह है कि शराब से रोगी के स्वस्थ होने में बाधा पड़ती है।

अस्पतालों में शराब का प्रयोग कितना घटा है, यह इससे

स्पष्ट है कि लंदन के अस्पतालों में, सन् १८८९ में ८००० रोगियों ने २५५००० गैलन हल्की शराब और १६०० गैलन तेज़ शराब पी। इसके मुकाबले में सन् १९०५ में १९००० रोगियों ने कुल १००० गैलन हल्की शराब और २५० गैलन तेज़ शराब पी। इससे स्पष्ट है कि यूरोप के समझदार देशों में शराब के गुण-दोषों को ठीक-ठीक परखा जाने लगा।

६

शराब और अल्कोहल

शराब वीयर, ह्विस्की, जिन, ब्रांडी, रम, शेम्पेन, वर्माउथ, ऐबसिन्थी, देसी शराव, ताड़ी आदि अनेक नामों से बाज़ार में बिकती है। इन सब शराबों के रंग, गन्ध और स्वाद में अन्तर होता है।

इथाइल अल्कोहल—इन सब शराबों में जो मादक अर्थात नशा करने वाला तत्त्व है, वह है—इथाइल अल्कोहल, इसीको 'इथानोल' भो कहते हैं। तेज़ शराबों, ह्विस्की, वर्माउथ, ऐबसिन्थी आदि में कुछ खास प्रकार के ईथर भी होते हैं। उनकी गन्ध भली होती है। किन्तु उनका प्रभाव अच्छा नहीं होता।

कुछ शराबों में इमाइल अल्कोहल और एसिटेल्डिहाइड जैसी कुछ दूषित चीज़ें भी मिली रहती हैं। इनका असर इथाइल अल्कोहल जैसा ही होता है, किन्तु वे अधिक विषैली होती हैं।

वीयर सबसे हल्की शराब है। इसमें अल्कोहल की मात्रा ५ से १० प्रतिशत तक होती है। आयुर्वेदिक आसवों में ७ से १५ प्रतिशत तक अल्कोहल होता है। ह्विस्की और ब्रांडी में ४० से ५६ प्रतिशत और ऐबसिन्थी में ७२ प्रतिशत तक अल्कोहल होता है। मेथिलेटिड स्पिरिट ९९ प्रतिशत अल्कोहल होती है, किन्तु उसमें विष मिला रहता है, जिससे उसे पिया न जा सके।

प्राकृतिक अल्कोहल—इथाइल अल्कोहल अंगूर, अनाज या गुड़ को सड़ाने से तैयार होता है। खजूर या ताड़ के रस को यदि यों ही २४ घंटे पड़ा रहने दिया जाये, तो उसमें खमीर आ जाता है। और वह ताड़ो (शराब) बन जाता है। इसे प्राकृतिक अल्कोहल कहा जाता है आयुर्वेदिक आसव और अंगूरी शराब इस श्रेणी में आती हैं।

भपके से बनाया गया अल्कोहल—इसके लिए जौ, गेहूं या

मकई को, या गुड़ को, या चीनी बनाते समय बचे शीरे को एक खास ढंग से खमीर डालकर सड़ाया जाता है। जब उसमें अल्कोहल पैदा हो जाता है, तब भपके द्वारा उसे अलग कर लिया जाता है।

भपका—पानी १०० अंश सेंटीग्रेड पर उबलकर भाप बनता है। परन्तु अल्कोहल ७८.३ अंश सेंटीग्रेड पर उबलने लगता है। जिस घोल में पानी और अल्कोहल मिले हुए हों, उसे धीमी आंच पर गर्म किया जाता है। पहले अल्कोहल वाष्प बनकर उड़ता है। इन्हीं वाष्पों को एक नली द्वारा दूसरे बर्तन में ले जाकर ठंडा करके अल्कोहल के रूप में जमा लिया जाता है। इस प्रकार भपके से तैयार किया गया अल्कोहल शुद्ध होता है। उसमें अन्य कोई दूषित पदार्थ नहीं होता।

मिलावट—परन्तु शुद्ध अल्कोहल का स्वाद ऐसा नहीं होता कि उसे पीना अच्छा लगे। उसका कोई रंग भी नहीं होता। इसलिए उसमें कुछ रंग, कुछ गन्ध और कुछ मसाले मिलाकर उसे पीने लायक बनाया जाता है।

भपके द्वारा शराब बनाना मना है—शराब और अल्कोहल के बनाने पर सरकार का पूरा नियंत्रण है। सरकार से लाइसेंस लिए बिना भपके से शराब बनाना बिल्कुल मना है। लगभग सभी देशों में शराब बनाने पर इस प्रकार की रोक है।

अल्कोहल की विशेषताएं—अल्कोहल एक नीरंग, तरल पदार्थ है। इसमें एक खास प्रकार की गन्ध होती है, जो प्रिय नहीं लगती। यदि इसे जलती दियासलाई छुवा दी जाए, तो यह तुरन्त जलने लगता है। यह अपने आसपास की हवा में से पानी चूसता है।

७

मनुष्य के शरीर पर अल्कोहल का प्रभाव

एक बड़ी विशेषता—अल्कोहल की एक विशेषता यह है कि पीने पर यह अपना रूप बिना बदले सीधा रक्त में पहुंच जाता है। यदि थोड़ी मात्रा में शराब पी जाए, तो वह सबकी सब आमाशय से सीधी ही (बिना आंतों में से गुज़रे) सोखी जाकर खून में पहुंच जाती है। अधिक शराब पीने पर भी उसका लगभग २० प्रतिशत अंश आमाशय में ही सोख लिया जाता है। बाकी ८० प्रतिशत आंतों में से सोखा जाकर धीरे-धीरे रक्त में पहुंचता है। पीने के ५ मिनट बाद ही पीने वाले के खून में अल्कोहल का अंश पाया जा सकता है।

शराब पीने के बाद खून में उसकी मात्रा बढ़ती जाती है। ३० मिनट से लेकर २ घंटे तक यह मात्रा अधिकतम रहती है। यदि और शराब न पी जाए, तो दो घंटे के बाद रक्त में अल्कोहल की मात्रा घटने लगती है।

अन्य खाद्य पदार्थों में अन्तर—हम अन्य जो वस्तुएं खाते या पीते हैं, वे शरीर में ज्यों की त्यों नहीं रह जातीं। घी, तेल, शक्कर, आटा, फल आदि आमाशय से आंतों में जाते हैं। अनेक क्रियाओं द्वारा यकृत्, अग्न्याशय आदि उन्हें ऐसे रूप में बदलते हैं, जिसमें से आंतें शरीर के लिए उपयोगी अंश को लेकर बाकी को मल के रूप में बाहर निकाल देती हैं।

अल्कोहल रक्त द्वारा शरीर के सब अंगों में पहुंच जाता है। यह रीढ़ की हड्डी में भरे तरल पदार्थ में, मस्तिष्क में और फेफड़ों में भी जा पहुंचता है। रक्त में जितना अधिक अल्कोहल होगा, उतना ही इन सब अंगों में भी होगा।

यकृत् पर बोझ—अल्कोहल शरीर के लिए विजातीय

तत्व है। शरीर इसे तुरन्त बाहर निकाल देना चाहता है। पी गई शराब का केवल २ प्रतिशत अंश फेफड़ों द्वारा सांस के रूप में, या त्वचा के रास्ते पसीने के रूप में या मूत्र के साथ शरीर से निकल पाता है। बाकी ९८ प्रतिशत अंश निपटाने का काम यकृत् (जिगर, लिवर) को करना पड़ता है।

अल्कोहल की ऊर्जा जमा नहीं रह सकती—यकृत् अल्कोहल को आक्सीजन मिलाकर जलाता है और उसके फलस्वरूप गर्मी और ऊर्जा उत्पन्न होती है। इस ऊर्जा के कारण ही शराब पीने वाले व्यक्ति को स्फूर्ति तथा उत्साह प्रतीत होता है। पीने वाला व्यक्ति इस ऊर्जा का प्रयोग उसी प्रकार कर सकता है, जिस प्रकार शर्करा, वसा या प्रोटीन वाले अन्य भोजनों से प्राप्त ऊर्जा का करता है। परन्तु ध्यान देने की बात यह है कि शर्करा और वसा तो शरीर के अन्दर संचित रह सकती हैं, किन्तु अल्कोहल संचित नहीं रह सकता। इसलिए अल्कोहल से उत्पन्न ऊर्जा का प्रयोग तुरन्त ही कर लेना पड़ता है। दूसरी बात यह है कि अल्कोहल शरीर के नष्ट हुए ऊतकों (Tissue) के स्थान पर नये ऊतकों के निर्माण में तनिक भी सहायता नहीं कर सकता। तीसरी बात यह है कि यकृत् में पहुंचकर अल्कोहल वहां विद्यमान शर्करा, वसा और प्रोटीन का स्थान स्वयं ले लेता है। यह अल्कोहल तो विजातीय पदार्थ होने के कारण शीघ्र यकृत् द्वारा जलाकर समाप्त कर दिया जाता है, परन्तु जिन वसा, शर्करा और प्रोटीनों को यह यकृत् से निकाल बाहर करता है, उनकी शरीर में भारी कमी हो जाती है। अतः शराबी के लिए आवश्यक होता है कि वह बड़ी मात्रा में प्रोटीनयुक्त आहार ले, नहीं तो उसका शरीर नाइट्रोजन की कमी के कारण तेजी से क्षीण होने लगता है।

यकृत् पर बोझ—अल्कोहल को जलाकर शरीर से बाहर निकालने के लिए यकृत् को भारी मेहनत करनी पड़ती है। यकृत् में से तरह-तरह के रस निकलकर अल्कोहल को पहले

एसिटेल्डिहाइड में, फिर उसे एसिटिक एसिड (सिरकाम्ल) में और अन्त में उसे कार्बन डाइग्राक्साइड गैस और पानी के रूप में बदलते हैं। जिन प्राणियों के भोजन में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा खूब होती है, वे अल्कोहल को इस रीति से जल्दी ही शरीर से निकाल पाने में समर्थ होते हैं। जो प्राणी कार्बोहाइड्रेट नहीं खाते, उन्हें अल्कोहल को इस प्रकार शरीर से निकालने में कठिनाई होती है।

प्यास लगाता है—अल्कोहल की एक विशेषता है कि वह पानी को चूसता है। यदि शुद्ध अल्कोहल को किसी खुली शीशी में रख दिया जाए, तो वह वायुमंडल में से ही पानी चूसना शुरू कर देता है। शराब के रूप में पिया हुआ अल्कोहल एक ओर से स्वभावतः पानी चूसता है; दूसरी ओर शरीर अल्कोहल की तीव्रता को कम करने के लिए अपना पानी उसमें मिलाता है और जल्दी से जल्दी उसे पसीने और मूत्र के मार्ग से बाहर निकाल देना चाहता है। इसलिए शराब पीने के बाद आदमी को पसीना आता है; बार-बार पेशाब आता है। शरीर में पानी की कमी हो जाती है, इसलिए शराबी को प्यास लगती है।

अल्कोहल का शरीर की क्रियाओं पर प्रभाव—प्रायः लोग समझते हैं कि मदिरा तंत्रिका प्रणाली (Nervous system) को अर्थात् ज्ञानवाहिनियों को उत्तेजित करती है, जिससे मदिरा पीने वाले को स्फूर्ति और ताज़गी अनुभव होती है। परन्तु अब सभी चिकित्सा-वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि अल्कोहल तंत्रिकाओं को उत्तेजित नहीं करता, बल्कि उन्हें शान्त और शिथिल कर देता है। वैज्ञानिक भाषा में कहा जाए, तो अल्कोहल तंत्रिकाओं का उत्तेजक नहीं, अवसादक है। शराब पीने पर जो थोड़ी-सी स्फूर्ति अनुभव होती है, उसका कारण ज्ञानवाहिनियों की उत्तेजना नहीं, अपितु वह ऊर्जा है जो यकृत् में अल्कोहल के जलने से बड़ी मात्रा में उत्पन्न होती है।

तंत्रिकाओं अर्थात् ज्ञानवाहिनियों पर अल्कोहल का अवसादक (शान्त और शिथिल करने वाला) प्रभाव निम्नलिखित चिह्नों से स्पष्ट हो जाता है :

(१) ज्ञानवाहिनियां शिथिल पड़ जाती हैं, इसलिए मदिरा पीने के बाद अपनी चेष्टाओं पर आदमी का वस नहीं रहता। उसकी आंखें घूमने लगती हैं। वह सीधा खड़ा नहीं रह सकता; चलते हुए लड़खड़ाता है या गिर पड़ता है। उसकी वाणी भी काबू में नहीं रहती। शब्द अटकते हुए अस्वाभाविक ढंग से मुंह से निकलते हैं। वह ऐसी बातें भी कह जाता है, जिन्हें वह सचेत दशा में न कहता।

(२) जिन कार्यों के लिए अधिक कुशलता या सतर्कता की आवश्यकता होती है, उन्हें मदिरा पीने के बाद आदमी ठीक ढंग से नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए टाइप करना, मोटर गाड़ी चलाना आदि। न केवल उसकी इन्द्रियों की गति मन्द पड़ जाती है, बल्कि उसका अंदाजा भी गलत हो जाता है।

मदिरा तंत्रिकाओं (ज्ञानवाहिनियों) की क्रिया को शिथिल कर देती है। ज्ञानेन्द्रियों की प्रतिक्रिया में अधिक देर लगती है। जैसे पियक्कड़ को चिऊंटी काटी जाए, या थप्पड़ मारा जाए, तो नशे के कारण उसे अनुभूति कम होगी और उसकी प्रतिक्रिया कुछ देर से होगी। उसकी ज्ञानेन्द्रियों की अनुभूति मन्द और अस्पष्ट हो जाएगी। दिखाई कम पड़ेगा; सुनाई भी कम पड़ेगा; गन्ध कम अनुभव होगी। स्पर्श की अनुभूति भी कम और देर से होगी। कर्मेन्द्रियों पर भी अपना बस कम होता जाएगा। वह खड़ा नहीं रह सकेगा; चलते हुए लड़खड़ाएगा। वाणी भी स्पष्ट नहीं रहेगी। वह अटक-अटक कर अस्पष्ट बोलेगा। दृष्टि ठीक तरह केन्द्रित नहीं होगी। आंखें घूमती-सी रहेंगी।

सामान्य व्यक्ति समाज को दृष्टि में रखकर कुछ संकोचों के साथ जीवन बिताता है। उदाहरण के लिए, वह नंगा नहीं
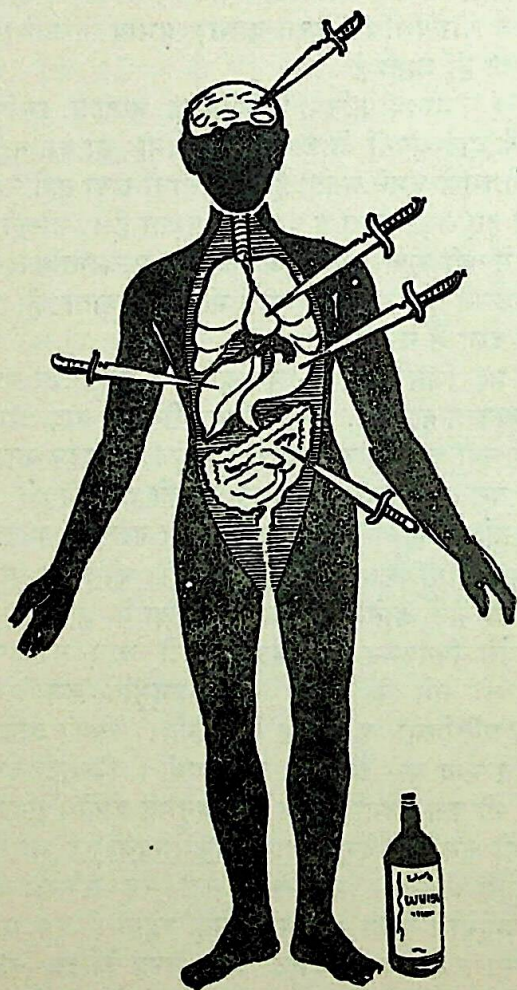
शराब क्या करती है ?

फिरता; अपने घर के बड़े लोगों से गाली-गलौज नहीं करता। परन्तु मदिरा की यथेष्ट मात्रा पी लेने के बाद ज्ञानवाहिनियों की शिथिलता के फलस्वरूप यह सामाजिक संकोच समाप्त हो जाता है और दबी हुई पाशविक प्रवृत्तियां उभर आती हैं। वह यह अनुभव करता है कि मैं आज़ाद हूं। मुझे किसीसे दबने, डरने या किसीका ध्यान रखने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं जो चाहूंगा, करूंगा। इसके फलस्वरूप वह असभ्य आचरण करता है; गालियां बकता है; डींगें हांकता है; लड़ाई-भिड़ाई करता है; और हत्या तक कर देता है। यही मदिरा पीने का महान आनन्द है, जिसके लिए अधिकांश लोग पारिवारिक सुख और स्वास्थ्य तक का बलिदान कर देते हैं। क्या आनन्द ? मन के बन्धनों से थोड़ी देर के लिए छुटकारा। समाज के जिन नियंत्रणों को हम मानकर चलते हैं और जिन नियंत्रणों के द्वारा यह समाज समाज बना हुआ है, उनसे मुक्ति।

परन्तु सब लोग मानसिक नियंत्रणों से इस मुक्ति का आनन्द पूरी तरह नहीं ले पाते, क्योंकि मानसिक दृष्टि से अस्थिर व्यक्तियों पर शराब पीने का यह भी असर हो सकता है कि उन्हें मिरगी का दौरा पड़ जाए।

अल्कोहल का अपना जो दुष्परिणाम होता है, वह तो होता ही है, किन्तु इसकी एक बड़ी विशेषता यह है कि यह अन्य विषों के प्रभाव को बहुत बढ़ा देता है। जिन तेज़ शराबों में अन्य विषैले पदार्थ मिले रहते हैं, उनका प्रभाव इसलिए अधिक हानिकर होता है, क्योंकि अल्कोहल उन विषैले पदार्थों के प्रभाव को बहुत बढ़ा देता है। इसी प्रकार जो लोग शराब के साथ सिगरेट या तम्बाकू पीते हैं, उन पर तम्बाकू का बुरा असर उसकी अपेक्षा कहीं अधिक होता है, जितना कि शराब के बिना तम्बाकू पीने से होता।

ज्ञानवाहिनियों के सिवाय बाकी शरीर पर अल्कोहल का तात्कालिक प्रभाव बहुत अधिक नहीं होता। यदि शराब

इतनी पी ली जाए कि उससे नशा होने लगे, तो नाड़ी की चाल तेज़ हो जाती है। रक्तचाप कम हो जाता है। त्वचा के पास की रक्त वाहिनियां फैल जाती हैं और उसी अनुपात में भीतरी रक्तवाहिनियां सिकुड़ जाती हैं। पसीना आने और रक्त-वाहिनियों के फैलने के फलस्वरूप शरीर का तापमान गिर जाता है।

कितनी शराब, कैसा असर

ताज़गी और आनन्द—यदि मदिरा थोड़ी मत्रा में पी जाए (इतनी कि मनुष्य के खून में उसका अनुपात प्रति एक हज़ार भाग में १/२ भाग रहे; ०.०३ प्रतिशत), तो पीने वाले को ताज़गी और आनन्द की अनुभूति होती है। वह अपने अन्य पीने वाले साथियों से आनन्द, और उल्लास से बातें करता है; अपनापन जताता है; पैसा देने को भी तैयार हो जाता है। उसके मुख पर हल्की-सी लाली आ जाती है।

बातूनीपन—मदिरा की मात्रा थोड़ी और बढ़ने पर (खून में अल्कोहल का अनुपात ०.०४ प्रतिशत हो जाने पर) पीने वाले को लगता है कि उसमें खूब शक्ति आ गई है। वह खूब बोलता है और ज़ोर-ज़ोर से बोलता है। उसे लगता है। कि वह बहुत काम कर सकता है। वह बात-बात पर हंसता है, पर वह जो कुछ भी करता है, वह ठीक ढंग से नहीं हो पाता। कुछ न कुछ गड़बड़ी हो जाती है। वह समझ नहीं पाता कि गड़बड़ी क्यों हो रही है। वह यह मानने को तैयार नहीं होता कि वह शराब के नशे में है।

लड़खड़ाहट—जब मदिरा की मात्रा थोड़ी और बढ़ जाती है (रक्त में अल्कोहल का अनुपात ०.०५ प्रतिशत), तब पीने वाले की आवाज़ लड़खड़ाने लगती है; वह शब्दों का उच्चारण अस्पष्ट और अटकते हुए करता है। उसे खड़े रहने और चलने में भी परेशानी होती है। वह डगमगाता हुआ चलता है। उसकी आंखें घूमती-सी प्रतीत होती हैं। वह दृष्टि को किसी चीज़ पर भली भांति केन्द्रित नहीं कर सकता। अपनी कर्मेन्द्रियों पर उसका वश नहीं रहता।

विवेक का नाश—साथ ही अपने ऊपर भी उसका वश नहीं रहता। उसका विवेक नष्ट हो जाता है। भले-बुरे का ज्ञान नहीं

रहता। वह किसी की परवाह नहीं करता। समाज के जिन नियंत्रणों को मानकर आदमी आम तौर से रहता है, उन्हें वह भूल जाता है। इसलिए वह नंगा और बेशर्म हो जा सकता है। जो बातें कहनी या करनी नहीं चाहिए, उन्हें वह कहता और करता है। "मैं आज़ाद हूं। मैं किसीसे नहीं डरता। मैं जो चाहूंगा, करूंगा। देखता हूं, कौन मुझे रोकता है?" पर उसकी हालत यह होती है कि मुंह से ठीक बोल नहीं निकलता; सीधा खड़ा नहीं हुआ जाता; साफ़ कुछ दिखाई नहीं पड़ता। यह आज़ाद और निडर आदमी छोटे से छोटे काम को भी ठीक ढंग से नहीं कर सकता। दियासलाई की तीली तक नहीं जला सकता। पर वह अपने मन के और समाज के बन्धनों से छुटकारा पा जाता है। उसकी कुंठाएं समाप्त हो जाती हैं। यही शराब का 'बड़ा मज़ा' है, जिसके लिए अधिकतर लोग शराब पीते हैं। अल्कोहल उसकी तंत्रिकाओं (ज्ञानवाहिनियों) को शिथिल और सुन्न कर देता है। इसीसे उसे यह अनुभूति होती है।

गाली-गलौज और मारपीट—यदि शराब की मात्रा थोड़ी-सी और बढ़ाई जाए (रक्त में अल्कोहल का अनुपात ०.०७५ प्रतिशत) तो पीने वाला स्वयं को औरों से दूर और ऊंचा अनुभव करने लगता है। अब वह कोई भी काम ठीक ढंग से नहीं कर सकता; परन्तु वह इस बात को समझ नहीं पाता कि वह बहुत ही बेहूदे ढंग से काम कर रहा है। "जो भी काम बिगड़ रहा है, वह दूसरों की गलती से; वह स्वयं तो सब काम ठीक ढंग से कर रहा है।" शीशे का गिलास उसने नहीं तोड़ा; वह तो गिलास ही बदमाश था, जो टूट गया। वह आपे से बाहर हो जाता है। आवेश में आकर गाली-गलौज और मार-पीट भी कर सकता है।

आपे से बाहर—परन्तु जब शराब की मात्रा और बढ़ाई जाती है (रक्त में अल्कोहल का अनुपात ० प्रतिशत; हज़ार

में १ भाग) तब मस्तिष्क के ऊपरले भागों पर असर पड़ने लगता है। मस्तिष्क क ऊपरले भाग में अनुभव करने और क्रियाओं को नियंत्रित करने वाले केन्द्र हैं। देखना, सुनना, बोलना, चलना, हाथ-पांव हिलाना इन्हीं केन्द्रों से नियंत्रित होता है। जब अल्कोहल के प्रभाव से ये केन्द्र सुन्न हो जाते हैं, तब आदमी न ठीक ढंग से देख सकता है, न सुन सकता है, न बोल सकता है; न चल सकता है। वह किसी भी काम को ठीक ढंग से नहीं कर सकता। पर वह समझता यह है कि वह हर काम को इतने बढ़िया ढंग से कर रहा है कि उतना और कोई तो कर ही नहीं सकता, स्वयं उसने भी पहले कभी इतने बढ़िया ढंग से नहीं किया था। परन्तु वह अपना कोट उठाकर स्वयं नहीं पहन सकता। कमरे में घुसने के लिए ताला नहीं खोल सकता। "आदमी काम को बढ़िया ढंग से कर नहीं रहा होता; बेहूदे ढंग से कर रहा होता है। पर वह अपनी बेहूदगी को जानता नहीं। वह समझता है कि मैं बहुत बढ़िया ढंग से काम कर रहा हूं।" यही शराब का नशा है। यह स्थिति तब आती है, जब तेज़ शराब पांच या छह औंस पी ली जाए।

हुआ क्या है ? असल में उसकी तंत्रिकाएं सुन्न पड़ गई हैं। उसकी अनुभव शक्ति मन्द हो गई है। उसकी चेतना कम हो गई है। उसकी अच्छी शक्तियां दब गई हैं और उसकी नीच प्रवृत्तियां उभर आई हैं। वस्तुतः उसका शरीर और मस्तिष्क उत्तेजित नहीं हुआ है, शिथिल हो गया है; सुन्न हो गया है।

नशा, ऊंघ, नींद—मदिरा की मात्रा थोड़ी और बढ़ाई जाए (रक्त में अल्कोहल का अनुपात ०.२ प्रतिशत) तो अल्कोहल का प्रभाव मस्तिष्क के मध्य भाग पर भी होने लगता है। इस भाग में भावुकता के केन्द्र स्थित हैं। अब पीने वाला चिड़चिड़ा हो उठता है। बात-बात पर वह खीझता है। "लोग क्यों समझते हैं कि वह नशे में है ? वह नशे में नहीं है। वह बिल्कुल ठीक है।" अगर आप उसकी सहायता करने लगें, तो वह आपसे ही लड़

पड़ेगा। वह ऊंघने लगता है। बीच-बीच में उल्टियां करता है। वह नशे में धुत हो गया है। पर उसे अभी भी होश में लाया जा सकता है। हिलाने-डुलाने पर वह आंख खोल सकता है; सुन सकता है और जवाब भी दे सकता है।

शरीर अल्कोहल को निकाल बाहर करने के लिए कोशिश कर रहा है। इस विष से वह छुटकारा पाना चाहता है। आमाशय में भरे अलकोहल को वह उल्टी द्वारा बाहर निकाल देता है। पीने वाले को बार-बार पेशाब आता है। कुछ अल्कोहल पेशाब के रूप में बाहर निकलता है। पीने वाले को पसीना आता है। इस रास्ते से भी जितना अल्कोहल निकाला जा सके, निकाला जाता है। शरीर का तापमान कम हो जाता है; रक्त-चाप घट जाता है और हृदय की गति मन्द हो जाती है।

अचेतना और अतिमूर्छा—यदि शराब की मात्रा थोड़ी और बढ़ाई जाए (रक्त में अल्कोहल का अनुपात ०.४ या ०.५ प्रतिशत; हज़ार में ५ भाग) तो अल्कोहल का प्रभाव मस्तिष्क के निचले भाग पर होने लगता है। इस भाग में जीवन के लिए आवश्यक क्रियाओं को (जैसे सांस लेना-छोड़ना; हृदय का नियमित रूप से धड़कना, शरीर का तापमान और रक्तचाप ठीक रखना) नियंत्रित करने वाले केन्द्र हैं। जब इस भाग पर अल्कोहल का सुन्न करने वाला असर होने लगता है, तब पियक्कड़ अतिमूर्छा (Coma) की दशा में पहुंच जाता है। इस समय वह पूरी तरह बेहोश होता है। इस बेहोशी से उसे किसी तरह जगाया नहीं जा सकता। यदि उसका हाथ या पांव काट डाला जाये, या उसका पेट चीर दिया जाये, तो उसे पता नहीं चलेगा। यदि उसकी पलकें खोलकर पुतली को अंगुली से छुआ जाए, तो वह ज़रा भी नहीं हिलेगी।

यदि यकृत् सही काम करता रहा, और उसने समय रहते अल्कोहल को शरीर से निकालकर बाहर कर दिया, तो पीने वाला फिर होश में आ जाएगा। परन्तु यदि उससे पहले ही

मस्तिष्क के निचले भाग के महत्त्वपूर्ण केन्द्र सुन्न हो गए, तो सांस रुक जाने या हृदय की धड़कन बन्द हो जाने से शराबी की मृत्यु हो जाएगी।

ऊपर लिखी बातें उन साधारण लोगों पर लागू होती हैं, जो शराब पीने के आदी नहीं है। जो लोग शराब पीने के आदी हो जाते हैं, उन्हें अधिक शराब पी लेने पर भी कम नशा होता है। एक विचित्र बात यह है कि यदि कोई व्यक्ति इस तरह थोड़ी-थोड़ी देर बाद शराब पीता रहे कि उसके रक्त में अल्कोहल की मात्रा खूब बनी रहे, तो पहले तो उसमें नशे के लक्षण प्रकट होंगे, परन्तु यदि वह फिर भी शराब पीता रहे और रक्त में अल्कोहल की मात्रा देर तक अधिक बनी रहे, तो कुछ समय बाद नशे के लक्षण समाप्त हो जाएंगे।

कुछ लोगों की बनावट ही ऐसी होती है कि उन्हें अन्य लोगों की अपेक्षा कम नशा होता है।

मदिरा का उग्र और जीर्ण प्रभाव—मदिरा पीने का प्रभाव दो प्रकार का होता है : (१) कोई व्यक्ति एकाएक बहुत-सी शराब पी ले, तब उस पर होने वाला प्रभाव 'उग्र-प्रभाव' कहलाता है। (२) कोई व्यक्ति बार-बार शराब पीते रहने के कारण उसका आदी हो जाता है। उस पर शराब का जो प्रभाव होता है वह 'जीर्ण प्रभाव' कहलाता है। ये दोनों ही प्रकार के प्रभाव अत्यन्त भयानक होते हैं।

उग्र प्रभाव—जब कोई आदमी इतनी शराब पी ले कि उसके नशे के कारण उसकी चेष्टाएं उसके अपने लिए या दूसरों के लिए निरापद न रहें, तब उसे मदिरा का 'उग्र प्रभाव' कहा जाता है। यह प्रभाव इस बात पर तो निर्भर होता ही है कि पीने वाले ने कितनी शराब पी है, साथ ही इस बात पर भी निर्भर होता है कि पीने वाले का शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक दशा कैसी है। हो सकता है कि एक व्यक्ति कम शराब पीकर ही नशे में धुत हो जाए और दूसरा अधिक शराब पीकर भी

होश-हवास में बना रहे।

मदिरा का उग्र प्रभाव ऊपर विस्तार से बताया जा चुका है। पहले चुस्ती और ताज़गी, उत्साह और प्रफुल्लता अनुभव होती है। फिर आदमी क्रमशः आपे से बाहर होने लगता है। अन्त में नींद या अतिमूर्छा की दशा में पहुंच जाता है। कभी-कभी तुरन्त मर भी जाता है। परन्तु मदिरा का जीर्ण प्रभाव कुछ भिन्न प्रकार का होता है।

जो लोग शराब पीने के आदी हो जाते हैं, उन्हें थोड़ी शराब से नशा नहीं होता। उन्हें अधिक पीनी पड़ती है। अधिक पीने पर उसके बुरे असर, बेचैनी, अपचन, अफारा, मितली, उल्टी आदि अधिक होते हैं। आमाशय और यकृत् बेचैन हो उठते हैं। इन लक्षणों को दबाने के लिए शराबी को और शराब पीनी पड़ती है। मज़ा यह है कि शराब पीने से ये लक्षण कुछ देर के लिए दब भी जाते हैं। लगता है कि शराब दवाई है। परन्तु असल में आराम इसलिए अनुभव होता है कि शराब से तंत्रिकाएं सुन्न हो जाती हैं और अनुभव करने की शक्ति मन्द पड़ जाती है। शराबी समझता है कि मेरा कष्ट दूर हो गया। पर कुछ ही देर बाद ये सब कष्ट पहले से भी प्रबल होकर उभर पड़ते हैं।

शराबी या पियक्कड़

किसी आदमी ने कभी-कदास शराब पी ली हो तो उसे शराबी या पियक्कड़ नहीं कहा जाता। शराबी उस आदमी को कहा जाता है, जो शराब पिए बिना अपना नित्य-प्रति का सामान्य काम-काज कर ही न सकता हो। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि शराबी वह व्यक्ति है, जो अल्कोहल पीने का इतना आदी हो गया हो कि उससे उसके स्वास्थ्य पर, अन्य व्यक्तियों के साथ उसके सम्बन्धों पर और उसकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति पर बुरा असर पड़ने लगा हो।

पियक्कड़, समाज के लिए संकट—भारत में इस प्रकार के शराबियों या पियक्कड़ों की संख्या लगभग पांच करोड़ है। ये शराबी शराब पीकर मोटर चलाते हैं, जिससे हज़ारों दुर्घटनाएं होती हैं। ये लोग शराब पीकर डकैतियां, हत्याएं तथा अन्य अपराध करते हैं, जिनसे समाज की सुख-शान्ति नष्ट होती है। मद्यपान के फलस्वरूप इनकी कार्यक्षमता घट जाती है, जिससे इनको स्वयं तो हानि होती ही है, देश और समाज को भी हानि होती है। इस मद्यपान की लत के कारण लाखों परिवार उजड़ जाते हैं। पति-पत्नी में कलह होती है और बच्चे अनाथ-से फिरते हैं। इसके अलावा ये शराबी लोग अनेक शारीरिक और मानसिक रोगों में फंस जाते हैं, जिनसे छुटकारा प्रायः मरने पर मिलता है।

शराब पीने वाले सभी व्यक्ति शराबी या पियक्कड़ नहीं बन जाते। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो कभी-कदास शराब पीते हैं और इच्छा होने पर उसे छोड़ भी देते हैं। परन्तु पहले से यह नहीं जाना जा सकता कि कौन आदमी पियक्कड़ बन जाएगा और कौन बचा रह सकेगा। पियक्कड़ बन जाना इतनी बुरी

स्थिति है कि उससे बचने के लिए शराब से दूर ही रहना भला है।

मद्यपान और चरित्र—मद्यपान मनुष्य के चरित्र को बुरी तरह बिगाड़ देता है। उसकी उदात्त भावनाएं नष्ट हो जाती हैं। प्रेम, सेवा और सहानुभूति उसमें शेष नहीं रहती। वह किसी महान् कार्य को करने की सोच भी नहीं सकता।

डाक्टर आॅब्रे लेविस ने लिखा है कि—

"पुराने पियक्कड़ों में पागलों का-सा नैतिक पतन दिखाई पड़ता है। उनकी दिलचस्पी बहुत थोड़ी-सी चीज़ों में रह जाती

परिवार उजड़ जाता है

है। उनके विचार उथले और स्मरण शक्ति कमज़ोर हो जाती है। हालांकि वे मुंह से अच्छाइयों के गुण गाते नहीं थकते, परन्तु उनका वर्ताव बहुत भद्दा और पशुओं का-सा होता है। वे एक क्षण में गुस्से से उबल पड़ते हैं और अगले ही क्षण रोना शुरू कर सकते हैं। ज़रा देर बाद वे हंसने लगते हैं। न तो उन्हें किसी बात की शर्म होती है और न इस बात का कोई ध्यान होता है कि वे अपने परिवार के लोगों को कितना कष्ट दे रहे हैं।

"परन्तु ज़रूरी नहीं कि सब पियक्कड़ों का नैतिक पतन इस सीमा तक हो ही जाए। कुछ पियक्कड़ ऐसे भी होते हैं कि उनके पुराने गुण बिल्कुल नष्ट नहीं हो जाते, अपितु केवल कुछ दब-से जाते हैं। ये दुर्बल और चिड़चिड़े, झूठे और भरोसे के अयोग्य तो होते हैं, किन्तु वे भारी गुस्सैल नहीं होते। उनकी सामाजिक भावना और विवेक भी बहुत कुछ बना रहता है। वे ईर्ष्यालु और शक्की होते हैं और अपनी पत्नियों का जीवन नरक बना देते हैं। इसका कारण यह होता है कि पुराने पियक्कड़ों की पुंस्त्व शक्ति बहुत कम हो जाती है और उनका पारिवारिक जीवन दुःखी हो जाता है। उनके घर वाले उनसे घृणा करने लगते हैं।"

दो उदाहरण—मुगलकालीन इतिहास में मद्यपान के एक दूसरे से ठीक उल्टे दो उदाहरण दिखाई पड़ते हैं। पहला उदाहरण बाबर का है। पानीपत की लड़ाई में इब्राहीम लोदी को हरा कर दिल्ली के राजसिंहासन पर अधिकार करने के बाद बाबर ने राणा संग्रामसिंह से युद्ध करने की ठानी, क्योंकि संग्रामसिंह को हराये बिना भारत पर उसका अधिकार पक्का नहीं हो सकता था। राणा संग्रामसिंह भी बाबर से लड़कर उसे हराने के लिए बेचैन था। फतहपुर सीकरी के पास खानवा नामक स्थान पर मुगलों और राजपूतों की सेनाओं में टक्कर हुई। मुख्य लड़ाई से तीन-चार दिन पहले राजपूतों ने बाबर की हरा वल

सेना की एक टुकड़ी को हरा दिया था। राजपूतों की सेना संख्या में अधिक थी। उसके हौसले बढ़े हुए थे। बाबर को अपने तोप-खाने पर बहुत भरोसा था, फिर भी उसे डर था कि कहीं वह हार न जाए। इसलिए युद्ध से पहले दिन शाम को घोषणा की कि वह खुदा को खुश करने के लिए मद्यपान को सदा के लिए छोड़ देगा। उसने शराब पीने के सोने-चांदी के बर्तन सबके सामने तुड़वा दिये और शराब के पीपे नालियों में उलटवा दिये। अगले दिन जो युद्ध हुआ, उसमें राजपूतों ने बड़ी वीरता दिखाई, परन्तु अन्त में विजय बाबर को ही मिली। वह सारे भारत का सम्राट् बन गया।

दूसरी ओर जब बाबर का प्रपौत्र जहांगीर भारत का सम्राट् बना तो उसके पिता अकबर ने उसके लिए विशाल और सुसंगठित राज्य छोड़ा था। परन्तु जहांगीर को मदिरा पीने का व्यसन था। जहांगीर के तीन भाई अत्यधिक मदिरा पीने के कारण जवानी में ही मर गए थे। यह जानते हुए भी जहांगीर शराब पीता था और खूब पीता था। नूरजहां से विवाह हो जाने के बाद तो उसने शासन का सारा भार नूरजहां और उसके भाई आसफुद्दौला पर छोड़ दिया था। वह कहा करता था कि मुझे तो केवल एक बोतल शराब और खाने को थोड़ा-सा मांस चाहिए। राजकाज नूरजहां मुझसे कहीं अधिक समझती है।

इसका परिणाम क्या हुआ ? राज्य में अव्यवस्था मच गई। यहां तक कि एक दिन सेनापति महावत खां ने जहांगीर और नूरजहां दोनों को कैद कर लिया। कई महीने वे दोनों उसकी कैद में रहे। महावत खां जहांगीर को हटाकर स्वयं बादशाह नहीं बनना चाहता था। चाहता होता तो बाबर का वंश जहांगीर पर ही समाप्त हो गया होता। जहांगीर यद्यपि महावत खां की कैद से छूटकर फिर स्वतंत्र बादशाह बन गया, फिर भी अपने पियक्कड़पन के कारण वह अकबर के-से गौरव को प्राप्त नहीं कर सका।

बाबर ने शराब त्याग दी और एक महत्त्वपूर्ण युद्ध में विजय प्राप्त करके भारत में मुगल साम्राज्य स्थापित किया। जहांगीर ने शराब के व्यसन में फंसकर एक बार तो अपना साम्राज्य ही गवां दिया और गौरव तो सदा के लिए ही खो दिया। इन दोनों ही उदाहरणों में सफलता या विफलता का एकमात्र कारण शराब ही नहीं थी; फिर भी महत्त्वपूर्ण और निर्णायक कारण अवश्य थी। यह कहना गलत न होगा कि उन्नति की ओर बढ़ने के इच्छुक व्यक्ति और राष्ट्र मद्य से दूर रहने का संकल्प करते हैं और मद्य का सेवन करने वाले व्यक्ति और राष्ट्र निरन्तर और निश्चित रूप से पतन की ओर बढ़ते जाते हैं।

१०

मदिरा सेवन से होने वाले रोग

मदिरा शरीर के लिए विष है। शरीर के जो भी अंग इसके सम्पर्क में आते हैं, उन पर इसका बुरा असर होता है। शराब के रूप में पिया हुआ अल्कोहल रक्त में पहुंचकर शरीर के सब अंगों में पहुंच जाता है। इसलिए शरीर का कोई अंग ऐसा नहीं, जिस पर मदिरा पीने का बुरा असर न पड़ता हो। आमाशय, अग्न्याशय (Pancreas), आंतें, यकृत्, मस्तिष्क, हृदय, वृक्क (गुर्दे), सभी को मदिरा से भारी हानि पहुंचती है।

आमाशय—पीने के बाद शराब सबसे पहले आमाशय में पहुंचती है। यह आमाशय में भारी उत्तेजना पैदा करती है। आमाशय में सूजन आ जाती है। इसी सूजन के कारण पीने से अगले दिन शराबी को पेट में बेचैनी और मितली अनुभव होती है। उसे भूख नहीं लगती। अफरा हो जाता है। बार-बार डकारें आती हैं। अजीब-सी बेकली होती है, जो शराब पीने से कुछ देर के लिए शान्त हो जाती है।

यदि फिर शराब न पी जाए, तो आमाशय की यह सूजन कुछ दिनों में ठीक हो जाती है। परन्तु बार-बार शराब पीने से वह सूजन स्थायी हो जाती है। पेट बिगड़ जाता है। आमाशय की झिल्ली में घाव (व्रण) भी हो जाते हैं। कभी-कभी इनसे खून निकलने लगता है। टट्टी में खून आता है; या खून की उल्टी होती है। बहुत बार इस तरह खून बहने से रोगी मर जाता है। कभी-कभी आमाशय की झिल्ली फट जाती है। रोगी को भीषण कष्ट होता है। यदि तुरन्त आपरेशन न किया जाये, तो रोगी अवश्य मर जाता है।

इसी प्रकार के घाव पक्वाशय (ड्यूडिनम) में भी हो सकते हैं। एक बार हो जाने के बाद ये घाव प्रायः ठीक नहीं होते।

लम्बे इलाज और संयम से कभी-कभी ठीक हो भी जाते हैं। परन्तु शराब पीना जारी रहे, तो इनका ठीक होना असंभव है। शराब पीने वालों में से अधिकतर लोगों को आमाशय या पक्वाशय के घाव हुए रहते हैं।

अपचन—पेट खराब होने से खाया हुआ भोजन पचता नहीं। भोजन न पचने से भूख नहीं लगती। "शराबी आदमी कुछ भी खाना नहीं चाहता। उसे प्यास लगती है। वह पीना चाहता है।" काफी भोजन न करने से शरीर को पोषण मिलना बन्द हो जाता है। प्रोटीन, विटामिन और शर्करा की कमी हो जाने से शरीर दुर्बल होने और सूखने लगता है। विटामिनों की कमी से अनेक रोग पैदा हो जाते हैं।

वायु बनना—शराब पीने से आमाशय की मांसपेशियां फैल कर शिथिल पड़ जाती हैं। इस कारण भोजन के बाद अन्न को आंतों में धकेलने के लिए जब उसे सिकुड़ना चाहिए, तब वह पूरी तरह सिकुड़ नहीं पाता। जब आमाशय को पूरी तरह खाली हो जाना चाहिए, तब भी वह खाली नहीं हो पाता। अधपचे अन्न का कुछ अंश उसमें बचा रह जाता है। उसके सड़ने से पेट में हवा बनती है। शराब के प्रभाव से आमाशय की तंत्रिकाएं (ज्ञानवाहिनियां) सुन्न हुई रहती हैं। इसलिए इस हवा को आंतों की ओर या गले की ओर निकलने का रास्ता नहीं मिलता। इससे अफारा हो जाता है।

कभी-कभी थोड़ी-सी शराब पीने से ज़रा देर के लिए अफारा ठीक भी हो जाता है। शराब के असर से आमाशय के दोनों द्वारों को बन्द रखने वाली मांसपेशियां ढीली पड़ जाती हैं और हवा बाहर निकल जाती है। पर उस शराब के कारण आमाशय में से श्लेष्मा (कफ़) निकलता है, जिससे और हवा पैदा होती है। इसलिए शराब से अफारा ज़रा देर के लिए शान्त होने के बाद पहले से भी अधिक प्रबल हो जाता है।

इस अफारे के कारण होने वाली बेचैनी को कुछ लोग

गलती से अपचन समझ लेते हैं। शराब पीने से यह कुछ देर के लिए शान्त हो जाती है, तो वे समझते हैं कि शराब से उनका हाजमा ठीक हो गया है। पर जल्दी ही यह भ्रम दूर हो जाता है, क्योंकि तकलीफ पहले से भी अधिक होकर फिर लौट आती है।

यकृत् अर्थात् जिगर—यकृत् शरीर का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। शरीर के अन्दर पहुंचे हुए अल्कोहल को निपटाने का काम मुख्य रूप से यकृत् को करना पड़ता है। शराब की एक बूंद भी यकृत् के लिए विष है। साधारण शराबी जितनी शराब पीते हैं, वह यकृत् को पूरी तरह बिगाड़ देने के लिए काफी होती है। शराब पीने और पोषक भोजन न खाने का फल यह होता है कि कुछ ही सप्ताह में यकृत् बढ़ जाता है। अधिकांश शराबियों का यकृत् बढा रहता है, या उसमें सूजन आई रहती है। प्रायः रोगी को अस्पताल की शरण लेनी पड़ती है। यदि इसके बाद भी शराब पीना बन्द न किया जाए, तो सिरोसिस (सूत्रण) नामक रोग हो जाता है। यकृत् काम करना बन्द कर देता है। इससे अनीरता (खुश्की—Aneroxia), जलोदर (Ascitis), जलशोथ (Dropsy), पीलिया (Jaundice), रक्तस्राव आदि हो जाते हैं। कभी-कभी यकृत् के रोग के कारण अतिमूर्च्छा (Coma) भी हो जाती है। अतिमूर्च्छा के अधिकांश रोगी मर जाते हैं।

शराबियों के यकृत् की बनावट ही बदल जाती है, जिससे यकृत् अपना काम ठीक तरह नहीं कर पाता। नियमपूर्वक थोड़ी मात्रा में शराब पीने वालों का यकृत् जल्दी और अधिक खराब होता है।

वृक्क अर्थात् गुर्दे—वृक्कों का काम खून को छानना, उसमें से विषैले तत्त्वों को अलग करना और उन्हें मूत्र के साथ बाहर निकाल देना है। शराब के कारण वृक्कों पर बहुत बुरा असर पड़ता है। वृक्कों में सूजन आ जाती है। उनमें उपयोगी सैल

(कोष्ठक) मर जाते हैं और वृक्क सिकुड़कर छोटे हो जाते हैं। वृक्कों का काम रुक जाने से खून में से विषैले पदार्थ निकल नहीं पाते, इस कारण गठिया, उदासी, सुस्ती, भूख न लगना आदि रोग होते हैं। मूत्र में ऐल्ब्यूमिन नामक एक पदार्थ आने लगता है, जो पोषण के लिए शरीर में ही रहना चाहिए। जब वृक्क काम करना कम कर देते हैं, तब ऐल्ब्यूमिन मूत्र में आने लगता है।

अन्त में, मूत्र कम आने लगता है और 'ब्राइट का रोग' हो जाता है। यह रोग प्रायः प्राण लेकर ही जाता है।

अग्न्याशय का शोथ—शराब पीने से जैसे यकृत् में सूजन आ जाती है, वैसे ही अग्न्याशय में भी सूजन आ जाती है। बहुत बार इसे आमाशय की सूजन ही समझ लिया जाता है, क्योंकि रोगी उसी हिस्से में दर्द की शिकायत करता है। उसे उल्टियां होती हैं और पेट की मांसपेशियां अकड़ जाती हैं। अग्न्याशय का शोथ भी बड़ी कष्टदायक और कठिनाई से ठीक होने वाली बीमारी है। यदि इसके कारण पीलिया भी हो जाए, तो आपरेशन करना ज़रूरी हो जाता है। कभी-कभी तो अत्यधिक मद्यपान के फलस्वरूप अग्न्याशय से खून बहना (Haemorrhagic neorosis) शुरू हो जाता है। इस विषय में सबसे कष्ट-दायक बात यह है कि अग्न्याशय का यह शोथ कुछ-कुछ समय बाद बार-बार हो जाता है। डाक्टरों का विचार है कि अल्कोहल आमाशय में अम्ल उत्पन्न करता है; यह अम्ल सिक्रीटीन (Secretin) उत्पन्न करता है और सिक्रीटीन अग्न्याशय को उत्तेजित करता है। उसी के कारण यह सूजन आती है।

रक्त संचार प्रणाली के रोग—रक्त संचार हमारे शरीर की महत्त्वपूर्ण क्रिया है। हृदय एक पम्प की तरह रक्त को नाड़ियों के रास्ते सारे शरीर में पहुंचाता है। यह रक्त शरीर के कण-कण को आवश्यक पोषण पहुंचाता है और वहां से अनावश्यक निर्जीव पदार्थों को लेकर शिराओं (veins) के रास्ते

वृक्कों में होता हुआ यकृत् में लौटता है। वृक्क रक्त में से विषैले पदार्थ छानकर अलग निकाल देते हैं। यकृत् में रक्त को नये पोषक तत्व मिलते हैं। उन्हें लेकर वह फिर हृदय में पहुंचता है। हृदय उसे फिर सारे शरीर में पहुंचाता है।

शराब पीने से न केवल हृदय की मांसपेशियों की लचक समाप्त हो जाती है, उनमें सूजन आ जाती है। नाड़ियां फैल जाती हैं। इस कारण हृदय को ज़ोर अधिक लगाना पड़ता है। वह फैलना शुरू हो जाता है। उस पर वसा (चर्बी) चढ़ने लगती है। वह अपना काम ठीक तरह नहीं कर पाता। रक्त संचार में गड़बड़ी होने से शरीर के सभी अंग गड़बड़ा जाते हैं। यकृत्, आमाशय और तिल्ली में खून जमा हो जाता है। जब हृदय पर काम का इतना बोझ पड़ जाता है कि वह उसे संभाल नहीं पाता, तब एकाएक मृत्यु हो जाती है।

हृदय की गति एकाएक रुक जाने का कारण बहुधा अल्कोहल होता है।

अल्कोहल के प्रयोग से नाड़ियों की दीवारें मोटी हो जाती हैं। इससे उनमें से रक्त शरीर के ऊतकों तक ठीक ढंग से पहुंच नहीं पाता। पोषण के न मिलने से ऊतक नष्ट होने लगते हैं।

असमय में बुढ़ापा—यकृत्, हृदय, वृक्क और आमाशय के बिगड़ जाने से शराबी समय से पहले ही बूढ़ा हो जाता है।

जब शराब छोड़ने की कोशिश की जाती है

जब तक शराबी शराब पीता रहता है, तब तक उसे उन कष्टों और रोगों को भुगतना पड़ता है, जो इससे पहले के अध्यायों में बताए जा चुके हैं। परन्तु यदि वह शराब को छोड़ने का निश्चय करता है और शराब पीना बन्द कर देता है, तो उसे नये प्रकार के कष्टों और रोगों का सामना करना पड़ता है। ये रोग भी कम कष्टदायक नहीं होते। इन्हें मदिरा-परित्याग के रोग कह सकते हैं। ये निम्नलिखित हैं :

मद्यपों का कम्पन—मदिरा परित्याग के समय सबसे अधिक प्रकट होने वाला रोग है मद्य-कम्पन। शरीर में झटके-से लगते हैं, साथ ही चिड़चिड़ापन और पेट की खराबी के लक्षण भी रहते हैं। कई दिन तक शराब पीने के बाद ये लक्षण प्रकट होते हैं। कोई आदमी दिन-रात लगातार तो शराब पीता नहीं रह सकता। रात को सोते हुए जो कुछ घंटे का समय बिना मदिरा-पान किए बीतता है, वही इन लक्षणों को उत्पन्न करने के लिए काफी होता है। सवेरे उठकर रोगी देखता है कि उसका शरीर कांपता है (Tremulousness); उसका जी मिचलाता है और उसे उल्टी होती है। उसे इतनी बेकली होती है कि उसे शान्त करने के लिए उसे कुछ शराब पीनी पड़ती है। मज़े की बात यह है कि शराब पीने से उसके ये कष्ट शान्त हो जाते हैं। पर अगले दिन सवेरे वे फिर दुगुने ज़ोर से प्रकट होते हैं। उन्हें शान्त करने के लिए फिर शराब पी जाती है। हर अगले दिन उनकी उग्रता बढ़ती ही जाती है। यह सिलसिला लगभग दो सप्ताह तक चलता है। उसके बाद शराब पीना बन्द कर देना पड़ता है। रोगी देखता है कि कम्पन और वमन तो होता

ही है; शराब पीने से केवल थोड़ी देर के लिए छुटकारा मिलता है। बहुत बार शराब पीते रहने के कारण कमज़ोरी वहुत ग्रा जाती है। उसे ग्रपने ऊपर ग्लानि होती है कि वह शराब का इतना दास बन गया है। वहुत बार जेब में पैसे ही नहीं वचते। इन कारणों से शराब पीना वन्द कर देना पड़ता है। परन्तु शराब पीना बिल्कुल बन्द करते ही रोग-लक्षण बहुत प्रवल हो जाते हैं ग्रौर शराब पीना बन्द करने के वाद २४ से लेकर ३६ घंटे तक की ग्रवधि में चरम सीमा पर रहते हैं।

इस ग्रवस्था में रोगी वात-वात पर चौंक उठता है। उसका चेहरा तमतमाया रहता है ग्रौर ग्रांखों में लाल डोरे दिखाई पड़ते हैं। दिल तेज़ी से धड़कता है। खुश्की (Anorexia), मितली ग्रौर उबकाई वनी रहती है। नींद नहीं ग्राती। वह सोना ग्रौर ग्राराम करना चाहता है। वह परेशानी में डूबा रहता है। उसका ध्यान उचटा रहता है। कुछ पूछो तो जवाव नहीं देता; ग्रौर जब देता है तो ग्रकड़ ग्रौर ऐंठ के साथ।

इस रोग का सवसे प्रधान लक्षण है कम्पन। कुछ रोगियों में यह कम्पन इतना कम होता है कि यदि वे शान्त बैठे हों, तो एकाएक नज़र में नहीं ग्राता। जब रोगी चलना-फिरना चाहता है या किसी कारण ग्रावेश में ग्रा जाता है, तब उसका शरीर स्पष्ट कांपता दिखाई पड़ता है। इसके विपरीत, कुछ रोगियों में यह कम्पन इतना ग्रधिक होता है कि वे दूसरे की सहायता के बिना न खड़े हो सकते हैं, न साफ-साफ वोल सकते हैं ग्रौर न भोजन का ग्रास ही ग्रपने मुंह में डाल सकते हैं। कई वार कंपन बाहर दिखाई नहीं पड़ता, किन्तु रोगी कहता है कि उसका शरीर भीतर ही भीतर कांप रहा है।

मुंह की तमतमाहट, खुश्की, दिल का तेज़ी से धड़कना ग्रौर कम्पन कुछ ही दिन में काफी घट जाते हैं, परन्तु रोगी को पूरी तरह शान्त होने में बहुत समय लगता है। लगभग दो सप्ताह बाद यह स्थिति ग्रा पाती है कि रोगी नींद की दवाई लिए बिना सो

सकता है। इसलिए अच्छा यह है कि शराब पीना छोड़ने के इच्छुक रोगी को कम से कम १४ दिन तक अस्पताल में रखा जाए। कारण यह है कि यदि उसे जल्दी ही अस्पताल से छुट्टी दे दी जाएगी, तो अधिक संभव यह है कि वह अपनी बेकली को शान्त करने के लिए फिर शराब पीना शुरू कर देगा।

मद्यपों का मतिभ्रम—जिन रोगियों को शराब के कारण कम्पन होता है, उनमें से एक चौथाई को मतिभ्रम की शिकायत होती है। वह कहता है कि उसे बुरे सपने आते हैं—नींद में नहीं, जागते हुए। वह इन्हें भूत-प्रेत भी समझ सकता है। उसकी अनुभव शक्ति विकृत हो जाती है। उसे वे चीज़ें दिखाई पड़ती हैं, जो होती नहीं। उसे अजीब आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं, जो अन्य पास बैठे लोगों को सुनाई नहीं पड़तीं। वे आकृतियां और आवाज़ें उसे बिल्कुल असली प्रतीत होती हैं। उनसे उसे डर लगता है। कभी-कभी वह वास्तविक आकृतियों और आवाज़ों को कुछ का कुछ समझ लेता है।

मद्यपों को आवाज़ का मतिभ्रम विशेष रूप से होता है। उसे आदमियों की, मोटरों और रेलगाड़ियों के चलने और कुत्ते के भोंकने की मिथ्या आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं। प्रायः ये आवाज़ें उसे डराती, धमकाती और डांटती प्रतीत होती हैं। इन्हें वह वास्तविक समझता है और इनसे बहुत परेशान रहता है। ये आवाज़ें किवाड़ों के पीछे से, दरवाज़े के बाहर सड़क पर से और कभी-कभी दीवार में से आती प्रतीत होती हैं।

शराबी को ये मिथ्या आकृतियां और आवाज़ें इतनी असली जान पड़ती हैं कि वह उनसे बचने के लिए पुलिस को बुलाता है, या बचाव के लिए मेज़ या कुर्सी की आड़ लेता है; अदृश्य लोगों को धमकाता और कभी-कभी उन पर आक्रमण भी करता है। कभी-कभी वह अपने आक्रमणकारियों से बचने के लिए आत्महत्या का भी प्रयत्न करता है। यह बड़ी ही कष्टदायक दशा है। इस प्रकार के मतिभ्रम तो कई दिन तक और कभी-

कभी तो कई महीनों तक होते रहते हैं।

मद्यपों का अपस्मार (मिरगी)—मद्यपान का मिरगी से घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिन लोगों में मिरगी की थोड़ी भी प्रवृत्ति होती है, उन पर मद्यपान का असर अधिक और बुरा होता है। शराब पीने से उनकी मिरगी भड़क उठती है और उन्हें दौरे पड़ने लगते हैं।

बहुत-से लोग ऐसे हैं, जिन्हें मिरगी नहीं होती, परन्तु कुछ समय तक शराब पीते रहने के बाद उन्हें मिरगी के दौरे पड़ने लगते हैं। मिरगी के दौरे में रोगी एकाएक बेहोश होकर गिर पड़ता है, उसके दांत कसकर बन्द हो जाते हैं।

मिरगी के दौरे भी उसी समय अधिक पड़ते हैं, जब कोई पियक्कड़ शराब पीना बन्द करता है। शराब पीना बन्द करने के पहले ४८ घण्टों में इस प्रकार के दौरे पड़ते हैं।

मद्यपों का उन्माद (Delirium Tremens)—मिरगी में रोगी बेहोश पड़ा रहता है, किन्तु उन्माद में वह अर्ध अचेत दशा में कुछ का कुछ बोलता रहता है। कभी वह अत्यधिक चिन्तित और भयभीत हो जाता है, और कभी प्रसन्न जान पड़ता है। उसे मिथ्या आकृतियां दिखाई पड़ती हैं। उसे लगता है कि उसके शरीर पर कुछ रेंग रहा है। उसे बेहद बेचैनी होती है। नींद बिल्कुल नहीं आती। वह पूरी तरह बेहोश नहीं होता : यों वह अपने आस-पास की चीज़ों पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता। कभी उसका ध्यान मिथ्या आकृतियों पर रहता है और कभी अपने आस-पास की असली चीज़ों पर। बीच-बीच में ज़रा देर के लिए वह पूछी या कही गई बात को समझ भी लेता है। उन्माद के रोगियों में से लगभग १४ प्रतिशत मर ही जाते हैं।

सच तो यह है कि शराब से होने वाले रोगों की कोई सीमा नहीं है। शराब शरीर के प्रधान अंगों आमाशय, यकृत्, हृदय, मस्तिष्क और वृक्कों को रुग्ण कर देती है। ऐसी दशा में शरीर में कोई रोग ऐसा नहीं, जो उत्पन्न न हो सकता हो।

मदिरा के दुष्परिणाम

मदिरा के बुरे परिणामों को हम पांच भागों में बांट सकते हैं : (१) शारीरिक (२) मानसिक (३) पारिवारिक (४) सामाजिक और (५) आर्थिक।

शारीरिक परिणाम—इनका वर्णन मदिरा सेवन से होने वाले रोगों के अध्याय में विस्तार से किया गया है। पियक्कड़ की शक्ल ही बदल जाती है। शुरू में जो चेहरा लाल रहता है, वही बाद में काला पड़ जाता है। चाल-ढाल को देखकर ही पता चल जाता है कि यह व्यक्ति पियक्कड़ है। त्वचा रूखी और खुरदरी हो जाती है। जिगर और तिल्ली के रोगों के कारण जलोदर और जलशोथ रोग हो जाते हैं। सारे शरीर पर सूजन आ जाती है। पोषण और विटामिनों की कमी से भी कई रोग हो जाते हैं। कुछ ही वर्षों में अच्छा, व्यायाम करने वाला पहलवान भी हड्डियों का ढांचा भर रह जाता है।

सन्तान पर बुरा असर—शराबी मां-बाप की सन्तान पर शराब का और भी बुरा असर पड़ता है। बच्चे जन्म से ही कमजोर होते हैं और प्रायः मिरगी और पागलपन के शिकार हो जाते हैं।

मानसिक परिणाम—मदिरा शरीर को तो नष्ट कर ही देती है, मन पर उसका असर और भी बुरा होता है। कारण यह है कि अल्कोहल के प्रभाव के कारण मस्तिष्क का विह्रास होने लगता है अर्थात् मस्तिष्क के कुछ भाग नष्ट होने लगते हैं। पियक्कड़ की बुद्धि तीव्र नहीं रहती। उसकी प्रतिभा और सूझ-बूझ समाप्त हो जाती है। उसकी उच्च भावनाएं नष्ट हो जाती हैं। वह भरोसे के योग्य नहीं रहता। बहुत से पियक्कड़ तो बिलकुल पागल हो जाते हैं। पागलखानों में अधिकांश लोग मदिरा के सेवन के फलस्वरूप ही वहां पहुंचे होते हैं।

पारिवारिक परिणाम—मदिरा व्यक्ति के जीवन को तो नष्ट कर ही देती है, पारिवारिक जीवन को भी उजाड़ देती है।

काम सुख जीवन का एक बड़ा सुख है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में उसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। मनुष्य को धर्म का आचरण करने, धन कमाने, विवाह करके स्त्री सुख प्राप्त करने और परलोक में मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए, ऐसा हमारे शास्त्रों का कथन है। जिस घर में पति-पत्नी एक दूसरे से सन्तुष्ट और प्रसन्न रहते हैं, वह स्वर्ग है। महाभारत में सबसे बड़े सुखों को गिनाते हुए उनमें एक बताया गया है—युगपत् पातश्च मैथुने; अर्थात् एक सबसे बड़ा सुख यह है कि स्त्री और पुरुष के सम्भोग करते समय उनके रज और वीर्य का स्खलन एक ही समय में हो। यदि पुरुष का वीर्य पहले ही स्खलित हो जाए, और स्त्री का रज स्खलित न हो, तो स्त्री को आनन्द की अनुभूति नहीं होगी। उसे अतृप्ति और बेचैनी बनी रहेगी। यदि ऐसा बार-बार होगा, तो स्त्री पुरुष को दुर्बल समझकर उससे घृणा करने लगेगी। उससे पति-पत्नी में कलह होगी और घर स्वर्ग के बजाय नरक बन जाएगा।

कामशक्ति में कमी—मदिरा का ज्ञानवाहिनियों पर अवसादकारी प्रभाव होता है। उसी के कारण पुरुष की कामशक्ति क्षीण हो जाती है। ज्ञानवाहिनियां ही पुरुष की जननेन्द्रिय में दृढ़ता लाती हैं और उस दृढ़ता को उचित समय तक बनाए रखती हैं। परन्तु मदिरा ज्ञानवाहिनियों को शिथिल कर देती है। इस कारण पुरुष की जननेन्द्रिय में यथेष्ट दृढ़ता नहीं आ पाती और वीर्य का स्खलन शीघ्र ही हो जाता है। इससे पुरुष न तो स्वयं मैथुन का आनन्द ले पाता है और न स्त्री को ही तृप्त कर पाता है। यह मदिरा का सबसे बड़ा अभिशाप है।

कामवासना अधिक—इससे भी बुरी बात यह है कि मदिरा काम की इच्छा को भड़का देती है। पुरुष मैथुन का सुख प्राप्त करने के लिए अधीर हो जाता है; परन्तु वही मदिरा उसकी
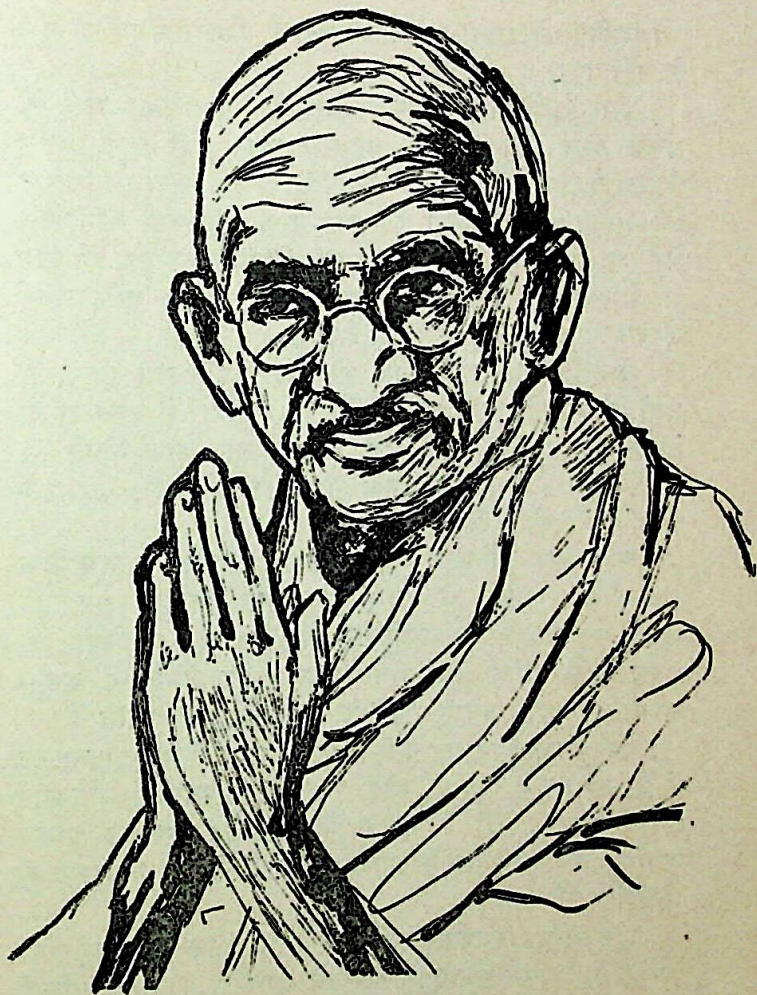
शराब की बिक्री से प्राप्त धन कलंकित है।

कामशक्ति को इतना दुर्बल कर देती है कि वह मैथुन का सुख ले नहीं पाता।

इसकी प्रतिक्रिया भयानक होती है। पुरुष समझता है कि उसकी पत्नी निकम्मी है; वह उसे प्यार नहीं करती। इस कारण वह मार-पीट पर भी उतर आता है। पत्नी समझती है कि उसका पति निकम्मा है। वह उसका तिरस्कार करती है। देर तक अतृप्त रहने पर कोई स्त्री किसी अन्य पुरुष की ओर भी आकृष्ट हो सकती है। इस प्रकार मदिरा पारिवारिक जीवन को पूरी तरह नष्ट कर देती है।

बच्चों की दुर्दशा—इससे भी बुरी स्थिति वहां होती है, जहां पति-पत्नी, दोनों शराब पीते हैं। ऐसे घरों में बच्चे या तो देर तक जीते नहीं और जीते हैं, तो बहुत कष्ट भोगते हैं। माता-पिता का व्यवहार उनके प्रति कठोर होता है। बहुधा वे मानसिक रोगों के शिकार होते हैं।

सामाजिक परिणाम—एक मित्र ने बताया : "सामाजिक सम्पर्क बनाए रखने के लिए मदिरा पी लेता हूं। सब बड़ी जगहों पर मद्यपान के आयोजन होते हैं। वहां न पियो, तो नक्कू बनना पड़ता है।" मतलब यह है कि समाज में अपना सम्मानित स्थान बनाए रखने के लिए लोग शराब पीते हैं।

परन्तु एक बार यह बात प्रकट हो जाए कि आप पियक्कड़ हैं, तो समाज में आपका कोई स्थान नहीं रहता। यदि आप शराब पीते हैं, तो देर-सबेर में पियक्कड़ आप बन अवश्य जाएंगे। तब लोग आपसे कतराने लगेंगे। केवल पियक्कड़ ही आपके साथी होंगे।

शराबी या पियक्कड़ समाज के लिए अनेक समस्याएं खड़ी करता है। अपने संयमहीन निर्लज्ज आचरण से वह पड़ौसियों और मुहल्ले वालों के लिए मुसीबत बन जाता है। वह गन्दी गालियां बकता है। लोगों से उलझता है। शराब पीकर गाड़ी चलाता है, तो दुर्घटनाएं होती हैं।

शराब का अपराधों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। चोरी, डकैती, हत्या, ठगी आदि अपराधों के लिए शराब पीकर अपने आपको तैयार किया जाता है। स्वस्थ मनुष्य में अन्तरात्मा होती है जो उसे अपराध करने से रोकती है। या कह सकते हैं कि उसमें विवेक-बुद्धि होती है, जो परिणामों का विचार करके उसे अपराध नहीं करने देती। शराब इस अन्तरात्मा या विवेक-बुद्धि को दबा देती है। आदमी निडर होकर बुरे से बुरा अपराध करता है।

आर्थिक परिणाम—जब तक मनुष्य के पास धन रहता है, तब तक उसके दोष छिपे रहते हैं। धनी पियक्कड़ को आदर मिलता रह सकता है। वह मंत्री या बड़ा अफसर बना रह सकता है। परन्तु शराब धन को तेजी से उड़ाती है। जब धन नहीं रहता, तब पियक्कड़ की दशा उस झोंपड़े जैसी हो जाती है, जिसका छप्पर जल गया है।

शराबी आदमी पर कोई विश्वास नहीं करता; भरोसा नहीं कर सकता। कोई उसे उधार नहीं देना चाहता। कोई उससे लेन-देन नहीं करना चाहता। यहां तक कि शराबी भी शराबी से लेन-देन करने से कतराता है।

जब तक पैसा रहता है, तब तक महंगी से महंगी शराबें पी और पिलाई जाती हैं। पर जब पैसा समाप्त हो जाता है, तब घटिया शराबों की बारी आती है। पर वह भी नहीं मिल पाती। अपनी लत पूरी करने के लिए शराबी अपनी सम्पत्ति बेचता है; उधार लेता है; ठगी करता है; चोरी करता है; मौका लगे तो गबन करता है।

इस सबसे भी देर तक काम नहीं चलता। मदिरा के धधकते हवनकुंड में सब स्वाहा हो जाता है। शराबी पैसा हाथ में आते ही शराब की ओर दौड़ता है। पत्नी और बच्चे भूखे हों; बीमार हों, उनके भोजन और दवाई का ध्यान उसे नहीं आता। उनके कपड़ों तथा घर की अन्य जरूरतों को वह पूरा नहीं करता

चाहता।

पारिवारिक कलह और धन की चिन्ता उसे बेचैन करती हैं। उसे अपना जीवन नरक लगता है। अपने कष्टों को भुलाने के लिए वह और शराब पीना चाहता है। पर शराब मिलती ही नहीं।

मदिरा का आर्थिक पहलू

शराब महंगी चीज़ है—मदिरा चाहे कितना ही हानिकारक विष क्यों न हो, फिर भी वह मुफ्त नहीं मिलती। वह पैसे देकर खरीदनी पड़ती है। 'अच्छी शराब' नाम की कोई चीज़ नहीं होती। फिर भी दो भेद किये जा सकते हैं: (१) कम हानिकारक और (२) अधिक हानिकारक। शुद्ध शराबें, जिनमें अन्य मादक पदार्थों का मिश्रण न हो, कम हानि पहुंचाती हैं और अधिक महंगी होती हैं। जिन शराबों में इथाइल अल्कोहल के अलावा अन्य नशीले पदार्थ मिले रहते हैं, वे तेज़ होती हैं, उनका नशा अधिक होता है; वे शरीर को अधिक हानि पहुंचाती हैं, किन्तु वे सस्तीं होती हैं।

सरकारी कर—उत्पादन की लागत की दृष्टि से मदिरा या शराब महंगी चीज़ नहीं हैं। अनाज, गुड़, ताड़ या खजूर के रस को, और अंगूरों को सड़ाकर शराब तैयार की जाती है। वह भी बहुत महंगी नहीं होनी चाहिए। परन्तु चीनी मिलों में जो बड़ी मात्रा में शीरा बच जाता है, उसे सड़ाकर भी शुद्ध अल्कोहल तैयार किया जाता है। इस महंगाई के समय में भी उसकी लागत कीमत पचास पैसे प्रति बोतल से अधिक न होगी। परन्तु बहुत-सी मिलावट करने के बाद भी सस्ती से सस्ती शराब की बोतल भी पांच-छह रुपये से कम में नहीं मिलती। महंगी शराबों के दाम का तो पूछना ही क्या!

शराब के महंगा होने का कारण क्या है? सबसे पहला कारण है सरकार द्वारा लगाया गया उत्पादन शुल्क। सरकारें जानती हैं कि जिन लोगों को शराब की लत पड़ गई है, वे शराब पिएंगे ही। उनकी इस लत से फायदा उठाकर उनसे पैसा ऐंठा जा सकता है। इसलिए कानून बना दिया गया है कि हर कोई

व्यक्ति शराब नहीं बना सकता—अपने पीने के लिए भी नहीं। शराब बनाने का अधिकार कुछ खास कारखानों को ही दिया जाता है। इन कारखानों में बनने वाली शराब पर सरकार उत्पादन-शुल्क वसूल करती है। यह उत्पादन शुल्क शराब की लागत कीमत से भी कई गुना होता है। मान लीजिए कि शराब की एक बोतल की लागत कीमत ५० पैसे है, तो उस पर १५० पैसे उत्पादन शुल्क लगेगा। इस शुल्क को सरकार कारखाने से वसूल कर लेगी। अब उस बोतल की लागत कीमत ही २ रुपये हो जाएगी।

शराब बनाने वालों का मुनाफा—क्योंकि शराब बनाने का अधिकार हर किसीको नहीं है, इसलिए शराब बनाने वाले लोग भारी मुनाफा कमाते हैं। इस मुनाफे के लिए शराब की कीमत अधिक रखी जाती है।

शराब के ठेके—शराब बनाने के अलावा शराब बेचने के लिए भी लाइसेंस लेना पड़ता है। शराब बेचने के ठेके नीलाम किए जाते हैं। जो ठेकेदार सरकार को अधिक से अधिक धनराशि देने को तैयार होता है, उसे शराब बेचने का ठेका दिया जाता है। ठेकेदार उस धनराशि को शराब की कीमत बढ़ाकर ग्राहकों से वसूल करता है।

मादक पदार्थों के व्यसनी व्यक्तियों की आय भी अन्य लोगों की भांति नपी-तुली ही होती है। मादक पदार्थों पर किया जाने वाला खर्च भोजन जैसी ज़रूरी चीज़ों में कटौती करके ही किया जाता है। इससे शराब पीने वाले व्यक्ति के अपने और उसके परिवार के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। पोषण की कमी से तरह-तरह के रोग उन्हें घेर लेते हैं।

मद्य-निषेध से धन की बचत—टाटा समाजविज्ञान संस्था द्वारा की गई जांच से पता चला है कि यदि आदमी शराब पीना बन्द कर दे, तो वह धन की अधिक बचत कर सकता है। मद्य-निषेध से अपराध कम होते हैं और मृत्युएं भी कम होती

हैं। लोगों की खरीदने की शक्ति बढ़ जाती है। मद्य-निषेध से बचे धन का उपयोग लाभदायक कार्यों में किया जा सकता है। भारत सरकार की मद्य-निषेध जांच समिति का अनुमान था कि देश में पूरी तरह मद्य-निषेध लागू कर देने पर प्रतिवर्ष १४० करोड़ रुपयों की बचत होगी, जिसमें से ३४ करोड़ रुपये उद्योग-व्यवसायों में लगाए जा सकेंगे। इस प्रकार शराब के व्यसनी लोगों की दशा तो सुधर ही जाएगी, सरकार को उद्योगों से होने वाली आय भी बढ़ जाएगी। मद्य-निषेध के लाभ बम्बई तथा मद्रास राज्यों में भलीभांति दिखाई भी पड़ने लगे थे।

कर का बड़ा बोझ गरीबों पर—मादक पदार्थों के निर्माण पर लगने वाले उत्पादन-शुल्क का बोझ मुख्य रूप से गरीब लोगों पर पड़ता है। मद्य-निषेध जांच समिति की रिपोर्ट में लिखा है कि सन् १९४५-४६ में मद्रास राज्य में मादक पदार्थों पर प्रति व्यक्ति के हिसाब से हुआ व्यय १०८ रुपये था, जबकि उस वर्ष उस राज्य में प्रति व्यक्ति आय २६५ रुपये थी। इसका अर्थ यह है कि कुल २६५ रुपये की आय में से १०८ रुपये तो शराब आदि पर उड़ा दिये जाते थे और बाकी १५७ रुपये में बाकी खर्च—भोजन, कपड़ा, मकान-भाड़ा, तेल, साबुन, दवाई, शिक्षा आदि—पूरे किए जाते थे।

भारत जैसे गरीब देश में, जहां ५० प्रतिशत लोगों को दोनों समय भरपेट भोजन नहीं मिलता, एक साल में १३०० करोड़ रुपये की शराब पी जाती है।

१४

मदिरा के पक्ष में भारी प्रचार

आप कहेंगे : "मदिरा इतनी भयानक और खतरनाक चीज़ नहीं हो सकती। सारी दुनिया बेवकूफ नहीं है। ये लाखों-करोड़ों लोग शराब क्यों पीते हैं?" इसका कारण है मदिरा के पक्ष में किया जाने वाला भारी प्रचार।

मदिरा बनाना पुराने समय से ही एक बड़ा व्यवसाय रहा है। इसे सदा बुरा व्यवसाय माना जाता रहा है। संसार के सभी देशों में मदिरा बनाने के बड़े-बड़े कारखाने हैं, जिसमें करोड़ों-अरबों रुपये की पूंजी लगी हुई है। मदिरा बेचने के लिए उसके निर्माताओं को बहुत विज्ञापन करना पड़ता है। इस धन्धे में आय इतनी अधिक है कि मदिरा बनाने वाली कम्पनियां महंगे से महंगा विज्ञापन कर सकती हैं। यूरोप और अमेरिका की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में शराब का विज्ञापन खूब रहता है। शराब व्यवसाय की ओर से रोचक टेलीविज़न कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। अमेरिका में जितने साइनबोर्ड लगे हैं, उनमें से ४० प्रतिशत शराब के हैं। सिनेमा की फिल्मों में शराब का आकर्षक प्रदर्शन रहता है।

भारत में उर्दू कवियों और सिनेमा ने मदिरा के पक्ष में बहुत अधिक प्रचार किया है। उर्दू कविता तो शराब की प्रशंसा से भरी हुई है। यह प्रशंसा इतनी बेतुकी है कि बहुत बार उर्दू कविता के पक्षपोषकों को यह कहना पड़ता है कि "यह शराब बोतल वाली शराब नहीं, अपितु आध्यात्मिक शराब है, जो हमें इस संसार के कष्टों के भूलने में समर्थ बनाती है।" उर्दू मुशायरों ने शराब को बहुत बढ़ावा दिया है।

इश्क और शराब का सम्बन्ध उर्दू कविता ने इतना पक्का कर दिया है कि हर असफल प्रेमी शराब का प्याला हाथ में लिए

बैठा है। यह उर्दू कविता की कमी है कि उसमें जीवन के स्वाभाविक पक्ष, नर-नारी के सफल प्रेम अर्थात् प्रेम के संयोग पक्ष को उचित स्थान नहीं मिला। अन्यथा उसमें शराब की इतनी प्रशंसा न होती।

पुरानी हिन्दी कविता में मद्य की ऐसी प्रशंसा नहीं है, किन्तु सन् १९३० के बाद उर्दू की देखादेखी हिन्दी कविता में 'हाला' की प्रशंसा शुरू हुई।

कवियों ने जो मद्य की प्रशंसा की, वह स्वेच्छा से की। वे जीवन की दशाओं से असन्तुष्ट थे और मदिरा के नशे में उन्हें भूल जाना चाहते थे। परन्तु सिनेमा की फिल्मों में जो मदिरा का प्रचार किया गया, वह इतना निर्दोष नहीं था। उसके पीछे मद्य व्यवसायपतियों का स्वार्थ था। उन्होंने फिल्में बनवाईं। अनगिनत फिल्मों में शराब को ऐसे आकर्षक रूप में पेश किया गया, जिससे लोगों को शराब पीने की प्रेरणा मिले। यद्यपि फिल्मों के अवांछनीय अंशों की काट-छांट करने का काम सेंसर वोर्ड का है, फिर भी इस प्रकार के अंशों को कभी काटा नहीं गया।

फिल्मों में शराब की प्रशंसा के गीत गाए गए। वे ही गीत श्रोताओं की मांग पर आकाशवाणी से अनगिनत बार सुनाए गए। इस प्रकार रेडियो ने भी जाने-अनजाने शराब के पक्ष में प्रचार करने में सहयोग दिया।

शराब के पक्ष में प्रकट रूप से तो प्रचार किया ही जाता है, किन्तु अधिक और खतरनाक प्रचार अप्रकट रूप से किया जाता है। यह प्रचार डाक्टरों और वैज्ञानिकों के नाम पर किया जाता है।

शराब-व्यवसायी जिन बातों का प्रचार करते हैं, वे ये हैं :

(१) शराब खाने-पीने की अन्य चीज़ों की तरह ही एक भोज्य पदार्थ है। जैसे अन्य वस्तुएं खाई-पी जाती हैं, वैसे ही शराब का सेवन होना चाहिए। जिन दुकानों पर अन्य सामग्रियां बिकती हैं, वहां शराब भी बिकनी चाहिए।

(२) शराब में कोई बुराई नहीं है। कुछ आदमी ही ऐसे होते हैं, जो शराब को सहन नहीं कर सकते। उन पर शराब का कुछ बुरा असर हो जाता है। अतः उन लोगों का इलाज होना चाहिए।

(३) पियक्कड़पन एक रोग है। यह कोई सामाजिक अपराध नहीं है। अतः पियक्कड़ों को जेल न भेजकर अस्पताल भेजना चाहिए। पियक्कड़ों के इलाज के लिए विशेष अस्पताल खोले जाने चाहिए।

(४) हर आदमी अपना भला-बुरा भली भांति खुद समझता है। अतः कानून द्वारा मद्य-निषेध नहीं होना चाहिए।

(५) हमारा उद्देश्य मद्य-निषेध नहीं, शराब का सीमित प्रयोग होना चाहिए। मद्य-निषेध से तो व्यक्ति की स्वतंत्रता छिन जाती है; तस्करी, रिश्वत-खोरी आदि अपराध बढ़ते हैं। इसलिए सब लोगों को मदिरा के संयमपूर्ण सेवन के लिए आन्दोलन करना चाहिए, मद्य-निषेध के लिए नहीं।

(६) अब तक पुस्तकों में शराब की निन्दा की जाती रही है। अब ये पुस्तकें 'नये वैज्ञानिक दृष्टिकोण' से लिखी जानी चाहिए।

अब हमें देखना है कि इस प्रचार में सचाई कितनी है!

क्या शराब खाद्य पदार्थ है ?—कहा जाता है कि अल्कोहल शरीर में तुरन्त पच जाता है और उससे उसी तरह ऊर्जा उत्पन्न होती है, जैसे फल, दूध या रोटी खाने से होती है। अतः अल्कोहल भी खाद्य पदार्थ है।

परन्तु किसी चीज़ के खाद्य पदार्थ होने के लिए इतना ही काफी नहीं है कि उससे उर्जा उत्पन्न होती हो। उसके लिए कुछ और भी शर्तें हैं। खाद्य पदार्थ वह है, जो चार प्रकार से शराब का पोषण करता हो; (क) वह शरीर में जलकर ऊर्जा उत्पन्न करें; (ख) वह शरीर के ऊतकों (टिशू) को बनाने और पोषण देने के लिए सामग्री प्रदान करे; (ग) वह उन साधनों

को जुटाये, जिनसे शरीर की क्रियाओं का नियंत्रण होता है, और (घ) वह ऐसी सामग्री प्रदान करे, जो ग्लाइकोजन, प्रोटीन या वसा के रूप में शरीर की सामान्य बनावट में जमा रह सके और काफी मात्रा में खाने पर भी विषैला न हो।

अल्कोहल इनमें से केवल पहली शर्त को पूरा करता है; बाकी तीन को नहीं। शरीर में एक ग्राम अल्कोहल के जलने से ७ कैलोरी गर्मी या ऊर्जा पैदा होती है। मनुष्य के शरीर में २४ घंटे में ३०० ग्राम से अधिक अल्कोहल किसी तरह जल नहीं सकता। इसका अर्थ यह है कि अल्कोहल से २४ घंटों में आदमी के शरीर में अधिक से अधिक २१०० कैलोरी ऊर्जा उत्पन्न हो सकती है। शारीरिक मेहनत करने वाले मनुष्य का काम इतनी ऊर्जा से नहीं चल सकता।

फिर, शराब में शरीर के ऊतकों (टिशू) को बनाने वाली कोई सामग्री नहीं है। इसमें शरीर की क्रियाओं का नियंत्रण करने वाले विटामिन नहीं हैं। ऐमिनो एसिड, वसा अम्ल (Fatty acid) और खनिज तत्व अल्कोहल में नहीं होते। इसलिए यह खाद्य पदार्थ की दृष्टि से अपूर्ण है। जितनी शराब पीने से सामान्य काम-काज के लायक ऊर्जा उत्पन्न हो सकती है, उतनी पीने पर वह शरीर और मन पर भयंकर विषैला असर करती है।

अल्कोहल शरीर का अंग कभी नहीं बनता। यह शरीर में पचता ही नहीं। यह शरीर के जिस अंग में पहुंचता है, उसीको हानि पहुंचाता है। और शराब के व्यवसायी शराब की गणना खाद्य पदार्थों में करवाना चाहते हैं!

बुराई शराब में नहीं, पीने वाले में है?—यह एक और धोखे-भरा प्रचार है। यह ऐसा ही है, जैसे कोई कहे कि बुराई संखिया और पोटाशियम साइनाइड में नहीं, अपितु उसे खाने वाले में है। यदि कोई आदमी विष बेचता और उसका प्रचार करता है, तो वह अपराधी माना जाता है। यह ठीक है कि विष

को खाने वाला तो दोषी है ही; उसका दंड भी उसे तुरन्त मिल जाता है। परन्तु विष खिलाने वाला, विष खाने के लिए फुसलाने वाला भीं कम दोषी नहीं है। इस दृष्टि से शराब वेचने वाले, शराब का विज्ञापन और प्रचार करने वाले लोग भयानक अपराधीं हैं। वे करोड़ों लोगों को विष दे रहे हैं। पीने वालों का इलाज करने के बजाय शराब को वन्द करना ही सही उपाय है।

पियक्कड़पन रोग है या अपराध ?—पियक्कड़पन रोग भी है; परन्तु यह अपराध पहले है। शराब पीने की आदत पड़ जाने पर आदमी पियक्कड़ बन जाता है। उसकी दशा रोगी की-सी हो जाती है। परन्तु इसके लिए वह सहानुभूति का नहीं, दंड का पात्र है। वह जानते-बूझते अपना स्वास्थ्य नष्ट करता है; अपने परिवार को दु:खी करता है और समाज के लिए मुसीबत बनता है। उसे अस्पताल में नहीं, जेल में भेजना ही उचित है। पियक्कड़ों को अस्पताल भेजना तो मद्यपान को बढ़ावा देना है।

पियक्कड़ों को जेल में रखने पर या अस्पताल में उनका इलाज करने पर जो खर्च हो, वह शराब व्यवसायियों से वसूल किया जाना चाहिए। यदि शराब के नशे में कोई आदमी कोई दुर्घटना करे, या अपराध करे, तो उसके लिए उस शराव विक्रेता को भी दंड दिया जाना चाहिए, जिसने उसे शराव बेची है।

मद्य-निषेध कानून द्वारा होना चाहिए—इस विषय में एक अलग अध्याय में विस्तार से विचार किया गया है।

मद्य-निषेध या शराब का सीमित प्रयोग—शराब के सीमित प्रयोग का नारा लगाकर शराब बनाने और वेचने वाले भले भी बन जाना चाहते हैं और शराब की बिक्री से करोड़ों रुपये भी कमाते रहना चाहते हैं। शराब की कोई भी मात्रा ऐसी नहीं है, जो शरीर को हानि न पहुंचाती हो। फिर, शराब की एक

विशेषता यह है कि आदमी उसे पीता ही तब है, जब उसका अपने ऊपर संयम नहीं रहता। जब आदमी शराब पीना शुरू करता है, तब उसका रहा-सहा संयम भी समाप्त होने लगता है। ज्यों-ज्यों वह शराब पीता जाता है, त्यों-त्यों वह अधिक और अधिक वेकाबू होता जाता है। उसके लिए रुकना कठिन होता है और वह खूब शराब पी लेता है। यह अधिकांश शराब पीने वालों का अनुभव है। शराब के सीमित प्रयोग को मान लेने का अर्थ है शराब को खुली छूट दे देना, क्योंकि सीमित प्रयोग कभी हो ही नहीं सकेगा।

'नया वैज्ञानिक दृष्टिकोण'—वैज्ञानिकों ने लगभग सर्व-सम्मति से अल्कोहल को भयंकर विष स्वीकार किया है। परन्तु शराब-व्यवसायी कभी-कदास किसी वैज्ञानिक से ऐसा कोई वक्तव्य दिलवा लेते हैं, जिससे ऐसा भ्रम पैदा हो जाए कि शराब उतनी हानिकारक नहीं है, जितनी समझी जाती है। इसलिए वे चाहते हैं कि पाठ्य-पुस्तकों में से शराब की निन्दा के अंश निकाल दिए जाएं। लोगों के मन में शराब के विरुद्ध जो घृणा बढ़ती जा रही है, वह कम हो जाए। इसीको वे 'नया वैज्ञानिक दृष्टिकोण' कहते हैं। परन्तु सचाई यह है कि शराब उससे कहीं अधिक हानिकारक है, जितनी कि वह समझी जाती है।

शराब-व्यवसायियों का यह प्रचार सफल हो रहा है। इसका परिणाम यह है कि पढ़े-लिखे लोग यह समझने लगे हैं कि शराब पीने में कोई भारी दोष नहीं है। पढ़े-लिखे लोगों पर प्रचार का असर जल्दी होता है। वहुत से डाक्टर, प्रोफेसर, वकील, सर-कारी अफसर, शराव पीते हैं। इससे भी बुरी वात यह है कि युवक छात्र भी शराव की ओर झुकने लगे हैं। नकल करते हुए लोग यह तो देखते हैं कि अमुक सुशिक्षित व्यक्ति शराव पीता है, परन्तु यह देखने की कोशिश नहीं करते कि उसके क्या वुरे परिणाम वह वेचारा भुगत रहा है।

कुछ लोग ऐसा दिखाते हैं कि वे मद्यपान के दोषों को भली भांति समझ गए हैं, परन्तु वे इस मामले में एकदम कट्टर नहीं होना चाहते। वे कहते हैं: "शराब का अन्धाधुन्ध सेवन बुरा है। परन्तु यदि थोड़ी, नियमित मात्रा में, औषध के रूप में शराब पी जाए, तो यह बहुत गुणकारी है।"

वस्तुत: इस प्रकार का प्रचार शराव के खुले विज्ञापन से भी अधिक हानिकारक है। एक तो यह बात गलत है कि थोड़ी, नियमित मात्रा में शराब पीना लाभकारी है। अल्कोहल अल्कोहल है। उसे पीने से ऊर्जा उत्पन्न होगी, किन्तु उस अल्कोहल को ऊर्जा में बदलने के लिए यकृत् पर जितना ज़ोर पड़ेगा, उसे देखते हुए कुल मिलाकर यह घाटे का ही सौदा रहता है। दूसरी और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह 'यदि' की शर्त बहुत बड़ी है। इस 'सुनहले सिद्धान्त' के फेर में पड़कर आदमी शराब पीना तो शुरू कर देता है, परन्तु वह जल्दी ही "थोड़ी, नियमित मात्रा में, औषध के रूप में" वाली बात को छोड़ बैठता है। वह निभती ही नहीं। जल्दी ही वह पक्का पियक्कड़ बन जाता है।

कुछ अन्य लोग हैं, जो कहते हैं: "शराब? ना, ना। वह तो बुरी चीज़ है। पर हां, सर्दियों में थोड़ी-सी ले लेने में कोई हर्ज़ नहीं है। शरीर में गर्मी रखती है।" सर्दियों में लें या गर्मियों में; थोड़ी-सी लें या अधिक लें, परन्तु यह न भूलें कि शराब की जो भी बूंद आपके शरीर के अन्दर जाएगी, वह विष है और उसे निकाल कर बाहर करने के लिए शरीर को अनुचित मेहनत करनी पड़ेगी। वह शरीर में ऊर्जा तो उत्पन्न करेगी, किन्तु शरीर को पोषण नहीं देगी। वह शरीर के नष्ट हुए कोष्ठकों (Cell) के स्थान पर नये कोष्ठक नहीं बनाएगी।

कुछ और लोग हैं, जो कहते हैं—"पैसा खर्च करके शराब पीना मूर्खता है। परन्तु यदि कहीं शादी-व्याह में, प्रीतिभोजों में मुफ्त ही मिलती हो, तो पीने में क्या हर्ज़ है? भई, ऐसे धर्मी सन्त हम नहीं कि शराब छूना पाप ही मानते हों। कभी-कदास

पी ली, इसमें कोई हर्ज़ नहीं।" जैसा हमने ऊपर बताया, हर्ज़ तो एक बूंद शराब पीने में भी है—धर्म-अधर्म की दृष्टि से नहीं, चिकित्साशास्त्र की दृष्टि से; यकृत् पर पड़ने वाले बोझ की दृष्टि से। देखना यही है कि कितना हर्ज़ आप सहन कर सकते हैं। फिर शराब पीने से जो एक सुख-भ्रांति होती है; जो चेतना धुंधली-सी पड़ जाती है; जो कुंठाओं से छुटकारा मिल जाता है; वह ऐसी चीज़ है, जिसके कारण एक-दो बार शराब का आनन्द ले लेने वाले व्यक्ति को उसे फिर पीने का आकर्षण हो सकता है। इससे शराब की लत पड़ सकती है। शराब की लत पड़ने के परिणाम जैसे भयंकर होते हैं, उन्हें देखते हुए शराब के मामले में पक्का धर्मी सन्त बने रहना ही भला है।

१५

सेनाओं में मदिरापान

कुछ भ्रम—मदिरा की एक विशेषता है कि वह कुछ समय के लिए चिन्ता और घबराहट को कम कर देती है। तंत्रिकाएं (ज्ञानवाहिनियां) शिथिल हो जाती हैं, इसलिए अनुभव की शक्ति मन्द हो जाती है। आदमी कुछ लापरवाह हो जाता है। वह थकान और परेशानी को भूल जाता है। इसलिए प्रायः सभी देशों में सेनाओं को मदिरा देने की प्रथा रही है। विशेष रूप से, जब सैनिकों को युद्ध के लिए मोर्चे पर भेजा जाता है, तब उन्हें स्फूर्ति देने के लिए और थकान मिटाने के लिए मदिरा दी जाती है। यह समझा जाता है कि मदिरा पीकर सैनिक निर्भीक हो जाते हैं और वे अधिक वीरता से लड़ते हैं।

सैनिकों को मदिरा पिलाना घाटे का सौदा—परन्तु अनुभव से पता चला है कि सैनिकों को मदिरा पिलाना हर दृष्टि से हानिकारक और घाटे का सौदा है। अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों को इसका अनुभव तब हुआ, जब सन् १९१४ और सन् १९४० में जर्मन सेनाओं ने फ्रांस को रौंद डाला और वहां की नागरिक जनता पर अत्याचार किए। इन अत्याचारों की जांच करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने एक जांच समिति बिठाई थी। उसने अपनी रिपोर्ट में कहा था—

"पाशविकता के अनेक काम सैनिकों ने व्यक्तिगत रूप से किये—नागरिकों से दुर्व्यवहार, बलात्कार और लूट-पाट इत्यादि। सब युद्धों में इस प्रकार की घटनाएं कुछ न कुछ तो होती ही हैं और यह सोचकर चलना चाहिए कि वे होंगी ही, क्योंकि किसी भी बड़ी सेना में काफी लोग अपराधी प्रवृत्ति के भी होते हैं। युद्ध की हालत में उन्हें अपने अपराधों के लिए दंड मिलने का डर नहीं रहता। इसलिए वे खुलकर अपराध करते

हैं। इसके अलावा शराब का नशा ऐसे सैनिक को भी, जो स्व-भाव से अपराधी नहीं है, अत्याचारी बना देता है। शराब के नशे में वह ऐसे भीषण अत्याचार कर बैठता है, जिन्हें अपनी शान्त अवस्था में देखकर वह दंग रह जाता। यह मानने के लिए यथेष्ट कारण है कि जर्मन सेना में मदिरा का प्रयोग बहुत होता था, खास तौर से बेल्जियम और फ्रांस में, जहां विजेता जर्मन सैनिकों को गांव-गांव में लूट में खूब शराब मिल जाती थी। सबसे भीषण अत्याचार शराब के नशे में किए गए प्रतीत होते हैं।"

यह दुर्भाग्य की बात है कि जो सैनिक देश की रक्षा के लिए अपने प्राण निछावर करने को तैयार रहते हैं, उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य शराब पिलाकर नष्ट किया जाता है। सैनिकों को यह समझकर शराब दी जाती है कि इससे वे प्रसन्न रहेंगे; इससे उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा; और वे अच्छी तरह लड़ सकेंगे। जब कि सचाई इससे ठीक उल्टी है।

क्या शराब से सैनिकों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है?— सैनिकों को यही समझकर शराब दी जाती रही है कि इससे उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा; वे पेचिश, दस्त आदि की बीमा-रियों से बचे रहेंगे। प्रथम विश्वयुद्ध में फ्रांस में सैनिकों को खाइयों में रहना पड़ता था। वर्षा से भीगने और कड़ाके की सर्दी के इलाज के तौर पर उन्हें रम और ब्रांडी दी जाती थी। 'रम' और 'ब्रांडी' दोनों ही तेज़ शराबें हैं। इनकी थोड़ी-सी मात्रा पीने से ही नशा चढ़ जाता है।

शराब बीमारी से बचाव नहीं करती—परन्तु शराब के प्रयोग के बारे में अनेक सेनाध्यक्षों का अनुभव बहुत कटु रहा है। उन्होंने देखा है कि शराब किसी बीमारी से बचाव नहीं करती; उल्टा बीमारियों को बढ़ा देती है। इसका सबसे कटु अनुभव ब्रिटिश सेना को सन् १८६२ में पोटोमैक नदी की

लड़ाई में हुआ। कई सप्ताह तक लड़ने और वर्षा में भीगने के बाद सैनिकों को यह सोचकर शराब दी गई कि सैनिकों को जो पेचिश और दस्तों की शिकायत हो रही है, वह दूर हो जाएगी। साथ ही शराब के अन्य लाभ तो होंगे ही। शराब पाकर सैनिक बहुत प्रसन्न हुए। परन्तु एक महीने बाद ही शराब का प्रयोग बिल्कुल बन्द कर देना पड़ा, क्योंकि उससे पेचिश और दस्तों की शिकायत तो बढ़ ही गई थी, नशे की समस्या और उठ खड़ी हुई थी। उस सेना के सब डाक्टरों की यही राय थी कि शराब से बीमारी बढ़ी है।

ब्रिटिश सेना के इंस्पेक्टर जनरल विलियम फर्ग्युसन ने अपने लम्बे अनुभव के बाद लिखा है :

"कोई भी यह नहीं चाहेगा कि अपने सैनिकों को कोई कभी ठीक न होने वाली और विनाशकारी बीमारी लगा दे, परन्तु उन्हें दैनिक राशन में 'रम' (तेज़ शराब) देकर हम इससे भी बुरा काम कर रहे हैं। हमने उनके मन और शरीर को, व्यक्ति की नैतिक भावना और शारीरिक शक्तियों को, सेना के सामान्य अनुशासन को और देश के राष्ट्रीय चरित्र को नष्ट करने का सबसे बढ़िया साधन अपनाया है।"

क्रीमिया की लड़ाई में ब्रिटिश और फ्रांसीसी सैनिकों को 'रम' दी जाती थी। उस लड़ाई में इन सेनाओं की बड़ी दुर्दशा हुई। 'रम' के प्रयोग की सेना के अफसरों और डाक्टरों ने इतनी आलोचना की कि बहुत समय तक सेना में 'रम' का प्रयोग बन्द-सा रहा।

शराब से सैनिकों की क्षमता का नाश—मज़े की बात यह है कि सैनिकों को जिस उद्देश्य से शराब दी जाती है, उससे ठीक उल्टा परिणाम होता है। युद्ध में सफलता के लिए आवश्यक है कि सैनिक अनुशासन में रहें; उनका दिमाग सही काम कर रहा हो; उनकी आंखें और अंगुलियां ठीक काम करती हों; उनकी टांगें ठीक ढंग से भागने-दौड़ने में समर्थ हों। वे

सही निशाना साध सकें। शराव पीने के बाद सैनिक इनमें से एक काम को भी उतनी अच्छी तरह नहीं कर सकते, जितना कि शराव विना पिये कर पाते। नौसेना के तोपचियों और स्थल सेना के बन्दूकचियों का निशाना शराब पीने के बाद कम से कम ३० प्रतिशत गलत हो जाता है। कारण यह है कि शराव पीने के वाद आंख, अंगुलियां और मस्तिष्क तीनों ही ठीक काम नहीं करते। लम्वे समय तक खोज के बाद यह परिणाम निकाला गया है कि ठंडे और गर्म, दोनों ही प्रकार की जलवायु में सैनिक लोग विना शराव पिये उससे अधिक श्रम कर सकते हैं, जितना वे शराब पीकर कर पाते। जनरल सर फ्रांसिस ग्रैनफेल ने मिस्र की लड़ाई के बारे में लिखा है :

"मिस्र की लड़ाई में सैनिकों को शराव बिल्कुल नहीं दी गई। हम केवल नील नदी का जल पीते थे। इस युद्ध के अन्तिम दिनों में मुझे सेना के पृष्ठ भाग की रक्षा का काम संभालना पड़ा था। मैंने संसार के किसी भी भाग में इतनी समर्थ और बढ़िया सेना नहीं देखी, जैसी कि नील नदी की लड़ाई में भाग लेने वाली सेना थी।"

जर्मनी में सोलहवीं आर्मी कोर के कमांडर काउंट वान हेस-लर ने लिखा है :

"जो सैनिक शराव नहीं पीता, वह सबसे अच्छा सैनिक है। वह अधिक काम कर सकता है; अधिक चल सकता है; और वह थोड़ी शराव पीने वाले सैनिक से भी अधिक अच्छा योद्धा है। मानसिक और शारीरिक दृष्टि से वह उससे कहीं अच्छा है। ब्रांडी सबसे बुरा ज़हर है। उससे घटकर है बीयर। ये दोनों ही सामर्थ्य को कम कर देती हैं; और मन, शरीर और आत्मा को पतित करती हैं। तेज़ शराव थकान लाती है और प्यास लगाती है। सैनिकों के लिए पानी, काफी और चाय सर्वोत्तम पेय हैं।"

शराब के बजाय चाय—लार्ड किचनर ने सूडान के युद्ध में

अपने सैनिकों को शराब बिल्कुल नहीं पीने दी थी और उन्हें केवल ठंडी चाय पीने को दी थी। दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेज़ों और बोअरों में हुए युद्ध में बोअरों ने शराब का प्रयोग बन्द कर रखा था। इससे उन्हें बहुत लाभ हुआ। उनके सैनिक अफ्रीका की दिन की तेज़ गर्मी और रात की कड़ाके की सर्दी को आसानी से सह लेते थे। सेना के सब डाक्टरों की यही राय थी कि बोअर सेना की अधिक सहनशीलता का कारण मुख्य रूप से यह था कि वे लोग शराब नहीं पीते थे। लोग कहते हैं कि ब्रांडी पीने से कठिनाइयां आसानी से सहन हो जाती हैं। परन्तु इसमें ज़रा भी सचाई नहीं है। यह कहना भी गलत है कि शराब पीने से थकान उतर जाती है। केवल इतनी बात सही है कि शराबी खतरे को ठीक-ठीक आंक नहीं पाता और इसलिए वह कायर होने पर भी उस खतरे की परवाह नहीं करता। पुराने ज़माने में, जब शत्रु पर ज़ोरदार धावा बोल देने से ही विजय मिल जाती थी, शराब का प्रयोग भले ही लाभकारी रहा हो, परन्तु आजकल के वैज्ञानिक युद्ध में इसका वह लाभ नहीं रहा है। आज तो वास्तविक साहस और सतर्कता की आवश्यकता है, न कि शराब के नशे में खतरे में कूद पड़ने की। ज़रूरत इस बात की नहीं है कि खतरे को कम आंका जाए, बल्कि इस बात की है कि उसे पहचाना जाए, सूझ-बूझ से उसे टालने की कोशिश की जाये और यदि वह टल न सके, तो शान्त चित्त से उसका मुकाबला किया जाये। शराब इस काम को असम्भव बना देती है।

बोअर युद्ध में अंग्रेज़ों की हार हुई और बोअरों की विजय। अंग्रेज़ सेनाध्यक्ष सर फ्रेडरिक ट्रैवेस ने इस युद्ध के समय कहा था :

"कार्य शक्ति को बढ़ाने की दृष्टि से शराब भारी फिज़ूल-खर्ची है।—यह शरीर का दिवाला निकाल देती है। मज़े की बात यह है कि शराब के बल पर सैनिक न काम कर सकते हैं, न कूच कर सकते हैं। इस लड़ाई में मैं लेडीस्मिथ नगर को घेरे से

छुड़ाने के लिए जाने वाली सेना के साथ था। गर्मी के मारे बुरा हाल था। ३० हज़ार की उस विशाल सेना में सबसे पहले पिछड़ने वाले लोग वे नहीं थे जो बहुत लम्बे थे, या बहुत ठिगने, या बहुत मोटे या बहुत पतले; बल्कि वे थे, जो शराब पीते थे।"

इससे स्पष्ट है कि शराब सैनिकों के लिए उपयोगी नहीं, बल्कि हानिकारक है। यह विजय को पराजय में बदल सकती है।

भारत में मद्य-निषेध की प्रगति

यह हम पहले देख चुके हैं कि जब से मद्यपान शुरू हुआ, तभी से मद्य-निषेध भी शुरू हो गया। पीने वाले पीते थे और समझदार लोग उन्हें रोकते थे। मनु आदि स्मृति-लेखकों द्वारा किया गया मद्य-निषेध इसी प्रकार का था। वह एक प्रकार से कानून द्वारा मद्य-निषेध ही था।

अलाउद्दीन और औरंगज़ेब—बाद में इस कानून का कठोरता से पालन नहीं हुआ। राज्य न तो मद्यपान के लिए दंड देता था और न मद्यपान को प्रोत्साहन देता था। मध्यकाल में अलाउद्दीन खिलजी ने और उसके बाद औरंगज़ेब ने मद्यपान को दंडनीय अपराध घोषित किया।

शराब से राज्य को आय—अंग्रेज़ों के पहले भारत में शराब राज्य की आय का साधन नहीं था। शराब के बनाने या बेचने पर राज्य कोई कर वसूल नहीं करता था। सन् १७९० में इंग्लैंड के नमूने पर भारत में उत्पादन-शुल्क (एक्साइज़ ड्यूटी) लगाया गया। मादक पदार्थों के निर्माण और बिक्री पर लगे शुल्क से राज्य को काफी आय होने लगी। सन् १९३०-३१ में मादक पदार्थों से राज्य को १६.७ करोड़ रुपये की आय हुई। सन्-१९४६-४७ में यह बढ़कर ५०.२ करोड़ रुपये हो गई।

देशभक्तों द्वारा विरोध—देश के राजनीतिक नेताओं का ध्यान मद्यपान की बुराइयों की ओर गया। 'स्वराज्य मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है और उसे मैं लेकर रहूंगा' इस नारे को लगाने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने सन् १९०८ में कहा था : "अंग्रेज़ भारत से चले जाएंगे। परन्तु उनके जाने के बाद भी मद्यपान भारत में बचा रहेगा। इसलिए हमें मद्यपान के विरुद्ध अभी से आन्दोलन शुरू करना चाहिए। जब तक देश में मद्यपान

समाप्त नहीं हो जाता, तब तक हमारी स्वतंत्रता अधूरी रहेगी।"
उन्होंने पूना में एक 'मद्यनिषेध सभा' की स्थापना की। 'मद्यपान विनाशक' नामक एक और समिति इससे पहले ही सन् १८४६ में बन चुकी थी।

ब्रिटिश सरकार का रुख—इन गैर सरकारी संस्थाओं ने शराब के विरुद्ध प्रचार आरम्भ किया। परन्तु सरकार ने उनके काम में रोड़े अटकाए। सरकार समझती थी कि यदि शराब की बिक्री बन्द हो गई, तो सरकार की आय कम हो जाएगी। ताड़ी की दूकानों पर पहले पहल धरना सन् १९०७ और १९०८ में दिया गया। स्वयंसेवकों का कहना था कि उन्हें न केवल शराब की दूकानों के बाहर, बल्कि उनके दूकानों के अन्दर घुसकर भी शराबियों को समझाने और शराब पीने से रोकने का अधिकार है। यह महात्मा गांधी के भारत की राजनीति में आने से दस बरस पहले की बात है।

इस धरने से आन्दोलन को बल मिला। परन्तु पुलिस दूकानदारों के साथ मिली हुई थी। नियमानुसार शराब की दूकानें आठ या नौ बजे बन्द हो जानी चाहिए, पर वे सारी रात खुली रहती थीं। ग्राहक पिछले दरवाज़े से आकर चुपके से शराब खरीद ले जाते थे।

राजनीतिक सुधारों का प्रभाव—सन् १९१९ में नये राजनीतिक सुधार हुए। उनके अनुसार नई विधान परिषदें बनीं। कई राज्यों की विधान परिषदों ने मद्य-निषेध के लिए प्रस्ताव पास कर दिए। सरकार के लिए इन परिषदों के प्रस्तावों का विरोध करना कठिन हो गया।

सन् १९२७ में बम्बई राज्य की विधान परिषद ने एक प्रस्ताव पास करके सरकार से कहा कि वह मद्य-निषेध के उपाय निकालने के लिए एक समिति बनाए। सन् १९४७ में उसी विधान परिषद ने प्रस्ताव पास किया कि सारे राज्य में पूर्ण मद्य-निषेध लागू किया जाए। जब आबकारी मंत्री ने उस प्रस्ताव

पर अमल नहीं किया तब विधान परिषद ने उस मंत्री की निन्दा का प्रस्ताव पास किया।

इसी प्रकार कलकत्ता नगर निगम ने प्रस्ताव पास किया कि निगम की सीमा के अन्दर विद्यमान शराब की सब दूकानें बन्द कर दी जाएं। उत्तर प्रदेश की विधान परिषद ने भी मद्य-निषेध का प्रस्ताव पास किया। यह सब अंग्रेज़ों के शासन काल की बात है।

वड़ौदा और मैसूर जैसे देशी राज्यों में भी शराब की बिक्री पर कुछ रोकें थीं। वड़ौदा में दस साल से कम आयु के बालक को शराब नहीं बेची जा सकती थी। मैसूर में किसी भी तीर्थ-स्थान से चार मील के अन्दर शराब की दुकान नहीं खोली जा सकती थी।

सन् १९२० में महात्मा गांधी ने भारत की राजनीति में प्रवेश किया।

गांधी जी द्वारा शराब का विरोध—गांधी जी ने मद्य-निषेध के लिए भारी आन्दोलन किया। उन्होंने इसे रचनात्मक कार्यक्रम का अंग बनाया। उन्होंने कहा कि शराब की बिक्री बन्द होनी चाहिए क्योंकि इससे लोगों को बहुत नुकसान होता है। उनका स्वास्थ्य बिगड़ता है, गरीबी बढ़ती है; मार-पीट और झगड़े होते हैं, परिवार में कलह होती है और अपराध बढ़ते हैं। सरकार को धन प्राप्त करने के लिए कोई अन्य उपाय ढूंढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार विदेशी है; इसलिए वह देश की जनता के हित का बिल्कुल ध्यान नहीं रखती। वह जिन लोगों से पैसा वसूल करती है, उन्हीं को विनाश के गढ़े में धकेल रही है। इसलिए मद्य-निषेध आन्दोलन को स्वाधीनता संग्राम का एक प्रधान अंग बनाया गया। जिस प्रकार विदेशी वस्त्रों का वहिष्कार, खादी पहनना और चरखा कातना इस अहिंसात्मक लड़ाई का एक हथियार था, उसी प्रकार दूसरा हथियार था मद्य-निषेध अर्थात् शराबबन्दी। इसके लिए, एक ओर तो सभाएं करके लोगों को शराब की बुराइयां समझाई जाती थीं; दूसरी ओर स्वयंसेवक

शराव की दूकानों पर धरना देते थे। पुलिस इन धरना देने वालों को पीटती और पकड़ती थी। पर उसकी परवाह न करके स्वयं-सेवक धरना देते थे। यहां तक कि महिलाएं भी धरना देती थीं। इससे जनता में शराव के विरुद्ध बड़ी जागृति फैली।

दो लाभ—स्वाधीनता-संग्राम के दिनों में राष्ट्रीय नेताओं द्वारा किए गए मद्य-निषेध आन्दोलन के दो लाभ थे। एक तो ये नेता सचमुच यह अनुभव करते थे कि शराव पीने से लोगों को भारी हानि होती है; उनका चरित्र गिरता है; देश की आर्थिक और सामाजिक दशा विगड़ती है; इसलिए मद्यपान वन्द होना ही चाहिए।

परन्तु इसके साथ ही उनका एक उद्देश्य यह भी था कि विदेशी सरकार की आय के साधनों पर चोट की जाए। यदि किसी प्रकार शराब की विक्री वन्द हो जाए, तो उत्पादन-शुल्क और शराव के ठेकों से सरकार को होने वाली आय वन्द हो जाएगी। जिस प्रकार खादी पहनने और चरखा कातने के आन्दोलन का असली उद्देश्य इंग्लैण्ड के वस्त्र उद्योग को ठप करना था, उसी प्रकार मद्य-निषेध आन्दोलन का एक वड़ा उद्देश्य विदेशी सरकार की आय के एक बड़े स्रोत को समाप्त करना भी था।

कांग्रेसी मंत्रिमंडल— सन् १९३७ में जब पहली वार प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बने, तब उन्होंने मद्य-निषेध के कार्यक्रम को लागू किया। मद्रास राज्य में चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने और गुजरात में मोरारजी देसाई ने पूरी शराबबन्दी कर दी। इससे कांग्रेसी सरकारों को धन की कमी का सामना तो करना पड़ा, परन्तु गरीब मज़दूरों की दशा बहुत सुधर गई।

जिन सरकारों को धन की कमी अधिक अनुभव हुई, उन्होंने मद्य-निषेध को समाप्त कर देना चाहा। उन्होंने कहा कि धन के अभाव में सरकार अपनी जन-कल्याण की योजनाओं को भी कार्यान्वित नहीं कर सकती। महात्मा गांधी ने दृढ़तापूर्वक

कहा : 'शराब की बिक्री से प्राप्त होने वाला धन कलंकित धन है।" शराब पिलाकर लोगों का सबसे बड़ा अकल्याण करके जन-कल्याण की किन्हीं भी योजनाओं को कार्यान्वित करने का क्या लाभ है ?

परन्तु सन् १६३७ में बने कांग्रेसी मंत्रिमंडल सितम्बर १६३७ में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाने के कारण टूट गए और मद्य-निषेध भी ममाप्त हो गया।

स्वाधीनता के बाद मद्य-निषेध

संविधान में मद्य-निषेध—जब १९४७ में भारत स्वाधीन हुआ, तब तक भी स्वाधीनता-संग्राम के दिनों की देशहितकारी राष्ट्रीय भावना बहुत कुछ बनी हुई थी। कई सरकारों ने फिर मद्य-निषेध लागू कर दिया। भारत का जो नया संविधान बनाया गया, उसमें राज्य की नीति के कुछ निदेशक तत्त्व निश्चित किए गए। उन्हींमें यह कहा गया कि "राज्य अपने लोगों के आहार, पुष्टि-तल और जीवन-स्तर को ऊंचा करने तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्त्तव्यों में से मानेगा तथा विशेषतया मादक पेयों और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक औषधियों के औषधीय प्रयोजन से अतिरिक्त उपभोग का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा।" सरल शब्दों में इसका अर्थ यह है कि राज्य की कोशिश यह रहेगी कि लोगों का स्वास्थ्य सुधरे, उनका रहन-सहन का स्तर ऊंचा हो और शराब आदि पेयों और अफीम, गांजा आदि के सेवन पर रोक लगा दी जाए। इस प्रकार के पदार्थों का सेवन केवल दवाई के रूप में किया जा सके।

इस बात को ध्यान में रखते हुए सरकार ने एक मद्य-निषेध समिति बनाई, जिसका काम मद्य-निषेध की समस्याओं को समझना और सारे देश में मद्य-निषेध के लिए एक कार्यक्रम तैयार करना था। इस समिति ने सितम्बर सन् १९५५ में अपनी

रिपोर्ट पेश की। समिति ने सुझाव दिया कि १ अप्रैल १९५८ से सारे देश में मद्य-निषेध लागू कर दिया जाए। सन् १९५६ की जनवरी में राष्ट्रीय विकास परिषद् ने, जिसमें भारत के सब राज्यों के मुख्यमंत्री सम्मिलित होते हैं; इस रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया। ३१ मार्च १९५६ को लोकसभा ने एक प्रस्ताव पास करके इस निश्चय को दुहराया कि मद्य-निषेध द्वितीय पंचवर्षीय योजना का एक आवश्यक अंग माना जाना चाहिए और सारे देश में मद्य-निषेध के लिए एक बड़ा कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए।

सन् १९५७ में योजना आयोग ने राज्यों से कहा कि वे नीचे लिखे कार्यक्रम को लागू करे।

(१) मादक पेयों (शराब, भांग आदि) के उपयोग को प्रोत्साहन न दिया जाए और उनके विज्ञापन को रोका जाए। (२) सार्वजनिक स्थानों पर मद्यपान करना मना हो और सार्वजनिक स्वागत समारोहों में मद्यपान बन्द किया जाए। (परन्तु विदेशी राजदूतावासों और विदेशों से आने वाले यात्रियों को मद्यपान की छूट दी जाए) (३) ऐसी समितियां बनाई जाएं, जो इस बात के लिए कार्यक्रम बनाएं कि मदिरा की दूकानें किस प्रकार कम की जाएं; सप्ताह में मद्य-निषेध के दिनों की संख्या कैसे बढ़ाई जाए; शराब बेचने वालों को दी जाने वाली शराब की मात्रा कितनी कम की जाए; विकास योजनाओं के क्षेत्रों में और औद्योगिक क्षेत्रों में शराब की दूकानें किस प्रकार हटाई जाएं; और नगरों तथा गांवों की मुख्य सड़कों पर से शराब की दूकानों को किस प्रकार हटाया जाए। (४) सस्ते और स्वास्थ्यवर्धक पेय बनाने को बढ़ावा दिया जाए। (५) गैर सरकारी संस्थाओं को इस बात के लिए सहायता दी जाए कि वे लोगों के लिए मनोरंजन केन्द्र खोलें। (६) मद्य-निषेध को रचनात्मक कार्यक्रम में प्रमुख स्थान दिया जाए।

जब राज्यों का पुनर्गठन हुआ, तब आन्ध्र, बम्बई, मद्रास,

कुर्ग, कच्छ और सौराष्ट्र में पूर्ण मद्य-निषेध लागू था। असम, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्यभारत, मैसूर, ट्रावन्कोर-कोचीन और हिमाचल प्रदेश में आंशिक (अधूरा) मद्य-निषेध था।

हवा बदली—शुरू में मद्य-निषेध के पक्ष में भावना प्रबल थी। कानून बनाकर मद्यपान मना कर दिया गया। परन्तु समय बीतने के साथ देशहित की भावना कम होती गई—आर्थिक स्वार्थ प्रबल होते गए। जैसे अन्य क्षेत्रों में भ्रष्टाचार फैला, वैसे ही इस क्षेत्र में भी फैला। जहां मद्य-निषेध लागू किया गया था, वहां दवाई (टिंक्चर-जिंजर आदि) के नाम से शराब बेची और पी जाने लगी। शराब बनाने वाले लोग लुक-छिपकर खूब महंगे दामों पर शराब बेचने लगे, क्योंकि शराब खुले आम बिक नहीं सकती थी, इसलिए लोग चोरी-छिपे उसे महंगे दामों पर भी खरीदते थे।

फिर मद्य-निषेध के विरोध में तरह-तरह की युक्तियां दी जाने लगीं। शराब की बिक्री से जिन भी लोगों को आर्थिक लाभ होता था, उन्होंने ज़ोरदार प्रचार शुरू कर दिया। उनका कहना था कि यदि मद्य-निषेध करना ही हो, तो वह प्रचार द्वारा जनता को समझा-बुझाकर किया जाना चाहिए। जब तक जनता अपनी इच्छा से शराब छोड़ने को तैयार न हो, तब तक केवल कानून के ज़ोर से मद्य-निषेध कर देने से कोई लाभ नहीं हो सकता। बनाने वाले चोरी-छिपे शराब बनाएंगे और पीने वाले चोरी-छिपे खरीदकर पिएंगे। केवल इतना होगा कि पीने वालों को शराब महंगी और घटिया मिलेगी। सरकार को शराब की बिक्री से जो आय होती, वह न होगी।

फिर सरकार जनता के हित के लिए है। शराब पीने वाले भी जनता के ही अंग हैं। उनके हित का ध्यान रखना भी सरकार का कर्त्तव्य है। मान लिया कि सबसे अच्छा तो यह है कि लोग शराब न पिएं। परन्तु यदि वे नहीं मानते, और उन्हें

शराब पीनी ही है, तो इसमें क्या लाभ है कि वे चोरी-छिपे पिएं; कानून तोड़कर पिएं, और अधिक दाम देकर घटिया शराब पिएं ? जब तक उन्हें शराब छोड़ने के लिए राज़ी नहीं किया जा सकता, तब तक ऐसा प्रबन्ध होना चाहिए कि उन्हें कानून का उल्लंघन किए बिना उचित दाम पर अच्छी चीज़ मिलती रहे।

ये युक्तियां सुनने में भली जान पड़ती हैं। पर वस्तुतः ये थोथी हैं, यह हम आगे चलकर देखेंगे। पर ऐसी ही युक्तियों के आधार पर अनेक राज्यों ने मद्य-निषेध को रद कर दिया। शराब की बिक्री फिर शुरू हो गई। आदर्शवादी देशभक्तों के आंसू पोंछने के लिए यह कानून बनाया गया कि अठारह साल से कम आयु के लोगों को शराब नहीं बेची जा सकेगी। कुछ दिन नियत कर दिए गए, जिन पर शराब की बिक्री बन्द रहेगी। कुछ तीर्थस्थानों में, हरिद्वार, मथुरा आदि में मद्य-निषेध कानूनी रूप से लागू रखा गया।

इन सब कानूनों का कोई लाभ नहीं था। कारण यह है कि मद्य-निषेध सम्बन्धी कानूनों का कभी भी ईमानदारी से पालन नहीं किया गया। जिन लोगों को यह काम सौंपा गया था कि वे इन कानूनों का पालन करवाएं, वे स्वयं शराब पीने के शौकीन थे। दूध की रखवाली का काम बिल्ली को सौंप दिया गया। शराबियों के प्रति पुलिस का रुख यह रहा कि वे बेचारे खरीदकर पीते हैं। वे दंड के नहीं, सहानुभूति के पात्र हैं।

अनेक राज्यों में मद्य-निषेध असफल रहा है, क्योंकि उसे ठीक ढंग से लागू नहीं किया गया। कई राज्यों ने तो घोषणा करके मद्य-निषेध समाप्त कर दिया है।

कानून द्वारा मद्य-निषेध

इस प्रश्न पर वहुत वाद-विवाद हुआ है कि कानून द्वारा मद्यपान का निषेध किया जाना चाहिए या नहीं। भारत से पहले यह विवाद अमेरिका में उठ चुका था। सन् १६१६ में अमेरिका की सरकार ने मद्यपान के दोषों को देखते हुए कानून बनाकर देश में शराब बनाना और बेचना मना कर दिया था। इस पर अमेरिका में बहुत तहलका मचा। कुछ वर्ष के बाद कानूनी मद्य-निषेध समाप्त कर दिया गया।

इस विषय में समझदार लोगों में दो मत नहीं हैं कि शराब बुरी चीज़ है और उसके प्रयोग को रोका जाना चाहिए। मत-भेद इस बात पर है कि मद्यपान को किस ढंग से रोका जाए। कानून द्वारा मद्य-निषेध के विरोध में युक्तियां निम्नलिखित हैं :

(१) **व्यक्ति की स्वतंत्रता नष्ट होती है**—देश के हर नागरिक को कुछ स्वतंत्रताएं प्राप्त हैं। वह क्या खाए, क्या पहने, इस विषय में राज्य को या अन्य किसीको भी टांग अड़ाने की ज़रूरत नहीं। कोई आदमी अपना बुरा नहीं चाहता। वह अपना भला-बुरा स्वयं समझता है। कानून बनाकर मद्यपान मना करना उसकी स्वतंत्रता को छीनना है। आज आप मद्य-पान को बुरा कहकर रोकते हैं, तो हो सकता है कि कल कोई अन्य सरकार प्याज़ और लहसुन के खाने पर भी रोक लगाना चाहे।

(२) **केवल कानून के ज़ोर से मद्यपान रुक नहीं सकता**—आप हज़ार कानून बना लीजिए, किन्तु शराब पीने वाले तो पिएंगे ही। चोरी-छिपे पिएंगे और कानून तोड़कर पिएंगे। यही है न कि आप उन्हें जेल भेज देंगे ! ऐसा कानून बनाया ही क्यों

जाए, जिसका उल्लंघन अवश्य होना हो ?

(३) मद्यपान-निषेध से तस्करी को बढ़ावा मिलता है—जब कानून बनाकर शराब की बिक्री बन्द कर दी जाती है, तब शराब का गैर कानूनी व्यापार होने लगता है। शराब चोरी-छिपे बनाई और बेची जाती है। पीने वाले को वह महंगी मिलती है, क्योंकि बेचने वाला पकड़े जाने का जोखिम उठाता है। इस प्रकार कानून तोड़ने वालों में केवल शराब पीने वाले हीं नहीं, शराब बनाने और बेचने वाले भी शामिल होते हैं।

(४) घूसखोरी बढ़ती है—कानून बना दिया जाता है कि कोई शराब बनाए और बेचे नहीं। परन्तु उस कानून का पालन करवाने वाले भी सामान्य मनुष्य ही हैं। वे अपराधियों से घूस लेकर उन्हें छोड़ देते हैं। इस प्रकार कानून से मद्यपान रुकता नहीं, बल्कि मद्य की कमाई में हिस्सा बंटाने वाले लोग बढ़ जाते हैं।

(५) राज्य की आय का एक स्रोत छिन जाता है—राज्य को विभिन्न कार्यों के लिए धन की आवश्यकता होती है। यह धन उसे विभिन्न प्रकार के करों से प्राप्त होता है। अब तक प्रायः सभी देशों में शराब के निर्माण और बिक्री से प्राप्त होने वाला कर राज्य की आय का एक बड़ा स्रोत रहा है। शराब पर लगने वाले कर को लोग बिना हील हुज्जत के, खुशी से देते हैं। राज्य इस कर से प्राप्त धन का उपयोग जन-कल्याण या विकास के कामों के लिए कर सकता है। मद्य-निषेध कर देने पर राज्य को मद्य से कोई आय नहीं होती, क्योंकि उस दशा में जो भी शराब बनती और बिकती है, वह गैर-कानूनी तरीके से लुक-छिपकर बनाई और बेची जाती है।

(६) निषिद्ध वस्तु के प्रति आकर्षण अधिक होता है—मद्य-निषेध करना वस्तुतः मद्यपान को बढ़ावा देना है। मनुष्य का स्वभाव है कि उसे जो चीज़ मना की जाए, उसीके लिए उसका आग्रह अधिक होता है। यदि मद्यनिषेध न हो, तो बहुत से

लोगों को शराब पीने की इच्छा कभी होगी ही नहीं। वे लोग शराब नहीं पिएंगे। परन्तु जब आप कानून बना देते हैं, तब सभी लोग सोचते हैं कि शराब में ऐसी क्या खास बात हैं, जो इसे पीना मना किया गया है। जो वैसे शराब न पीते, वे भी मद्य-निषेध के कानून के कारण शराब पीकर देखना चाहते हैं। दो-एक बार पीने के बाद उन्हें उसकी लत पड़ जाती है।

सरसरी नज़र से देखने पर ये युक्तियां बड़ी ज़ोरदार जान पड़ती हैं, पर ध्यान से देखा जाये, तो पता चलता है कि ये बिल्कुल थोथी हैं। इनमें ज़रा भी जान नहीं है। आइये, ज़रा इनकी पड़ताल करें।

(१) यह ठीक है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। परन्तु किसी भी व्यक्ति को असीम स्वतन्त्रता नहीं दी जा सकती। इस विषय में प्रसिद्ध वाक्य बना हुआ है : "आपकी हाथ हिलाने की स्वतन्त्रता वहां समाप्त हो जाती है, जहां मेरी नाक शुरू होती है।" इसका अर्थ यह है कि आपको हाथ हिलाने की स्वतन्त्रता है, किन्तु आपका हाथ मेरी नाक को नहीं छूना चाहिए। इसका मतलब यह हुआ कि किसी भी व्यक्ति को ऐसी कोई स्वतन्त्रता नहीं दी जा सकती, जो दूसरे की स्वतन्त्रता में बाधक हो। कोई भी आदमी इस तरह से आग जला कर अपने हाथ-पांव नहीं सेक सकता कि उससे दूसरों के झोंपड़े और खेत ही जल जाएं।

इतना ही नहीं, किसी व्यक्ति को यह स्वतन्त्रता भी नहीं दी जा सकती कि वह अपनी आंख फोड़ ले, जीभ काट ले या फांसी लगाकर मर जाए। अर्थात् दूसरों को हानि पहुंचाने की स्वतन्त्रता तो मनुष्य को है ही नहीं, स्वयं अपने को हानि पहुंचाने की स्वतन्त्रता भी मनुष्य को नहीं है और न दी जा सकती है। यह समझा जाता है कि कोई भी समझदार व्यक्ति स्वयं को हानि पहुंचाना नहीं चाहेगा, इसीलिए इस प्रकार की स्वतन्त्रता पर कानूनी रोक नहीं लगाई गई। परन्तु यदि यह

पता चल जाए कि कुछ लोग अपना विवेक नष्ट करने और अपने आपको हानि पहुंचाने का प्रयत्न कर रहे हैं, तो उस पर रोक लगाई जायेगी और लगाई जानी चाहिए। यदि कानून द्वारा पोटाशियम साइनाइड और संखिया खाकर आत्महत्या करने पर रोक लगाई जा सकती है, तो कोई कारण नहीं कि शराब पीने पर रोक क्यों न लगाई जाए ? पोटाशियम साइ-नाइड या संखिया का बुरा असर खाने वाले के सिवाय दूसरे लोगों पर नहीं पड़ता। परन्तु शराब का बुरा असर तो पीने वाले के पड़ौसियों पर भी पड़ता है। इसलिए इस मामले में व्यक्ति की स्वतन्त्रता का नारा लगाना गलत है। इस प्रकार की असीम स्वतन्त्रता दुनिया में कहीं भी नहीं दी जाती और न दी जा सकती है।

(२) दूसरी युक्ति भी लचर है। शराब की बिक्री रोकने का कानून बनाने के बाद भी शराब पी जायेगी, इसका अर्थ यह नहीं है कि कानून ही न बनाया जाए। कौन-सा अपराध है, जो कानून बन जाने के बाद नहीं होता ? चोरी, हत्या, बलात्कार सभी अपराध तो कानूनों के होते हुए भी होते हैं। कानून होने का यह लाभ है कि अपराधी पकड़े जाते हैं और दंड पाते हैं। क्योंकि कानून के होते हुए भी चोरी, डकैती और हत्याएं होती हैं, इसलिए कानून को ही हटा देने की बात कोई नहीं कहता। फिर यह बात शराब के बारे में ही क्यों कही जाती है ? इसका कारण यह है कि कानून को बनाने और बदलने का काम जिन लोगों के हाथों में है, उनमें से बहुत से स्वयं शराब के शौकीन हैं। वे शराब की भयानक हानियों को आंखों से ओझल कर देते हैं। वे शराब पीने वाले के प्रति बहुत ज़्यादा सहानुभूति जताते हैं।

(३) मद्यपान के निषेध से तस्करी को बढ़ावा तभी तक मिलता है, जब तक मद्य निषेध के कानूनों का पालन सच्चे दिल से कठोरता के साथ नहीं किया जाता। तस्करी शासकों

की मिलीभगत के बिना देर तक चलती नहीं। फिर तस्करी केवल शराब की ही तो नहीं होती। जो उपाय अन्य चीज़ों की तस्करी को रोकने के लिए बरते जा सकते हैं वे ही शराब की तस्करी को रोकने के लिए बरते जा सकते हैं।

(४) यही हाल घूसखोरी का है। वस्तुतः मद्य-निषेध के असफल होने का वड़ा कारण घूसखोरी ही है। शराब के धन्धे से धन कमाने वाले हर सीढ़ी पर घूस देते हैं। वे छापे मारने वाली पुलिस को भी रिश्वत देते हैं और कानून बनाने वाले लोगों को भी थैलियां भेंट करते हैं। घूसखोरी हमारे देश का बहुत बड़ा अभिशाप है। परन्तु रिश्वत केवल शराब के लिए ही दी जाती हो, यह बात नहीं है। यह तो हर क्षेत्र में, हर काम के लिए दी जाने लगी है। इस बुराई को हटाना पड़ेगा। केवल मद्य-निषेध के मामले में घूसखोरी की दुहाई देना बेकार है। यदि सब लोग छक कर शराब पीने लगें, तो क्या घूसखोरी बन्द हो जायगी? सच तो यह है कि रिश्वत लेने की आवश्यकता ही शराब पीने के लिए होती है। शराब की बोतल सबसे वढ़िया रिश्वत मानी जाती है। इसलिए घूसखोरी को हटाने के लिए भी मद्यनिषेध आवश्यक है।

(५) राज्य की आय का जहां तक प्रश्न है, वह अच्छे और हानि रहित साधनों से ही होनी चाहिए। जो राज्य वेश्याओं पर टैक्स लगाकर, जूआ घरों के ठेके देकर, घुड़दौड़ और लाटरियां चलाकर, और सबसे बढ़कर शराब के निर्माण और बिक्री पर टैक्स लगाकर धन प्राप्त करता है, वह और चाहे जो कुछ कर ले, जनता का भला नहीं कर सकता। जो राज्य शराब से आय प्राप्त करना चाहता है वह यह कोशिश करेगा कि शराब अधिक से अधिक बने और बिके, जिससे राज्य को अधिक आय हो। जब शराब अधिक बिकेगी, तब अधिक पी जायेगी और मानसिक स्वास्थ्य खराब होगा, अधिक परिवार उजड़ेंगे; अधिक दुर्घटनाएं होंगी और अपराध बढ़ेंगे। इतना

भारी नुकसान पहुंचाने के बाद राज्य जनता का क्या भला कर सकेगा ? राज्य की आय के ऐसे बुरे स्रोत का समाप्त हो जाना ही भला है।

(६) निषिद्ध वस्तु के प्रति आकर्षण की बात कुछ हद तक सही है; परन्तु पूरी तरह सही नहीं है। यह तो ठीक है कि जिस चीज़ के प्रयोग को मना किया जाए, उसे करके देखने का कौतूहल आदमी के मन में रहता है। वह उसे करके देखता है। यदि वह चीज़ सचमुच बुरी हो, तो वह उसके प्रयोग को छोड़ सकता है। कोई व्यक्ति किसी बुरी चीज़ से केवल इसलिए नहीं चिपटा रहेगा कि उसका प्रयोग कानून द्वारा मना कर दिया गया है।

इस प्रकार तर्क की दृष्टि से देखा जाये, तो कानून द्वारा मद्य-निषेध होना ही उचित है। कानून द्वारा मद्य-निषेध करके पुराने पियक्कड़ को शराब पीने से भले ही न रोका जा सके, किन्तु उन युवकों को, जिन्होंने शराब पीना शुरू नहीं किया, शराब के चंगुल में फंसने से अवश्य बचाया जा सकता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में क्या हुआ ?

मद्य-निषेध कानून— सन् १९१९ में संयुक्त राज्य अमेरिका में मद्य-निषेध का कानून बना। यह कानून वहां सन् १९३३ तक रहा। उसके बाद मदिरा व्यवसायियों की जोड़-तोड़ और प्रचार के फलस्वरूप इस कानून को रद कर दिया गया। यह कानून कैसे बना और फिर कैसे रद्द कर दिया गया, यह जान लेना हमारे लिए लाभदायक है, क्योंकि हमारे सामने भी वे ही समस्याएं हैं, जो अमेरिका वालों के सामने थीं।

अमेरिका में मद्य-निषेध का कानून बनाने के लिए पहले वहां के संविधान में संशोधन करना आवश्यक था। मद्य-निषेध करने से व्यक्ति की स्वतंत्रता और वाणिज्य-व्यापार की स्वतंत्रता छिनती थी। यह स्वतंत्रता संविधान द्वारा लोगों को दी गई थी। संविधान में संशोधन किए बिना इसे छीना नहीं जा सकता था।

संविधान का संशोधन—संविधान में संशोधन करना टेढ़ा काम होता है। इसके लिए कांग्रेस (अमेरिका की संसद) के दोनों सदनों में संशोधन का प्रस्ताव दो तिहाई सदस्यों के बहुमत से पास होना चाहिए; अर्थात् प्रस्ताव के पक्ष में दो तिहाई (६६ प्रतिशत) वोट आने चाहिए। साधारण कानून ५१ प्रतिशत वोट से ही बन जाते हैं। किसी प्रस्ताव के पक्ष में दो तिहाई वोट जुटाना कठिन काम है।

इसके अलावा, संविधान का कोई भी संशोधन तब तक पास नहीं माना जाता, तब तक कि संयुक्त राज्य अमेरिका के ४८ राज्यों (अब इनकी संख्या ५१ है) में से तीन चौथाई अर्थात् ३६ राज्यों की विधान सभाएं उसकी पुष्टि न कर दें। यह एक अलग कठिन काम है। परन्तु ये कठिन काम भी पूरे हुए और अगस्त सन् १९१७ में अमेरिका की कांग्रेस ने संविधान का अठारहवां संशोधन

पास कर दिया। उसके बाद ३६ राज्यों की विधान सभाओं द्वारा पुष्ट होने के बाद १६ जनवरी १९१९ को संविधान का यह अठारहवां संशोधन लागू हो गया। इसके अनुसार केन्द्रीय सरकार के आदेश से संयुक्त राज्य अमेरिका के सब राज्यों में शराब बनाना और वेचना गैर कानूनी घोषित कर दिया गया।

आन्दोलन—शराब के विरुद्ध आन्दोलन अमेरिका में सन् १८२६में शुरूहुआ। अमेरिकन टेम्परेंस सोसाइटी वनी। सन्१८६३ में मद्य-निषेध का कानून बनवाने के लिए आन्दोलन शुरू हुआ। पहले, लोगों का विचार यह था कि केवल तेज़ शराबों की बिक्री बन्द होनी चाहिए। टेम्परेंस सोसाइटी की शाखाएं सारे देश में फैलने लगीं।

इस आन्दोलन में महिलाओं ने भी आगे बढ़कर भाग लिया। सन् १८७४ में 'वीमेन्स क्रिश्चियन टेम्परेंस यूनियन' बनी। सन् १८९३ में पुरुषों ने एक संस्था 'एंटी-सैलून लीग' बनाई। मद्य-निषेध कानून को बनवाने में इस एंटी-सैलून लीग का सबसे अधिक हाथ रहा।

एंटी-सैलून लीग—एंटी-सैलून लीग का प्रधान कार्य था मद्य-निषेध के पक्ष में जन मत तैयार करना। उनकी कोशिश यह रहती थी कि जब भी निर्वाचन (चुनाव) हों, तब केवल उन्हीं लोगों को प्रतिनिधि चुना जाए, जो शराब बिल्कुल न पीते हों, और मद्य-निषेध का कानून बनवाने का वचन दें।

उसके बाद इस लीग ने एक-एक राज्य में बारी-बारी से मद्य-निषेध कानून बनवाया। ऐसे अफसरों की नियुक्ति करवाई, जो उस कानून का ईमानदारी से पालन करवाएं।

सन् १९१३ तक अमेरिका के नौ राज्यों में मद्य निषेध कानून बन चुका था। इन राज्यों ने अपनी सीमाओं के अन्दर शराब का बनाना और वेचना मना कर दिया था। सन् १९१३ में एक राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया, जिसका उद्देश्य संविधान में संशोधन करवाकर सारे संयुक्त राज्य अमेरिका में मद्य-निषेध करवाना था।

ज़ोरदार प्रचार—इसके बाद आन्दोलन तेज़ किया गया। सभी स्कूलों और कालेजों में इस विषय पर भाषण प्रतियोगिताएं करवाई गईं। सार्वजनिक सभाओं में भी इस विषय पर भाषण दिए गए। लगभग ५० हज़ार वक्ताओं ने मद्य-निषेध के लिए प्रचार किया। उस सस्ते ज़माने में इस आन्दोलन पर प्रतिवर्ष १ करोड़ २५ लाख डालर खर्च होते थे। यह सारा धन चन्दे से प्राप्त होता था।

सन् १९१३ में अमेरिका की कांग्रेस (संसद) ने वैब-कैन्योन अधिनियम पास किया। इसके अनुसार कोई भी शराब को वनाने वाला या अन्य कोई व्यक्ति अमेरिका के किसी ऐसे राज्य में शराब नहीं भेज सकता था, जिसमें मद्य-निषेध विद्यमान हो। अमेरिका के राष्ट्रपति टैफ्ट ने अपने विशेष अधिकार से इस विधेयक को कांग्रेस द्वारा पास किए जाने के बाद वीटो कर दिया; अर्थात् कह दिया कि यह कानून नहीं बनेगा। इस पर कांग्रेस के दोनों सदनों ने दो तिहाई बहुमत से इसे फिर पास किया। इसके बाद राष्ट्रपति उसे वीटो नहीं कर सकता था।

इससे शराब व्यवसायी चिन्तित हो उठे। उन्होंने रिश्वत देकर संसद सदस्यों और सरकारी मन्त्रियों और अफसरों को अपने पक्ष में खींचना शुरू किया। इन व्यवसायी लोगों के पास अपार धन था।

जनमत का प्रभाव—१० दिसम्बर १९१३ को अमेरिका की कांग्रेस में संविधान के अठारहवें संशोधन का प्रस्ताव पेश हुआ। सन् १९१४ में ५ और राज्यों ने अपनी सीमा में मद्य-निषेध कर दिया। सन् १९१५ में ५ अन्य और सन् १९१६ में ४ अन्य राज्यों ने मद्य-निषेध के कानून बना दिए। सन् १९१७ तक अमेरिका के ४८ में से २६ राज्यों में केन्द्रीय सरकार के कानून के बिना ही मद्य-निषेध हो चुका था। एंटी-सैलून लीग के आन्दोलन के फलस्वरूप जनता शराब के विरुद्ध हो गई थी। यह मद्य-निषेध जनता की इच्छा से, जनता के चुने हुए प्रति-

निधियों द्वारा किया गया था।

अगस्त १९१७ में १८वें संविधान संशोधन पर मतदान हुआ। ऊपरले सदन सीनेट में उसके पक्ष में ६५ और विपक्ष में २० वोट पड़े। निचले सदन में पक्ष में २८२ और विपक्ष में १२८ वोट पड़े। दो तिहाई से अधिक वोटों से संशोधन पास हो गया।

इसके बाद इसे कम से कम ३६ राज्यों की विधान सभाओं द्वारा पुष्ट कराना आवश्यक था। १६ जनवरी १९१९ को नेब्रास्का ने इसकी पुष्टि कर दी। वह ३६वां राज्य था। ३५ राज्य इससे पहले ही इसे पुष्ट कर चुके थे। इन राज्यों की विधान सभाओं में ८० प्रतिशत सदस्यों ने मद्य-निषेध के पक्ष में वोट दिए थे।

राष्ट्रपति द्वारा वीटो—सन् १९१९ में अमेरिका की कांग्रेस ने एक 'वोल्स्टैड अधिनियम' पास किया, जिसके अनुसार अमेरिका की संघ सरकार को मद्य-निषेध को लागू करने के लिए आवश्यक अफसर नियुक्त करने का अधिकार दिया गया था। राष्ट्रपति विल्सन ने इस विधेयक को भी वीटो कर दिया—कह दिया कि मैं इस कानून को बनने नहीं दूंगा। इस पर कांग्रेस (संसद) ने अगले ही दिन उस विधेयक पर फिर विचार शुरू कर दिया और ३६ घंटों के अन्दर दोनों सदनों ने उसे सर्वसम्मति से फिर पास कर दिया। अब राष्ट्रपति उसे वीटो नहीं कर सकता था।

संविधान के अठारहवें संशोधन को पास करवाने के बाद मद्य-निषेध के समर्थकों ने समझा कि उनका काम पूरा हो गया। अब कानून द्वारा शराब बनाना और बेचना मना कर दिया गया है। अतः बाकी काम सरकार स्वयं कर लेगी। वे बेफिक्र हो गए। यह उनकी भूल थी।

मद्य-निषेध कानून लागू होते ही शराब बनाने और बेचने वालों ने अपना संगठन किया। उन्होंने एक संस्था बनाई, जिसका

नाम था 'एसोसिएशन अगेन्स्ट प्रोहिबिशन एमेंडमेंट' (मद्य-निषेध संशोधन विरोधी संघ)। इसके केवल ५३ सदस्य थे। परन्तु ये ५३ बड़े-बड़े धनपति थे। एंटी-सैलून लीग को जितना कुल चन्दा मिलता था, उतना तो इनमें से प्रत्येक सदस्य आसानी से खर्च कर सकता था।

इस संघ ने बड़े पैमाने पर मद्य-निषेध के विरुद्ध प्रचार किया। इन्होंने अखबार और सिनेमाघर खरीद लिए और उनके द्वारा जनमत को बदलना शुरू किया। मद्य-निषेध के समर्थक समझते रहे कि जनता इस प्रकार के बहकावे में नहीं आएगी। परन्तु प्रचार का असर तो होता ही है।

सन् १९२८ तक भी यह स्थिति थी कि हर्बर्ट हूवर के मुकाबले अल्फ्रेड ई० स्मिथ राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार बनकर खड़ा हुआ। स्मिथ शराब का समर्थक था। वह हार गया।

मद्य-निषेध समाप्त—परन्तु इसके चार साल बाद ही अठाहरवां संशोधन रद्द हो गया। इसका कारण यह था कि शराब बनाने और बेचने वालों ने तो अपने पक्ष को संगठित कर लिया था, किन्तु शराब के विरोधी यही समझते रहे कि मद्य-निषेध हटाया नहीं जा सकता। इसलिए उन्होंने अपना आन्दोलन तेज़ नहीं किया। ७,२९,४३,६२४ मतदाताओं में से केवल १,५०,०४,३५२ वोट देने गए। शराब व्यवसाय द्वारा संगठित मतदाता तो वोट डालने पहुंचे, या उन्हें पहुंचा दिया गया, पर शराब के विरोधी मतदाता इस गलतफहमी में कि उनकी हार हो ही नहीं सकती, वोट डालने ही नहीं गए। इस प्रकार अमेरिका में बारह साल बाद संविधान का अठारहवां संशोधन रद्द कर दिया गया और इसके साथ ही मद्य-निषेध भी समाप्त हो गया।

अमेरिका का यह अनुभव हम भारतवासियों के लिए भी ध्यान देने योग्य है।

मद्यपान छोड़ा कैसे जाए

कठिन पर असंभव नहीं—ऐसा अड़ियल व्यक्ति मुश्किल से ही कोई होगा, जो शराब पीने की बुराइयों को कुछ ही महीने में भली भांति अनुभव न कर ले। पियक्कड़ को अपनी दशा से कष्ट होता है। वह शराब छोड़ना चाहता है, परन्तु छोड़ नहीं पाता। इससे उसे अपने ऊपर ग्लानि होती है। यदि उसे उचित सहारा और मार्गदर्शन मिल जाए, तो वह मद्यपान छोड़ भी सकता है।

यह हम पहले देख चुके हैं कि मद्यपान बन्द करने पर रोगों की एक नई श्रृंखला शुरू हो जाती है, जिसमें कम्पन, मतिभ्रम और मिरगीं और उन्माद सबसे प्रमुख हैं। ये रोग शराबी को नरक की-सी यातना देते हैं। मज़े की बात यह है कि शराब पीने से कुछ देर के लिए इन रोगों के कष्टदायक लक्षण दब जाते हैं। परन्तु कोई भी व्यक्ति बराबर तो शराब पीता नहीं रह सकता। पहला कारण तो यह है कि शराब पैसे से मिलती है और इतना पैसा वहुत कम लोगों के पास होता है कि वे देर तक शराब पीते रह सकें। दूसरा कारण यह है कि शराब पीते रहने से अलग प्रकार के रोग और कष्ट होते हैं। सबसे बड़ा कष्ट यह है कि शराबी उचित मात्रा में पोषक भोजन नहीं कर पाता। इस कारण उसका शरीर कमज़ोर होता चला जाता है। इन कारणों से उसे कभी न कभी शराब पीना बन्द तो करना ही पड़ता है। जब भी वह शराब पीना बन्द करता है, तभी उसे कम्पन, मति-भ्रम, मिरगी, उन्माद, अनिद्रा, बेचैनी आदि कष्ट सताते हैं। मद्यपान की आदत को त्यागना वहुत कठिन काम है। यदि डाक्टरों और मनोचिकित्सकों की सहायता से भी इसमें सफलता मिल जाए, तो बड़ी वात है।

दृढ़ संकल्प—शराब पीना बन्द करने के लिए सबसे मुख्य आवश्यक वस्तु है दृढ़ संकल्प। पियक्कड़ को यह पक्का निश्चय करना होगा कि मद्यपान ने उसे जिस दुर्दशा में ला पटका है, उसमें उसे नहीं रहना है। उसे मद्यपान को अवश्य और सदा के लिए छोड़ देना है। डाक्टर तथा अन्य सलाहकार उसके संकल्प को दृढ़ बनाने में सहायता दे सकते हैं। शराब को त्यागने की इच्छा पियक्कड़ के अपने मन में से जागनी चाहिए। जब तक इस विषय में उसकी अपनी इच्छा जाग्रत नहीं होती, तब तक जबरदस्ती उसकी शराब छुड़ाने से कोई लाभ नहीं होगा। पहला मौका मिलते ही वह फिर शराब पीना शुरू कर देगा।

कुसंगति का त्याग—शराब पीने के लिए एक बड़ा प्रेरक कारण है कुसंगति। जो मनुष्य शराब पीना बन्द करना चाहता है, उसे शराबी मित्रों की संगति को दृढ़तापूर्वक छोड़ देना होगा। उसे अपनी भीतरी इच्छा के विरुद्ध लड़ने में ही बहुत कठिनाई होगी। शराबी मित्रों का साथ होने पर उसे शराब पीने का प्रलोभन होगा। वे शराबी मित्र यह तो नहीं चाहेंगे कि उसके अच्छे उदाहरण की नकल करके वे स्वयं भी शराब पीना छोड़ दें, बल्कि यह चाहेंगे कि किसी प्रकार उसे भी अपने गुट से बाहर न निकलने दें। इसलिए इस कुसंगति को छोड़ना बहुत ज़रूरी है।

नई रुचियां और नये साथी—पियक्कड़ आदमी की रुचियां बहुत सीमित हो जाती हैं। जो आदमी मद्यपान की आदत को छोड़ना चाहता है, उसे अपनी नई रुचियां बनानी पड़ेंगी। नियम से घूमना-फिरना, व्यायाम करना, खेल-कूद, मंदिरों, सत्संगों तथा अन्य सभा-सम्मेलनों में भाग लेना आदि में वह अपना ध्यान लगा सकता है। उसे नये साथी ढूंढ़ने होंगे, जो जीवन सुधारने में उसकी सहायता करें। सार्वजनिक जीवन में भाग लेने से उसे इस प्रकार के साथी आसानी से मिल सकते हैं।

शुरू का एक महीना अस्पताल में—शराब छोड़ने का

संकल्प पक्का कर लेने पर आदमी को कम से कम एक महीना अस्पताल में रहना चाहिए। कारण यह है कि शराब पीना बन्द करने पर अनेक कष्टदायक उत्पात खड़े होते हैं। घर पर रहते हुए व्यक्ति उन कष्टों से घबरा जाता है और उनसे बचने के लिए फिर शराब पीना शुरू कर देता है। शराब पीने से कुछ देर के लिए वे कष्टदायक लक्षण दब जाते हैं। जब भी शराब पीना बन्द किया जाएगा, तभी वे कष्ट फिर उसी तरह होंगे। इसलिए मन पक्का करके एक बार उनसे निपट ही लेना भला है। यदि मनुष्य अपने निश्चय पर डटा रहे, तो अधिकांश कष्टदायक लक्षण चौदह दिन में समाप्त हो जाते हैं। फिर भी उसे सावधानी के तौर पर कम से कम एक महीना अस्पताल में रहना चाहिए, क्योंकि किसी-किसी व्यक्ति में वे कम्पन, मतिभ्रम, मिरगी, उन्माद आदि लक्षण दुबारा उत्पन्न हो सकते हैं। अस्पताल में तो उनके कष्ट को दवाइयों द्वारा कुछ कम किया जा सकता है, परन्तु घर पर तो आदमी उनसे बचने का एक ही इलाज करता है—फिर से शराब पीने लगना। इससे वह सारा कष्ट अकारथ हो जाता है, जो उसने शराब त्यागने के प्रयत्न में सहा। अब जब वह दुबारा शराब छोड़ने का यत्न करेगा, तब उसे वह सारा कष्ट फिर उसी प्रकार सहना पड़ेगा।

कुछ दवाइयां—कुछ दवाइयां भी ऐसी हैं, जो मद्यपान की आदत को छोड़ने में सहायक होती हैं। ऐलोपैथी में ऐसी एक दवाई है—डाइसल्फिरैम (Disulfiram)। इसीको ऐंटाब्यूज़ (Antabuse) भी कहते हैं। पियक्कड़ से कहा जाता है कि वह एक बार इस दवाई की एक गोली खाकर शराब पिए। इस दवाई के कारण शराब का बड़ा भयानक असर होता है—जी मिचलाना, उल्टी और बेचैनी बहुत अधिक होती है। इससे रोगी के मन में यह बात बैठ जाती है कि इस दवाई के बाद शराब पीने से आनन्द नहीं मिलेगा, बल्कि भारी कष्ट होगा।

इसलिए वह शराब पीने से बच सकता है।

परन्तु डाइसल्फिरैम के प्रयोग के बाद शराब पीनी नहीं चाहिए। यह बात रोगी को भली भांति समझ लेनी चाहिए, क्योंकि डाइसल्फिरैम के साथ-साथ शराब पीते रहने से शरीर को भारी नुकसान पहुंच सकता है और मृत्यु भी हो सकती है।

इसी प्रकार की एक और दवाई है ऐम्फिटैमाइन सल्फेट, (Amphitamine Sulphate)। कहा जाता है कि इसके प्रयोग से पुराने पियक्कड़ों में शराब पीने की हुड़क कम हो जाती है।

इसी प्रकार की दो अन्य दवाइयां हैं टेम्पोसिल (Temposil) और साइट्रेटिड कैल्शियम कार्बिमाइड (Citrated Calcium Carbimide)। इनका असर भी डाइसल्फिरैम जैसा ही होता है।

परन्तु इस प्रकार की दवाइयों के प्रयोग से लाभ की आशा तभी है, जब कि पियक्कड़ स्वयं सच्चे दिल से शराब छोड़ना चाहता हो। नहीं तो जब भी वह शराब पीना चाहेगा, तभी इन दवाइयों को खाना बन्द करके शराब पीने लगेगा।

सम्बन्धियों और मित्रों का सहयोग—पियक्कड़ के घर वाले और मित्र लोग अपने सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार द्वारा शराब त्यागने में पियक्कड़ की वास्तविक सहायता कर सकते हैं। उन्हें पियक्कड़ पर दबाव तो कभी नहीं डालना चाहिए, क्योंकि उससे वह ज़िद पकड़ लेता है और अपमानित अनुभव करता है; परन्तु जब कभी वह स्वयं ही शराब त्यागना चाहे, तब उसे प्रोत्साहन अवश्य देना चाहिए।

अल्कोहलिक ऐनोनीमस—एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है, अल्कोहलिक ऐनोनीमस (Alcoholic Anonymous)। इसका काम है पियक्कड़ों को शराब त्यागने में सहायता देना। पुराने पियक्कड़ जो शराब पीना छोड़ चुके हैं, इसके सदस्य होते हैं। वे उन पियक्कड़ों को सलाह देते हैं, जो शराब पीना छोड़ना चाहते हैं। भारत में भी टेम्परेंस सोसाइटी इसी प्रकार का काम

कर रही है।

शराब का एकदम और बिल्कुल त्याग—अनेक पियक्कड़ों के अनुभव से चिकित्सकों की यह राय बनी है कि शराब छोड़ने का सही तरीका यह है कि शराब पीना एकदम और बिल्कुल बन्द कर दिया जाए। धीरे-धीरे शराब की मात्रा घटाते जाने का तरीका सफल सिद्ध नहीं हुआ। शराब पीना बिल्कुल बन्द कर देने से कष्ट से जल्दी छुटकारा मिल जाता है और सफलता की आशा अधिक रहती है।

२०

मद्यपान-निषेध आन्दोलन कैसे चलाया जाए ?

यदि हमें यह बात भली भांति समझ आ गई है कि मदिरा व्यक्ति के लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए और देश के लिए खतरनाक विष है तो हमारा यह नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है कि हम इसके प्रयोग को रोकने के लिए भरपूर कोशिश करें। यह एक पवित्र उद्देश्य है। इसके लिए यदि हमें अपना समय लगाना पड़े, कुछ कष्ट सहना पड़े, या थोड़ा-बहुत धन भी लगाना पड़े, तो उससे हमें हिचकना नहीं चाहिए। इससे हम एक स्वस्थ और सुखी समाज की रचना में सहायता दे रहे होंगे, जिसका लाभ अन्य लोगों के साथ-साथ हमें भी मिलेगा। यदि हमारे पड़ौस में शराबी और अपराधी न रहें, तो उससे हमें भी आराम मिलेगा।

इसके लिए यह आवश्यक है कि सारे देश में बड़े पैमाने पर व्यापक मद्य-निषेध आन्दोलन शुरू किया जाए। सन् १९२० के बाद स्वाधीनता-संग्राम के दिनों में जो देशभक्ति, सत्याग्रह और बलिदान भावना देखने में आई थी, उसे फिर जगाया जाए। उस समय लोग जिस प्रकार शराब बेचने वालों की गालियां और पुलिस के डंडे सहकर भी शराब की दूकानों पर धरना देते थे, उसी प्रकार धरना देने के लिए लोगों को फिर तैयार किया जाए।

केवल दूकानों पर धरना देना काफी नहीं है। हमें देश में जनमत को मद्यपान के विरुद्ध जगाना पड़ेगा। एक-एक आदमी को समझाना पड़ेगा कि शराब बुरी चीज़ है और उसे मद्य-निषेध के लिए प्रयत्न करना है। एक-एक मतदाता को समझा-बुझाकर हमें विधान सभाओं और केन्द्र की संसद में ऐसे प्रति-

निधि भेजने पड़ेंगे, जो स्वयं शराब न पीते हों और शराब को बन्द करवाने के लिए कानून बनवा सकें। यह काम बहुत बड़ा है। इसके लिए भारी प्रयत्न की आवश्यकता है। धन की भी आवश्यकता होगी, किन्तु वह जनता से प्राप्त हो जाएगा। सबसे पहले आवश्यकता है ऐसे प्रचारकों की, जो सच्चे हृदय से इस आन्दोलन में जुट जाने को तैयार हों।

संयुक्त राज्य अमेरिका में एक बार मद्य-निषेध का प्रबल आन्दोलन हो चुका है। उस आन्दोलन के फलस्वरूप सन् १९१९ में संयुक्त राज्य अमेरिका में मद्य-निषेध का कानून बन भी गया था। यह बहुत बड़ी सफलता थी।

परन्तु बारह साल बाद वह मद्य-निषेध का कानून रद्द कर दिया गया। उस अनुभव से लाभ उठाकर हम अपने देश के लिए मद्य-निषेध आन्दोलन की रूपरेखा तैयार कर सकते हैं।

कार्यकर्ता—मद्य-निषेध के पक्ष में जनमत तैयार करने का काम मुख्य रूप से महिलाओं को और युवक विद्यार्थियों को अपने हाथ में लेना चाहिए। हमारे देश में साधु-संन्यासियों की संख्या भी लाखों में है। यदि इन लोगों का सहयोग प्राप्त हो जाए, तो मद्य के विरुद्ध प्रचार आसानी से सफल हो सकता है। सिखों के गुरुद्वारों में, आर्यसमाज के सत्संगों में और मुसलमानों की जुम्मे की नमाज़ के बाद और ऐसे ही अन्य धार्मिक सम्मेलनों में शराब के विरुद्ध प्रचार किया जाना चाहिए।

जनता का प्रयत्न—हमें यह मान लेना चाहिए कि हमें इस विषय में सरकार पर निर्भर नहीं रहना है। संविधान में स्पष्ट आदेश होते हुए भी पिछले वर्षों में मद्य का प्रचार खूब बढ़ा है। कई राज्यों ने, जिनमें मद्य-निषेध था, मद्य-निषेध को समाप्त कर दिया है। इसलिए अपने भले के लिए जनता को स्वयं ही प्रयत्न करना होगा। एक ऐसी सरकार बनानी होगी, जो मद्य-निषेध को लागू करे।

मद्य-विनाशक संघ की स्थापना—इसके लिए एक द्यम-

विनाशक संघ की स्थापना करनी होगी, जो अमेरिका की एंटी-सैलून लीग के नमूने पर हो। इसका उद्देश्य मद्य-निषेध नहीं, अपितु मद्यपान का जड़मूल से विनाश करना होगा। इस संघ की शाखाएं हर नगर और हर गांव में खोलनी होंगी। महिलाओं के लिए अलग शाखाएं होंगी।

इस संघ का राजनीति से कोई सम्बन्ध न हो। कांग्रेस, जनसंघ, कम्यूनिस्ट, समाजवादी, भारतीय लोकदल, सब विचारों के नर-नारी इस संघ में सम्मिलित हो सकें, किन्तु अपने राजनीतिक विचारों को वे इस संघ में न लाएं।

मद्यपान को समाप्त करने के अलावा इस संघ का अन्य कोई उद्देश्य या कार्यक्रम नहीं होगा।

कार्यक्रम—इस संघ की प्रत्येक शाखा अपने क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य करे :

(१) शराब की बुराइयों पर प्रकाश डालने के लिए समय-समय पर—कम से कम सप्ताह में एक बार—सभा की जाएगी। लोगों को घर-घर जाकर इस सभा में आने के लिए निमंत्रित किया जाए।

(२) शराब की बुराइयों पर भाषण प्रतियोगिताएं की जाएं। उनमें सर्वोत्तम तीन वक्ताओं को इनाम दिया जाए।

(३) अपने पड़ौस से शराब की दूकानों को हटाने के लिए आन्दोलन किया जाए, जो यथासम्भव शान्तिपूर्ण रहे। शराब पीकर उपद्रव करने वालों के साथ सदा शान्तिपूर्ण व्यवहार कर पाना कठिन भी हो सकता है।

(४) मद्य-विनाशक संघ निर्वाचनों (चुनावों) पर विशेष ध्यान दे। यह मतदाताओं से आग्रह करे कि वे केवल उन्हीं उम्मीदवारों को वोट दें, जो (क) सभी शराब न पीते हों और (ख) यह लिखित वचन दें कि वे देश से मद्यपान को हटाने के लिए तन, मन, धन से यत्न करेंगे।

(५) सार्वजनिक समारोहों में, व्याह-शादियों में मद्यपान

को रोका जाए। यदि शान्ति और प्रेम से मनाने से सफलता न मिले, तो शान्तिपूर्ण धरना दिया जा सकता है; या चौवीस घंटे का उपवास (घोषणा करके और ईमानदारी के साथ) किया जा सकता है।

(६) जिन लोगों के हाथ में नौकरियां देना है, उनसे अनुरोध किया जाए कि वे शराब पीने वाले लोगों को नौकरी न दें और नौकरी देते समय कर्मचारी से यह वचन लें कि वह शराब नहीं पिएगा। इसके बाद यदि वह कभी शराब पिए, तो उसे नौकरी से निकाल दें।

(७) कानून द्वारा न केवल शराब बनाना और बेचना बन्द किया जाए, बल्कि शराब पीना और अपने पास रखना भी मना किया जाए। इसके बिना निषेध सफल नहीं हो सकता।

(८) शराब पीने वालों को रोगी नहीं, बल्कि अपराधी माना जाए। वे सहानुभूति के नहीं, बल्कि दंड के पात्र हैं। वे अपने प्रति, अपने परिवार और समाज के प्रति भीषण अपराध करते हैं।

प्रचार द्वारा इस प्रकार जनमत तैयार करके इस मद्य-विनाश आन्दोलन में सफलता की आशा की जा सकती है।

● ● ●

मुद्रक : मॉडर्न प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-1145

जीवनोपयोगी पुस्तकें

निम्नलिखित पुस्तकें सुप्रसिद्ध लेखकों की [illegible] हैं। जीवन के लिए अपने अनुभव ही पर्याप्त नहीं हैं, [illegible] के महत्त्व [illegible] अनुभव भी हमारे लिए उपयोगी और आवश्यक हैं। ये [illegible] ज़िन्दगी का मार्ग बदल देते हैं, अंधेरे से [illegible] और असत् की ओर ले जाते हैं। अनुभवों की प्राप्ति के लिए पुस्तकों से बढ़कर अन्य कोई साधन अब तक नहीं है। [illegible] पुस्तकें इसी [illegible] की प्रेरणाप्रद और उपयोगी हैं।

परिवार-चिकित्सा
(स्वास्थ्य-सम्बन्धी) — डा० युद्धवीर सिंह

जहां सुमति तहं संपति नाना
(परिवार-नियोजन पर कुछ विचार) — व्रज भूषण

मनोरथ
(परिवार नियोजन पर एक और रोचक पुस्तक) — व्रज भूषण

नई राह पर
(ग्राम सुधार तथा परिवार-नियोजन पर रोचक कथा) — शांति भट्टाचार्य

हमारा शरीर
(स्वास्थ्य-सम्बन्धी पुस्तक) — आचार्य चतुरसेन

नीरोग जीवन
(स्वास्थ्य-संबंधी) — आचार्य चतुरसेन

स्वास्थ्य-रक्षा
(स्वास्थ्य-सम्बन्धी) — आचार्य चतुरसेन

आदर्श भोजन
(स्वास्थ्य-सम्बन्धी) — आचार्य चतुरसेन